ज्ञानाञ्जलि

2015-16

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ. प्र.)

नैक द्वारा 'बी'-ग्रेड प्रमाणित

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

महाविद्यालय परिवार

...म पंक्ति में दांए से बांए - डॉ० शिवानी, डॉ० आशा रानी, डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० करुणा सिं... (प्राचार्या) डॉ० जे० पी० सिंह, डॉ० अनीता रानी राठौर, डॉ० निधि रायजादा, डॉ० अनीता सिंह, डॉ० रतन सिंह

...ीय पंक्ति में दांए से बांए - डॉ० सीमा देवी, श्रीमती पवन, डॉ० वन्दना शर्मा, डॉ० ऋचा, डॉ० सोनम शर्मा, श्रीमती भावना यादव, डॉ० ...म शर्मा, डॉ० मिन्तु बंसल, डॉ० विनीता सिंह, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० सुशीला, डॉ० रमाकान्ति।

...य पंक्ति में दांए से बांए - डॉ० पंकज चौधरी, डॉ० सत्यन्त कुमार, डॉ० हरिन्द्र कुमार, डॉ० कनक कुमार, डॉ० अरविन्द, डॉ० बलराम सिंह, मो० वकार रजा, श्री माणिक रस्तोगी, डॉ० अरविन्द कुमार यादव, डॉ० धीरज कुमार, डॉ० उदय प्रकाश पासवान, डॉ० जीत सिंह।

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

पंक्ति में दांए से बांए - श्री कुसुमानन्द, श्री महेश भाटी (कार्यालय अधीक्षक), डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या), श्री मुकेश कुमार, श्री चन्द्रप्रकाश

ज्ञानाञ्जलि

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर- गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)

नैक द्वारा 'बी'–ग्रेड प्रमाणित

अंक - नवम् | **वर्ष - 2016**

प्रधान सम्पादक
डॉ० दीप्ति वाजपेयी

संरक्षक
डॉ० करुणा सिंह
प्राचार्या

:- सम्पादक मण्डल :-

डॉ० अर्चना सिंह
डॉ० निधि रायज़ादा
श्रीमती नेहा त्रिपाठी
डॉ० अरविन्द यादव

श्रीमती दीक्षा
डॉ० मिन्तु बंसल
डॉ० नीलम शर्मा
श्री रतन सिंह

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

कुल गीत

शस्य श्यामला बादलपुर की हरी भरी उर्वर धरती पर
उज्ज्वल मंगल करने के हित, विद्या दीप जलाया है।

[illegible] तट नर्तन करती
[illegible] तन मन को पुलकित करती
[illegible] नैतिकता हेतु ज्ञान का दीप जलाया है।

शस्य श्यामला ....

आजादी के प्रथम युद्ध की साक्षी है पावन धरती
बुद्ध तथागत की करुणा भी ममता का संचय करती
समरस की सुन्दर संध्या में रंजन दीप जलाया है।

शस्य श्यामला ....

खेत–खेत क्यारी–क्यारी में, नित्य नया जीवन भरती
श्रम सीकर सिंचित यह माटी चन्दन सा जग महकाती
बाल पुष्प का सौरभ माटी चन्दन अगरु जलाया है

शस्य श्यामला ....

भव्य भारती के पदतल में करें अर्चना करें नमन
रमा विजय श्री मिले सभी को, जितेन्द्रिय सब बने युवा जन
ज्ञान सूर्य से मिटे तिमिर सब, ज्योतिर्पुंज जलाया है।

शस्य श्यामला ....

इसका है इतिहास निराला गाथा गायन अलबेला
मिहिर भोज की कीर्ति कथा से इसका मस्तक गर्वीला
आगत भी है परम्परागत विद्या दुर्ग सजाया है।

शस्य श्यामला ....

ऊर्जा बौद्धिकता मानवता शुचिता पावनता और सृजन
विद्या मन्दिर बादलपुर का आओ कर लें अभिनन्दन
विद्या हर घर–घर तक पहुँचे ज्ञान का शंख बजाया है

शस्य श्यामला ....

अनुक्रमणिका

1. कुलगीत	कु.मा.रा.म. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर	
2. संदेश	महामहिम राष्ट्रपति, राष्ट्रपति सचिवालय, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली	
3. संदेश	श्री राम नाईक, राज्यपाल, लखनऊ, उ०प्र०	
4. संदेश	श्री शारदा प्रताप शुक्ला, राज्यमंत्री उच्च शिक्षा, लखनऊ	
5. संदेश	डॉ० राजेन्द्र पाल सिंह, निदेशक, उच्च शिक्षा, इलाहाबाद, उ०प्र०	
6. संदेश	प्रो० नरेन्द्र कुमार तनेजा, कुलपति, मेरठ मंडल, मेरठ	
7. संदेश	प्रो० जे० एस० नेगी, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, मेरठ	
8. प्राचार्या की कलम से	डॉ० करुणा सिंह, प्राचार्या	
9. सम्पादकीय	डॉ० दीप्ति वाजपेयी, सम्पादक	
हिन्दी अनुभाग		15–33
10. कहानी – बेटी बचाओ	वंदना पाण्डेय, बी.एड. प्रथम वर्ष	16–17
11. अगले जन्म मोहे बिटिया ना कीजौ	पूनम कुमारी, बी.कॉम. प्रथम वर्ष	18–20
12. समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य	कु. शालू शर्मा, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)	21
13. माँ की लाचारी	शिवानी शर्मा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	21
14. आधुनिक युग में हिन्दी की प्रासंगिकता	वंदना पाण्डेय, बी.एड. प्रथम वर्ष	22–24
15. जर्जर बेड़ियाँ	पूजा सिंह, बी.ए. प्रथम	24–26
16. शिक्षा क्या है ??	श्रीमती रमाकांति, सहा० प्रो० बी.एड.	27–28
17. गुरू–शिष्य सम्बन्ध	श्री उदय प्रकाश पासवान, सहा० प्रो० बी.एड.	28–30
18. भौतिकवादी युग की देन–मानसिक तनाव	डॉ० रतन सिंह, सहा० प्रो० बी.एड.	30
19. परिवर्तन (कविता)	नीतू नागर, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)	31
20. ये कैसी जिन्दगी (कविता)	रीना, बी.एड. प्रथम वर्ष	31
21. कोशिश (कविता)	अंजली मौर्या, बी.एड.	32
22. ये लड़कियाँ (कविता)	अंजली सिंह, बी.एड.	32
23. सूखा पत्ता (कविता)	कु. पूजा, एम.ए. द्वितीय वर्ष	33
24. मुझे कदम–कदम पर (कविता)	अलका, बी.एस.सी. तृतीय	33
संस्कृत अनुभाग		34–46
25. उपनिषत्सु अध्यात्मविद्या	कु. मंजू नागर, एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर	35–36
26. भाषाविज्ञानम्	कु. मोनिका, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	36–40

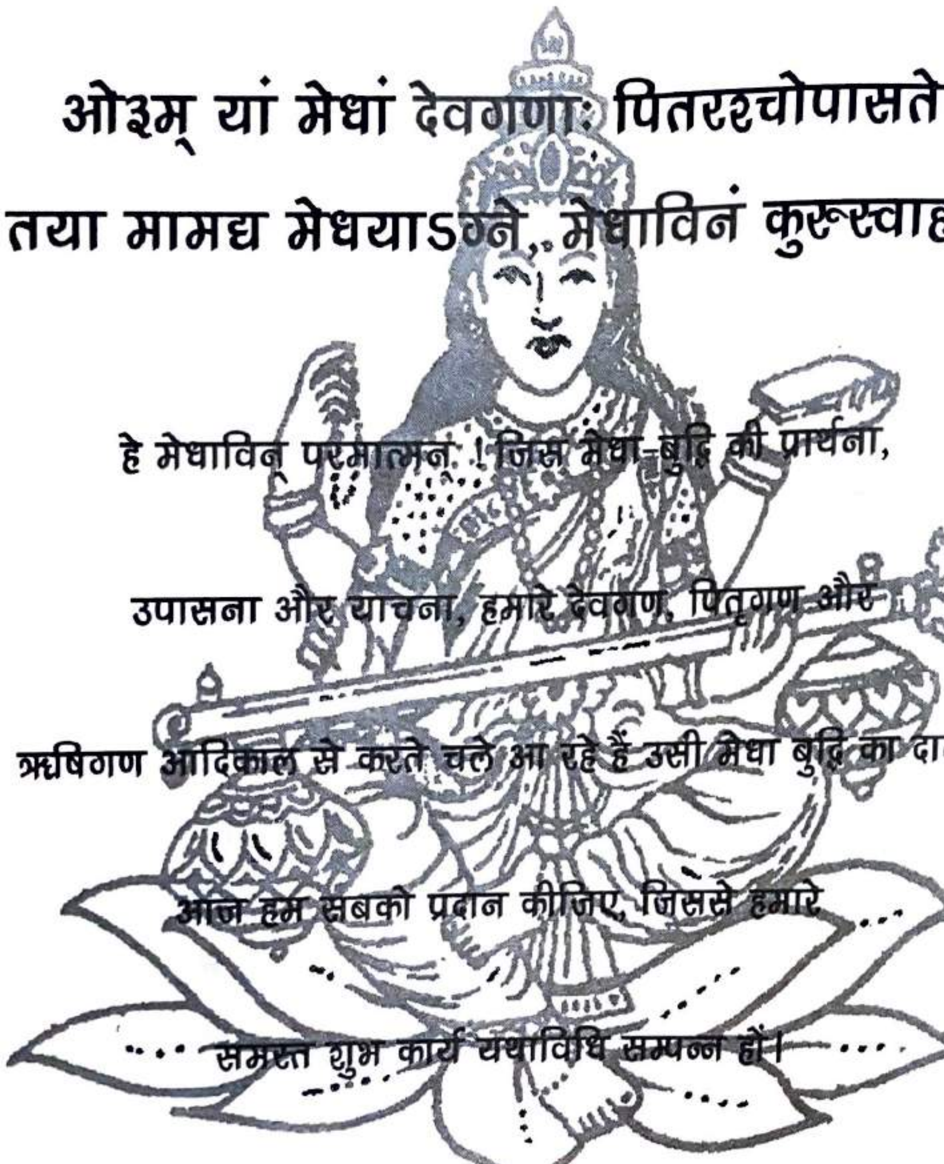

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने, मेधाविनं कुरुस्वाहा।।

हे मेधाविन् परमात्मन् ! जिस मेधा-बुद्धि की प्रार्थना,

उपासना और याचना, हमारे देवगण, पितृगण और

ऋषिगण आदिकाल से करते चले आ रहे हैं उसी मेधा बुद्धि का दान,

आज हम सबको प्रदान कीजिए, जिससे हमारे

समस्त शुभ कार्य यथाविधि सम्पन्न हों।

शमीमा सिद्दीकी
SHAMIMA SIDDIQUI
भारत के राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव
Deputy Press Secretary
to the President of India

PRESIDENT'S SECRETA...
RASHTRAPATI BHA...
NEW DELHI - 110004

'संदेश'

भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानाञ्जलि"** का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है पत्रिका में दी गई सामग्री विद्यार्थियों एवं अन्य पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

राष्ट्रपति जी पत्रिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

Tel. (O) : 91-11-23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442, Fax : 91-11-23010252
E-mail : message-rb@rb.nic.in

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 02

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

01 अग 2016

'संदेश'

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि **कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादल** (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जलि'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश की युवा पीढ़ी के विकास में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि जीवन में प्रगति का माध्यम अ शिक्षा और अच्छे संस्कार होते हैं। मुझे विश्वास है कि कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय भावी पी को समाज एवं राष्ट्रहित में अच्छा नागरिक बनाने में अपना अप्रतिम योगदान देता रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(राम नाईक)

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

शारदा प्रताप शुक्ला
राज्य मंत्री, उच्च शिक्षा
(स्वतंत्र प्रभार)

दूरभाष (का.) 052
(आ.) 0522
उत्तर प्रदेश शासन
चतुर्थ तल, बापू भवन, सचिव
लखनऊ
पत्रांक 379 / रा.म.स्व.प्र., उशि / 2016
दिनांक 28/7/2016

'संदेश'

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि कु० मायावती राजकीय महिला (पी०जी०) कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर की वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जलि'** का प्रकाशन हो रहा है।

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का साधन और मानव–जीवन की आधारशिला है। महाविद्यालय की पत्रिका छात्र/छात्राओं हेतु बौद्धिक मंच होती है, जिससे छात्र/छात्राओं को नई दिशा मिलती है और वे समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपनी सही भूमिका निभाने में सक्षम हो पाते हैं। आशा है कि **'ज्ञानाञ्जलि'** अपने सारगर्भित कलेवर के साथ अपनी यह भूमिका निभाने में समर्थ होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(शारदा प्रताप शुक्ला)

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

डॉ० राजेन्द्र पाल सिंह
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा नि ालय, उ०
इलाहाबाद

0532 23874 (का
0532 23919 (फै
0532 56785 (आ
9415 55 (मो)

दिन 01-08-20

'संदेश'

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि **कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादल** (गौतमबुद्ध नगर) अपनी वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाज्जलि'** का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय की पत्रिका के प्रका से छात्र/छात्राओं के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास तथा रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्सा करने का अवसर प्राप्त होता है। मुझे उम्मीद है महाविद्यालय की छात्र/छात्राएं अपने लेखों, कविताओं, कहानियों, स्पर्शी घटनाओं आदि के माध्यम से अपने देश की स्वस्थ परम्पराओं से जुड़ने का प्रयास करेंगे।

आशा है इस पत्रिका में देश की भावी पीढ़ी को उचित मार्ग प्रशस्त करने जैसी रचनाओं का समावेश होगा जिस प्रेरणा प्राप्त कर छात्र–छात्राएं अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(डॉ० आर०पी० सिंह)

चौधरी चरण सिंह
मेरठ-250 004

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी–एच०डी० (अर्थशास्त्र)
कुलपति

'संदेश'

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"ज्ञानाज्जलि"** सत्र 2016–17 का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि पत्रिका विद्यार्थियों के विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनेगी और उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाश करने हेतु शुभकामनाये।

(एन० के० तनेजा)

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ – 250 004

कार्यालय : +91–0121–2760554,2760551, फैक्स: 2762838
शिविर कार्यालय : +91–0121–2600066, फैक्स:2760577

वेबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई–मेल : vc@ccsuniversity.ac.in

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, मेरठ, उ.प्र.

दूरभाष: 01[illegible] –24004[illegible]
945667600[illegible]
OFFICE
Regional Higher Education Officer
Meerut

प्रो. जे.एस. नेगी
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी,
मेरठ।

पत्र संख्या 17 / दिनांक 02–08–2016

'संदेश'

महोदया,

मन आनन्द के अतिरेक से भर जाता है जब किसी पत्रिका के प्रकाशन की बात पता चलती है, विद्यार्थियों के कोमल मन की भाव प्रवण रचनायें **"ज्ञानाञ्जलि"** पत्रिका में प्रकाशित होंगी तो निश्चय ही उनके चेहरे खिल उठेंगे, इसका श्रेय उनके गुरूजनों को भी जाता है उनकी रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के लिये। गुरू शब्द की उत्पत्ति गायत्री से हुयी है, जो गायत्री मंत्र का जप करे वह गुरू है अतः गुरू पवित्र हैं। गुरू से विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं प्रत्यक्ष भी अप्रत्यक्ष भी।

प्राचार्या सहित समस्त गुरुजनों व महाविद्यालय परिवार को साधुवाद।

एक रोशनी जगमगायेगी, इसी उम्मीद के साथ।

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(जे. एस. नेगी)

प्राचार्या की कलम से

'ज्ञानाञ्जलि' का नवीन अंक प्रस्तुत करते हुए असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। वर्तमान समय में किसी भी परिदृश्य में उच्च शिक्षा का महत्व स्वतः सिद्ध है। किसी भी उन्नत समाज के लिए यह अति आवश्यक है कि उस समाज के नागरिक सभ्य, सुसंस्कृत, शिक्षित एवं विवेकशील हों। शिक्षा एक सभ्य समाज की पहचान है। आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र ज्ञान की प्राप्ति नहीं बल्कि ज्ञान [illegible] और कौशलों का विकास, मूल्यों में आस्था, [illegible] चरित्र का निर्माण, व्यावसायिक क्षमताओं में अभिवृद्धि [illegible] नेतृत्व क्षमता का विकास है। आज हमारी शिक्षण [illegible] वातावरण के सृजन की आवश्यकता है जिससे राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं साम्प्रदायिक सद्भाव [illegible] हो। किसी भी शैक्षणिक संस्था की पत्रिका उस संस्था के बौद्धिक विकास, रचनात्मक क्षमता एवं ज्ञानार्जन की अभिव्यक्ति करती है। ज्ञानाञ्जलि का प्रस्तुत अंक महाविद्यालय की सृजनात्मकता का प्रकटीकरण है और बौद्धिक कसौटी पर खरा उतरेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

वर्तमान सामाजिक स्थिति में भारत का निर्माता युवा वर्ग अपनी अल्प अनुभूतियों से प्रेरित हो पारम्परिक आवरण को हटा देना चाहता है जबकि उसके पास मौलिक विचार हैं, नव्य स्फूर्ति है तथा दृढ़ इच्छाशक्ति है। आवश्यकता है उसको प्रोत्साहित करने की, व्यक्तित्व को प्रस्फुटित करने की एवं अवसरों को उपलब्ध कराने की। युवाओं को सही दिशा निर्देशन देने का महत्वपूर्ण दायित्व महाविद्यालय का है। शिक्षण संस्थाएं ही वे स्थान हैं जहाँ देश का भविष्य निर्मित होता है। महाविद्यालय के गुणी एवं विद्वान प्राध्यापक इस युवा वर्ग को तराशने का कार्य कर रहे हैं, उन्हें सही दिशा निर्देशन दे रहे हैं, शिक्षण की नवीन तकनीकों से परिचित करा रहे हैं और सशक्त जीवन जीने की प्रेरणा के स्त्रोत बन रहे हैं। वर्तमान महाविद्यालय में स्नातकोत्तर प्राचार्य की पदोन्नति स्वरुप मई 2016 को मैंने कार्यभार ग्रहण किया है। मेरा भरसक प्रयास सदैव यही होगा कि महाविद्यालय को उत्तरोत्तर प्रगति की ऊँचाइयों तक ले जाऊँ। इस गुरुतर उत्तरदायित्व के निर्वहन में मेरे महाविद्यालय के कर्मठ एवं लगनशील प्राध्यापक, कार्यकुशल कर्मचारी, जिज्ञासु छात्रायें पूर्ण सहायक होंगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है क्योंकि किसी भी संस्था का विकास आपसी सहयोग एवं सामंजस्य से ही सम्भव है।

महाविद्यालय की अकादमिक एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का सूक्ष्म परिचय एवं छात्राओं की मौलिक प्रतिभा का दर्पण हैं 'ज्ञानाञ्जलि'। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ज्ञानाञ्जलि छात्राओं के चिन्तन को सकारात्मकता देने का सफल माध्यम है। महाविद्यालय पत्रिका के सम्पादन का दुष्कर कार्य महाविद्यालय के संपादक मण्डल, प्राध्यापकों, छात्राओं एवं कार्यालय कर्मचारियों की इच्छाओं, नियोजन, रूचियों, लगन एवं कार्यनिष्ठा का संयुक्त परिणाम है। पत्रिका का सम्यक् सम्पादन एवं प्रस्तुतीकरण इस सत्य की पुष्टि करता है कि मन शान्त हो, कार्य के प्रति लगन हो एवं धैर्य हो तभी कोई कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होता है।

पत्रिका के लेखन एवं सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले समस्त प्राध्यापक एवं छात्राएं बधाई के पात्र हैं, जिनकी लेखनी ने पत्रिका को एक नवीन कलेवर प्रदान किया है। महाविद्यालय के समस्त कर्मचारी भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का प्रकाशन असम्भव था। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग देने हेतु सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। अन्त में डॉ० जयशंकर प्रसाद जी दो पंक्तियों द्वारा छात्राओं का आवाहन करती हूँ–

"शक्ति के विद्युतकण जो व्यस्त, विकल बिखरे हों निरुपाय,
समन्वय उनका करें समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय।।"

– डॉ० करुणा सिंह
प्राचार्या

सम्पादकीय

"एकोऽहं बहुस्यामि" के ईश संकल्प से सृजित होने वाली सृष्टि विभिन्न रुप-रंग... की अद्... अभिव्यक्ति से मानव हृदय पर व्यापक प्रभाव डालती है। नील क्षितिज की इन्द्रधनुषी आभा, ...ई कोपल ... मोती के रुप में परिणत नीर की बूँद, आकाश में उड़ान भरती बलाकाओं की पंक्ति, उदयाचल ... अस्ताचल ... ओर उन्मुख श्रीअंशुमाली की अलौकिकता, झिलमिल तारिका समूह के मध्य मयंक की अमृत...ी शीतल... आनन्दातिरेक से नृत्य करते हुए मयूर की मोहकता, मुकुलित पुष्पों की सतरंगी छटा एवं पराग...ण को अ... अन्दर समेटे सुरभित मलयज का स्पर्श, प्रत्येक सृजनशील हृदय को सृजन हेतु उद्वेलित कर देता है। ... सृजन मूर्तिकार की मूर्ति के रुप में, चित्रकार के चित्र के रुप में, गीतकार के गीत के रुप में, तो कभी कवि ... काव्य के रुप में मुखरित हो जाता है।

महाविद्यालय पत्रिका ज्ञानाञ्जलि जहाँ एक ओर सृजनातुर छात्राओं के कोमल हृदय की मुख... अभिव्यक्ति है, वहीं शिक्षा प्रक्रिया के अभिन्न अंग पाठ्यसहगामी क्रियाओं में शिक्षक-छात्र सम्बन्धों ... तारतम्यता, महाविद्यालय की प्रगति एवं उपलब्धियों तथा सम्पूर्ण सत्र के अविस्मरणीय पलों को संरक्षित करन... का सहज माध्यम भी है।

ज्ञानाञ्जलि रुपी रत्न माला में इस नवम् अंक के रुप में एक और मोती पिरोने का सुअवसर प्राप्त होना ... मेरे लिए अत्यधिक हर्ष का विषय है। पत्रिका के प्रकाशन की प्रेरणा एवं स्नेहासिक्त मार्गदर्शन प्रदान क... ज्ञानाञ्जलि को वर्तमान कलेवर प्रदान करने का श्रेय आदरणीय प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह को जाता है। समय-सीमा के अन्तर्गत सम्पादन जैसे क्लिष्ट कार्य को सम्पन्न करने हेतु मुझ पर विश्वास व्यक्त करने के लि... मैं प्राचार्या जी की हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय की धवल कीर्ति एवं सुरभि को चतुर्दिक विकीर्ण करने वाली पूर्व प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग की भी मैं अन्तस् से आभारी हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की मधुर स्मृतियाँ पत्रिका का यह अंक अपने अन्दर सहेजे हुए हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपने अमूल्य शुभकामना संदेश प्रेषित करने के लिए मैं महामहिम राज्यपाल श्री राम नाईक, माननीय राज्य मंत्री उच्च शिक्षा श्री शारदा प्रसाद शुक्ला, श्री आर०पी० सिंह शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा, प्रो० एन० के० तनेजा कुलपति चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ एवं श्री जे०एस० नेगी क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, मेरठ मंडल के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

संवर्गीय सम्पादक मंडल एवं महाविद्यालय परिवार का मैं विशेष रुप से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके समवेत प्रयासों का प्रतिफल पत्रिका के वर्तमान कलेवर के रुप में हमारे सम्मुख है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रुप में अपनी सृजनात्मकता को व्यक्त करने वाली छात्राएं बधाई की पात्र हैं। सृजन का यह क्रम आगामी सत्रों में अबाधित रुप से पुष्पित-पल्लवित होता रहेगा ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

– डॉ० दीप्ति वाजपेयी

प्रधान सम्पादिका

हिन्दी अनुभाग

एक दीप पर्याप्त है
सारे अंधेरे से लड़ने के लिए,
अगर वह सही हाथों में जले,
मानवीय गरिमा की,
राष्ट्रीय अस्मिता की,
छाया में पले
और अपने आप को
या किसी और को ना छले,
फिर वे हाथ कोई अवतारी हो,
या सामान्य जन के चमत्कारी,
कोई फर्क नहीं पड़ता,
निश्चय ही फर्क पडेगा ,
वर्तमान विषमता का विष कटेगा,
यदि हम अपने आप से
और एक दूसरे से
कहते चलें
'आत्म दीपो भवः'

आशा रानी व्होरा

सम्पादक मण्डल

डॉ० अर्चना सिंह

डॉ० मिन्नु

छात्रा सम्पादिका

कु० मनीषा एम.ए. तृतीय सत्र (हिन्दी)

कु० संजू नागर बी.ए. तृतीय वर्ष

कहानी - बेटी बचाओ

वंदना
बी.एड.

आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र जैसे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक हर क्षेत्र में प्रगति की है और की प्रगति में महिलाओं के योगदान को किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं आंका जा सकता है। इसके बावजूद हमें बचाओ' जैसे कार्यक्रम या नारों की आवश्यकता क्यों पड़ रही है ? इस विषय में हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिए। समाज में महिलाओं का सही हक आज तक नहीं मिल पाया है। समाज में आज भी स्त्रियों की स्थिति सही नहीं है। इस को पूरी तरह से नकारा भी नहीं जा सकता कि पहले से स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार तो हुआ लेकिन स्थिति संतोषजनक नहीं है। समाज में आज भी कन्या भ्रूण हत्या, झूठी शान के लिए बेटियों की हत्या और बलात्कार की घटनाएँ जारी हैं। पोषण, शिक्षा या घर के बाहर जाकर काम करने के मामले में भी कोई खास कमी नहीं आयी है। ये सभी फैसले आज भी उनका परिवार ही करता है।

बहुमुखी विकास के लगभग सात दशकों के बाद भी स्त्रियों की दशा में बहुत सुधार नहीं हुआ है और जो सुधार हुआ भी है तो वह न के बराबर है। इतने दशक के बाद हमें 'बेटी बचाओ' जैसे योजना में नारे की जरुरत इस बात की तरफ इशारा करती है कि आज भी समाज में बेटी की स्थिति क्या है ? बेटियों को बचाने के लिए पहले भी बहुत से कार्यक्रम योजना, कानून बनाये गये हैं लेकिन उस स्थिति में कोई संतोषजनक परिणाम नहीं मिला।

जन्मपूर्व लिंग परीक्षण (विनियमन एवं प्रतिरोध) कानून आज से लगभग 20 साल पहले ही बनाया जा चुका है। फिर भी बड़ी संख्या में आज भी ऐसी घटनाएँ सामने आती है जिसमें लड़कियों का गला माता के गर्भ में ही घोट दिया जाता है। कुछ राज्यों में ऐसी घटनाएँ आम बात है। जैसे उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान इत्यादि राज्यों में कन्या भ्रूण हत्या, झूठी शान के लिए बेटी की हत्या इत्यादि घटना आम बात है।

ऐसी स्थिति में देश की आबादी में महिलाओं का अनुपात कम होना कोई हैरानी की बात नहीं है। वर्ष 1951 से 2011 की जनगणना में स्त्रियों की संख्या में कमी आयी है। 1951 में 1000 पुरुषों पर महिलाओं की जहाँ संख्या 946 थी वही 2011 की जनगणना में 940 हो गयी है। वहीं कुछ राज्यों में तो स्थिति और भी भयावह है। जैसे चंडीगढ़ में 818, दिल्ली में 888, हरियाणा में 877, पंजाब में 883 और उत्तर प्रदेश में 908 महिलाएँ हैं। देश के कुछ जिलों में तो इन स्थितियों के कारण कई सामाजिक और पारिवारिक समस्याएँ खड़ी हो गयी हैं।

महिलाओं के कल्याण के लिए हमारे संविधान में भी कई तरह के अधिकार और कानून बनाये गये हैं। ऐसा भी नहीं है कि वर्तमान और पूर्ववर्ती सरकार ने महिलाओं के लिए काम नहीं किया है या ऐसी कोई योजना या कार्यक्रम न बनाये गये हो लेकिन वह सफलता नहीं मिल पायी जिसकी आवश्यकता या आशा महसूस की गयी थी।

ऐसा भी नहीं है कि महिलाओं के विकास, सम्मान, सुरक्षा के लिए बुद्धिजीवी या राजनेता था महान व्यक्तियों ने प्रयास न किये हो। बहुत से ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने आज नहीं आजादी के पहले भी स्त्रियों के लिये बहुत से काम किये हैं। जैसे आज भी कई बड़े नाम हैं जिन्होंने स्त्रियों के लिए कार्य किया। जैसे – राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, रमाबाई, महात्मा गाँधी, विवेकानन्द इत्यादि।

महान व्यक्तियों ने स्त्रियों के लिए बहुत काम किये बहुत ही महान व्यक्ति विवेकानन्द जी का कथन था – "कि जब हम एक महिला को साक्षर करते हैं तो हम एक पूरे परिवार को साक्षर करते हैं" इससे हमें पता चलता है कि आज के समाज में बेटियों की शिक्षा का क्या महत्व है ? बहुत से ऐसे माध्यम है जिससे हम देश की बेटियों की रक्षा कर सकते है और उसमें शिक्षा एक प्रमुख कारण है। जिसके माध्यम से हम सभी को विशेषताएँ स्त्रियों को जागरुक कर सकते हैं समाज में अपनी स्थिति को सम्मान जनक बनाने के लिए और एक बेहतर जीवन प्रदान कर सकते हैं।

आज भी समाज में बेटियों को उपेक्षाओं का दंश झेलना पड़ रहा है जबकि बेटियाँ हर क्षेत्र में अपना नाम कर रही है।

हैं। इन सब के बावजूद उनकी उपेक्षा इस बात का प्रमाण है कि हमें बेटियों की स्थिति को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। समाज में आज भी तमाम ऐसी बुराइयाँ या मान्यताएँ प्रचलित हैं जिससे बेटियों की संख्या में लगातार कमी आ रही है। जैसे बेटियों को स्कूल न भेजना, अच्छा पोषणयुक्त भोजन की अनुपलब्धता छोटी उम्र में विवाह और माँ बनने के कारण से भी उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है।

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपना नाम कर चुकी हैं। ऐसे बहुत से नाम हैं जिन्होंने नाम किया है । जैसे –टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा, बेडमिंटन खिलाड़ी सायना नेहवाल, मुक्केबाज मैरीकॉम, इत्यादि ऐसे नाम हैं जिनसे हमें प्रेरणा मिलती है कि ये भी तो इसी देश की बेटी होने के बावजूद अपना नाम रोशन किया है। आज हम इनको सम्मान की नज़र से देखते हैं। ये हमारे लिए एक रोल मॉडल की तरह है तो देश की हर बेटी को यह दर्जा हम क्यों नहीं देते हैं।

हमें बस अपनी सोच बदलने की जरुरत है कि लड़की या लड़के में फर्क है। जिस दिन समाज की सोच में यह बदलाव आ जायेगा उस दिन से ही समाज में बेटियों की स्थिति में सुधार होने लगेगा। आज से ही नहीं प्राचीन काल से ही बेटियों ने हमारे देश और समाज का नाम रोशन किया है। इन सबके बावजूद हम बेटियों का अपमान करते हैं। बस हमें अपनी यही सोच बदलने की जरुरत है।

हम अपने व्यवहारिक जीवन में ही देख सकते हैं कि हमारे देश में मनाये जाने वाला त्यौहार 'नवरात्र' में हम उन्हीं बेटियों की नव देवी के रुप में पूजा करते हैं। इन्हें देवी का दर्जा देते हैं और बाद में इन्हीं बेटियों की अपने झूठी शान के खातिर हत्या कर देते हैं। यह किस प्रकार की दकियानूसी सोच है। इन्हीं सभी बातों में बदलाव की जरुरत महसूस की जा रही है। पहले हमारी सोच 'यत् नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ पर स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ पर देवता का वास होता है। हमें फिर से इसी सोच को जीवित करने की आवश्यकता है। जिससे देश में बेटियों को वही स्थिति प्राप्त हो सके जिसकी वह हकदार हैं।

ऐसा नहीं है कि देश में बेटियों के लिए काम न किया गया हो। बहुत सी ऐसी योजनाएँ है जिनके माध्यम से बेटियों को समाज में अच्छा दर्जा दिया जा सके जो एक सभ्य समाज के सभी व्यक्तियों को प्राप्त होता है। सरकार द्वारा चलायी जा रही कुछ योजनाएँ आशा योजना, बालिका समृद्धि योजना, स्वशक्ति धन लक्ष्मी योजना, प्रियदर्शिनी, उज्ज्वली योजना, सबला योजना, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना इत्यादि।

इन्हीं योजनाओं के माध्यम से देश में बेटियों की स्थिति को और बेहतर करने का प्रयास सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के द्वारा जो भी प्रयास किये गये हैं या किये जा रहे हैं वह सराहनीय हैं लेकिन इनके अलावा हमें भी प्रयास करना चाहिए जिससे हम बेटियों को बचा सके।

समाज में ऐसे तमाम उदाहरण मौजूद हैं जिससे हमें प्रेरणा मिलती है कि हम बेटियों के लिए ऐसा ही कुछ प्रयास करें, यहीं पर एक उदाहरण राजस्थान का पिपलांती गाँव नजीर बना हुआ है। यह एक ऐसा गाँव है जो एक दशक से बेटी बचाने का अभियान चला रहा है जिसकी चर्चा देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हो रही है। इस अभियान के तहत 1 बेटी के पैदा होने पर 111 वृक्ष लगाये जाते हैं। जिसकी देखभाल की जिम्मेदारी उसी परिवार की होती है। इतना ही नहीं बेटी के नाम पर 30 हजार रुपये 21 साल के लिए जमा किया जाता है जिससे उच्चस्तरीय पढ़ाई या शादी पूरी हो सके। इसकी शुरुआत तत्कालीन सरपंच श्याम सुंदर पालीवाल ने अपनी बेटी की याद में की जिसकी मृत्यु का उन्हें गहरा आघात लगा।

समाज में ऐसे तमाम उदाहरण हैं जो बेटियों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। हमें भी इन उदाहरणों से कुछ सीखना चाहिए और उसको अपने जीवन में उतारना भी चाहिए जिससे कि इस समाज में बेटी के बचाने के प्रयास में हमारा भी कुछ योगदान हो सके क्योंकि कहा गया है कि बूँद–बूँद से सागर भरता है। भले ही हमारा प्रयास इस सागर में एक बूँद मात्र ही क्यों न हो।

जिस दिन यह एक बूँद और अनेक बूँद बन जायेंगी उस दिन ही सागर का स्वरुप ग्रहण कर लेंगी और बेटियों की समाज में वही सागर वाली स्थिति प्राप्त हो जायेगी क्योंकि प्रयास करने से ही सफलता पाई जा सकती है।

स्त्रियों की महत्ता महाकवि गुरु 'रविन्द्र नाथ टैगोर' की इन पंक्तियों में –

'हे नारी तुम ईश्वर का सृजन मात्र नहीं मानव हृदय का सौन्दर्य हो। हमारी सहायिका हो तुम,
केवल स्त्री नहीं हमारा स्वप्न हो तुम' ।। स्पष्ट होती हैं।

"अगले जन्म मोहे बिटिया ना कीजौ"

माँ! मुझे मत मारो, मेरी हत्या मत करो। मैं भी जीना चाहती हूँ, अपने पिता का दुलार पाना चाहती हूँ, उनका रोशन करना चाहती हूँ। मुझे भी दुनिया के **सभी** रिश्तों से जुड़ने दो माँ! मुझे मत मारो, मेरी हत्या मत करो।

हमारे समाज में आज भी लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव किया जाता है। लड़के के जन्म पर खुशियाँ जाती है। लड़कियों के जन्म पर मातम् छा जाता है। यहाँ तक कि उन्हें गर्भ में ही मार दिया जाता है। जब तक नारी इस स्थिति में कोई सुधार नहीं होता, तब तक इस विश्व का कल्याण असम्भव है। पक्षी के लिए एक पर से उड़ना अस है, किन्तु सदियों से हमारा समाज महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों की उपेक्षा करता हुआ एक पर से उड़ लिए प्रयत्नशील है। भारत जैसे देश में जहाँ धरती को मातृभूमि कहकर पुकारा जाता है, वहीं महिलाओं को दोयम दर्जे नागरिक समझा जाता है। तो लीजिए प्रस्तुत है।

<u>पहला दृश्य</u>

मुबारक हो! : मुबारक हो! लड़की पैदा हुई है।

रामगोपाल : का कहा! लड़की भई है?

सरिता : हाँ, **लड़की भई है।**

रामगोपाल : हे भगवान! हमारे तो भाग ही खोटे हैं। न जाने कौन से जन्म के पाप हैं, जो इसके रुप में पधारे हैं।

सरिता : ये का कहत हो जी! देखो तो कितनी सुन्दर बिटिया है, हमारी! बिटिया तो घर की लक्ष्मी होवे है।

रामगोपाल : अरे काहे की लक्ष्मी? घुन होवे है घुन जो पूरे घर को चट कर जावे है।

सास : हाय, हाय हमारे तो भाग्य ही फूट गए अरे ओ कर्मजली, नासपीटी तू तो घर को एक वारिस भी न दे सकी। हमका न जाने, कब से घर के वारिस के लिए तड़पे हैं। अरे उम्मीद, रखे थे कि लड़का होवेगा। ले कुलच्छिनी ने लड़की को जन्म दिया। हमका मुँह नहीं दिखाना उसका। अरे पैदा होते ही मार काहे न डाली। तो से अच्छी तो लच्छी की बहु है। जिसने आठ–आठ छोरा जने हैं वाने, नौवा कोख में है। जब मैं के घर गई तो खूब मीठा खा रही मोए तो पूरो विश्वास है जौ बार भी छोरा ही होगा।

रामगोपाल : तू सही कहती है माँ! ला इधर दे इसे अभी मार कर फेंक आवत हूँ। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। ब्याह का झंझट सभी खत्म कर देता हूँ।

प्रधान : क्या हुआ रामगोपाल! क्यों शोर मचा रहे हो?

रामगोपाल : अरे, का बताएँ। लड़की पैदा भई है, लड़की।

प्रधान : क्या कहा! लड़की पैदा हुई है। ये तो बहुत खुशी की बात है। लड़की तो घर की लक्ष्मी होती है।

रामगोपाल : अरे! काहे की लक्ष्मी! लक्ष्मी तो वो होवे है, जो घर आए तो धन लाएँ। इसको तो पढ़ाओ–लिखाओ, दहेज दो, सो अलग।

प्रधान : अरे ये क्या कह रहे हो। लड़के–लड़की में भेदभाव करने वाला जमाना गया। आज तो लड़कियाँ, हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। तुमने कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स का नाम सुना है?

रामगोपाल : का कहा, सुनीता विलियम्स?

प्रधान : ये दोनों अन्तरिक्ष में रह कर आई हैं। तुम मुझे ही देख लो, आज मैं पढ़–लिखकर, इस गाँव की प्रधान हूँ

अगर मेरे माँ–बाप ने भी यही सोचा होता तो, मैं आज इस गाँव की प्रधान न होती।

रामगोपाल : प्रधान का तो दिमाग खराब हो गया है। कुछ–न–कुछ कहती ही रहती है।

<u>दूसरा दृश्य</u>

कुछ सालों बाद जब गंगा बड़ी हो जाती है।

सरिता : गंगा बिटिया, का कर रही हो?

गंगा : मैं पढ़ाई कर रही हूँ, माँ।

सरिता : शाबाश बेटी! खूब मन लगाकर पढ़ाई करो।

सास : अरी ओ गंगा। बैठे –बैठे का कर रही है। घर में कितना काम पड़ा है, बर्तन पड़े हैं, झाड़ू पौंछा पड़ा है। वो कौन करेगा, तेरा पड़ोसी? चल छोड़ इसको और काम कर।

सरिता : अरे, रहने दीजिए न। अभी तो यह बहुत छोटी है। सातवीं कक्षा में ही पढ़ती है। इसे पढ़ने दीजिए ना।

सास : तू चुप कर। मैं जो कहती हूँ, वो कर।

सरिता : अभी तो काम में हाथ बंटाकर बैठी है। पढ़ने ....

रामगोपाल : तू चुप कर। माँ जो कहती है, वही सही है। कौन–सा इसे पढ़ा लिखाकर मिलिट्री–कलेक्टर बनाना है। आज ही इसका ब्याह तय कर आता हूँ।

<u>तीसरा दृश्य</u>

गंगा का बाप, गंगा का ब्याह तय कर आता है।

रामगोपाल : माँ, सरिता, इधर आओ।

सरिता : अरे का हुआ जी। बहुत खुश नजर आत हो।

रामगोपाल : खुशी की ही तो बात है, गंगा का ब्याह जो तय कर के आया हूँ। बहुत अच्छा घर मिला है, बहुत अच्छा दामाद मिला है। 42 बीघा खेत हैं, सात भैंसें, बारह गाय और तो और खेत जोतने के लिए तीन जोड़ी बैल भी हैं।

गंगा : माँ! माँ! मैं अपनी कक्षा में प्रथम आई हूँ और मुझे वजीफ़ा भी मिला है।

सरिता : शाबाश बेटी!

रामगोपाल : अब ये वजीफा क्या बला है?

गंगा : वजीफे में सरकार द्वारा पढ़ाई–लिखाई के पैसे दिए जाते हैं। अब तो आपको मेरी पढ़ाई–लिखाई पर पैसे भी खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

रामगोपाल : पढ़ाई–लिखाई के अलावा सौ खर्च होते हैं। तेरे खाने का, पीने का वो क्या तेरी सरकार देगी। मैं तेरा ब्याह तय कर आया हूँ 27 की तेरी शादी है।

सरिता : अरे, हमार मानो। अभी गंगा बहुत छोटी है, अभी उसकी शादी न कराओ। अभी तो वह सातवीं में ही पढ़ती है।

रामगोपाल : तू चुप कर। मेरा फैसला अटल है।

सरिता : अरे, ऐसा गजब न करो। हमारे पड़ोस वाला भी तो पढ़त है।

रामगोपाल : अरे, मूर्ख औरत वो लड़का है लड़का। पढेगा–लिखेगा तो पैसे कमाएगा और ये क्या करेगी? मैंने कह दिया सो कह दिया।

गंगा : मैंने भी कह दिया है, मैं पढ़ाई करुँगी।

<u>चौथा दृश्य</u>

सास : हाय! हाय! देखो तो कैसी बैठी है। ओ महारानी बैठे–बैठे किसका शोक मना रही है। कुछ
कुछ काम भी कर लिया कर। काम की न काज की दुश्मन अनाज की।

गंगा : अभी–अभी तो काम कर बैठी हूँ। थक गई थी। सोचा थोड़ा आराम कर लेती हूँ।

सास : इसकी जबान भी लम्बी हो गई है। चल यहाँ से।

पाँचवा दृश्य

गंगा की माँ का फोन आता है।

सरिता : हैलो! क्या तुम गंगा बोल रही हो ?

गंगा : हैलो! हाँ, माँ ! मैं गंगा बोल रही हूँ।

सरिता : तुम बीमार हो क्या ?

गंगा : हाँ, माँ । मैं बहुत बीमार हूँ। यहाँ तो मेरा खाना–पीना सब कुछ छूट गया है। यहाँ पर तो मैं बि
पर ही पड़ी रहती हूँ ....

छठवाँ दृश्य

सरिता : लागत है हमार गंगा बीमार है। चलो न उससे मिलने चलते हैं।

रामगोपाल : इसके सर पे तो हमेशा ही गंगा का भूत सवार रहता है। फालतू के पैसे हैं, क्या ?

सास : अरे समधी जी आप आ गए। मैंने कई दिन पहले राजू से आपके यहाँ खबर भिजवाई थी कि गंगा
बीमार है। हमार गंगा कहाँ हैं ?

सास : वह आराम कर रही है ।

गंगा : माँ–पिताजी आप लोग आ गए।

सरिता : देखिए न, हमार गंगा कितनी दुबली हो गई है।

गंगा : शायद आप लोगो को देखने के लिए ही मेरे प्राण शेष थे। वरना यहाँ तो एड़ियाँ रगड़कर मैं कब से
मर चुकी होती। आप लोगों ने तो मेरी शादी मेरी भलाई के लिए इतने बड़े घर में की थी, शायद आप
लोग यह भूल गए थे कि बड़े घर का बोझ भी बड़ा होता है। मुझे माफ कीजिएगा पिताजी, आपने तो
मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए छोटी सी उम्र में मेरी शादी करा दी थी और मुझे पढ़ाई भी करने नहीं दी
शायद हर लड़की की किस्मत में ऐसा ही होता है ....

सरिता : गंगा, गंगा ! तुम्हें क्या हो गया ?

रामगोपाल : गंगा। उठो। हे सरिता, हे गंगा, मुझे माफ कर दो। ये मैंने क्या कर दिया। मुझे माफ कर दो सरिता।

सरिता : हाय .... हाय .... हमारी गंगा हमें छोड़कर चली गई। हे भगवान यही दिन देखना बाकी बचा
था । मैंने कहा था। अभी गंगा की शादी न करो । लेकिन आपने मेरी एक न सुनी।

रामगोपाल : काश हमनें अपनी बेटी की शादी छोटी उम्र में न की होती। हमारी बच्ची का जीवन हमारी जिद की
भेंट चढ़ गया। हमने तो हमेशा से ही बेटी को बोझ समझा और उससे जल्दी–से–जल्दी छुटकारा
पाना चाहा। छोटी सी उम्र में शादी कर उसका बचपन और जीवन दोनों ही छीन लिया। मुझे माफ
कर दो सरिता।

सरिता : मैं आपको एक पत्नी होने के नाते माफ तो कर सकती हूँ परन्तु एक माँ होने के नाते कभी नहीं। गंगा,
तुम कहाँ चली गई ? हे भगवान, अगले जन्म मौहे बिटिया ही दीजौ।

रामगोपाल : हे भगवान। ये मैंने क्या कर दिया। मुझसे जो भूल हो गई, मैं नहीं चाहता कि आप भी ऐसा ही करें।
आप लोगों से मेरी विनती है कि बिटिया भी हमारी सन्तान है। उनका बचपन उनसे मत छीनिए।
उन्हें पूर्ण रुप से शारीरिक और मानसिक रुप से विकसित होने का मौका दें। ताकि जो हाल मेरी
गंगा का हुआ है वह किसी और का न हो मेरी बेटी गंगा मुझे माफ कर दें, ये मैंने क्या कर दिया।

समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

कु. शालू शर्मा
एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

1. विश्व की सबसे लम्बी सुरंग (57 कि.मी.) स्विट्ज़रलैण्ड में किस पर्वत में अक्टूबर 2010 में बनकर तैयार हो गई ?
   आल्प्स पर्वत ।
2. अक्टूबर 2010 में हुए एक समझौते के अनुसार भारत में जर्मनी का ईयर ऑफ जर्मनी कब मनाया गया ?
   2011–12 ई. में
3. केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा अक्टूबर 2010 में किस पशु को राष्ट्रीय विरासत एक अधिसूचना द्वारा घोषित किया गया ?
   हाथी।
4. ब्राजील की पहली महिला राष्ट्रपति अक्टूबर 2010 में किसे चुना गया ?
   दिलमा रोउसेफ ।
5. पहला विश्व सांख्यिकी दिवस 2010 में किस दिनांक को मनाया गया।
   20 अक्टूबर।
6. भारत का 16वां राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2011 में कहाँ मनाया गया ?
   उदयपुर (राजस्थान)।

माँ की लाचारी

शिवानी शर्मा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

एक चीख रात को चीर के माँ के हृदय तक आई।
एक नन्हीं–सी आवाज सुन के माँ बहुत घबराई।
माँ मुझे मत मारो, मत मारो मुझे
नन्हीं सी जान को जन्म से पहले ही मत मारो इस अनजान को!
बस माँ ही सुन सकती थी उस करुण पुकार को,
करना तो बहुत कुछ चाहती थी पर थी लाचार वो,
आखिर क्या कर सकती थी डरी –सहमी औरत वो,
न तो उसमें इतनी हिम्मत थी की कर सकती बगावत वो,
उसने भर कर आँखो में आँसू का मोती कहा –
"तेरी अच्छी है किस्मत जो जन्म न लेगी तू,
जन्म लेकर भी आखिर क्या कर लेगी तू,
इस दुनिया मे औरत का सम्मान नहीं फिर
इस दुनिया में आकर क्या करेगी तू,
जहाँ तेरे लिए प्यार नही वहाँ आकर क्या करेगी तू,
सारा जीवन दोहरी भूमिका निभाएगी तू,
जन्म न लेने में ही तेरी है भलाई "
यह कहकर माँ की वेदना और अधिक गहराई,
पर बेबस सी एक आवाज फिर आई,
माँ मुझे बस एक मौका दे दो,
मुझे एक बार इस दुनिया में आने तो दो!

आधुनिक युग में हिन्दी की प्रासंगिकता

वंदना
बी.एड

हिन्दी को हमारे देश में 'राजभाषा' का दर्जा प्राप्त है । हिन्दी भाषा का प्रयोग हम बहुत समय से कर रहे हैं। भाषा को मातृभाषा, जन संपर्क आदि भाषाओं के रुप में जाना जाता है। इस भाषा का प्रयोग आजादी से पहले और आ के बाद भी कर रहे हैं। हमारे संविधान में भी 'भाग 17 में अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी ऐसा कहा गया है तथा हिन्दी भाषायी राज्यों में भी शासकीय प्रयोजनों के लिए विधान–मण्डल विधि द्वारा उस रा हिन्दी भाषा के प्रयोग का उपबन्ध अनु० 346, 347 के तहत कर सकती है।

हिन्दी भाषा आज भी जीवित है तो केवल अपनी जीवन शक्ति से क्योंकि इस भाषा को हम अनेक रुप जै मातृभाषा जन संपर्क, राजभाषा इत्यादि के रुप में महत्त्व प्रदान करते हैं। इसलिए आज भी हिन्दी की प्रासंगिकता है। लें कहीं न कहीं इसके अस्तित्व को खतरा जरूर पहुँचा है क्योंकि बहुत से ऐसे लोग हैं जो इस भाषा की अनुपयोगिता की करते हैं और वहीं दूसरी तरफ आज भी बहुत से ऐसे देश या विदेश में लोग हैं जो हिन्दी भाषा का समर्थन करते हैं।

हिन्दी को हम केवल एक भाषा के रुप में ही नहीं बल्कि हम इसे अपने देश का गौरव, उसकी पहचान कला, सम और धरोहर आदि से भी जोड़ते हैं और जो भाषा किसी देश की पहचान हो उसकी प्रासंगिकता कैसे समाप्त हो सकती जब वह देश विकास के पथ की ओर अग्रसर हो रहा हो।

हिन्दी भाषा का प्रयोग साहित्य के रुप में बहुत से कवियों ने किया है। इसे अपने विचार समाज के सामने रखने भाषा के रुप में देखा और उसका बखूबी प्रयोग भी किया। हिन्दी साहित्य में एक बहुत बड़ा नाम माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी इस भाषा का प्रयोग करके देश में ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी को एक भाषा के रुप में पहचान अपनी इसी भाषा के माध्यम से वे जनता के हृदय में तो अपनी एक जगह बनायी ही बल्कि अपनी लेखनी के माध्यम से अ सरकार को भी सोचने पर मजबूर कर दिया।

इस भाषा के द्वारा भारतीय समाज को एक नयी दिशा देने का भी प्रयास किया और उन्होंने यह प्रयास उस स किया जब हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तथा देश में अपनी लेखनी के माध्यम से चेतना भर भारतीय समाज में व्याप्त रुढ़िवादिता अंधविश्वासों को भी दूर करने का प्रयास इसी भाषा के द्वारा किया क्योंकि हिन्दी हम एक सरल और सहज भाषा के रुप में देखते आ रहे हैं।

भारत में ऐसे बहुत से लेखक और लेखिकायें हुई हैं जिन्होंने अपनी लेखनी की भाषा के रुप में हिन्दी को चुना अपनी भावनाओं उत्सुकता, व्यथा को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया। जिससे आज जनता को भी अपने देश के बा जानने में सहायता हुई और विदेशी भी भारत को जान पायें कि हिन्दी भाषा देश के हृदय में बसती है।

देश–विदेश में फैला हुआ हिन्दी जगत बड़ी ही उत्सुकतापूर्वक इसे एक विश्व भाषा के रुप में देखता है। सहिष्णुता और हिन्दी भाषा के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करता है। इसका सबसे अच्छा वर्तमान समय में उदाहरण हम प्रधानमंत्री जी हैं। जो देश या विदेश दोनों ही जगह अपने भाषण, संवाद तथा आचार–विचार में हिन्दी को अपनी भाषा रुप में प्रयोग करते हैं। यह किसी भी देश के लिए गौरव का विषय होता है। इस बात से पता चलता है हिन्दी की प्रासंगिक कुछ समय के लिए औपचारिक जरुर हो गयी थी लेकिन हम यह मान लें कि इसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में नहीं है यह उस भाषा के साथ ना इंसाफी होगी, जो कि सही नहीं है।

आज वर्तमान समय में तकनीकी संचार, प्रकाशन इत्यादि क्षेत्र में हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है। इन माध्यमों के द्वारा भी हम इस दिशा में कुछ सराहनीय कदम बढ़ा रहे हैं। कई संस्थाएं, केन्द्र सरकार राज्य सरकारें त मीडिया जगत भी अपने–अपने ढंग से इसमें प्राण भरने का प्रयत्न कर रहा है जो कि इसके विकास के लिए एक सकारात्म पहलू है लेकिन अभी और भी प्रयास किए जाने चाहिए। अपने प्रयास के द्वारा हम हर तरह की संभावनाओं को पूरा कर

सकते हैं बस प्रयास हमेशा सकारात्मक और दृढ़ निश्चयता के साथ किया जाना चाहिए तथा जो कि हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि यह प्रयास सही दिशा में हो रहा है बस इस प्रयास में निरन्तरता बनी रहनी चाहिए। वर्तमान समय में हिन्दी की प्रासंगिकता का सबसे बड़ा उदाहरण हमारा 'फिल्म जगत' है क्योंकि यहाँ जो भी फिल्म या गाने लिखे जाते हैं उसमें ज्यादा से ज्यादा हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है और फिल्मों को समाज का आईना माना जाता है तथा यह देश और विदेश दोनों ही जगह बड़ी आसानी से उपलब्ध होता है और यह एक जन संपर्क का माध्यम भी होता है। फिल्मों के माध्यम से हम बहुत सी बात अपने समाज के बारे में जानते हैं और अगर इन फिल्मों की भाषा हिन्दी होगी तो ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच पहुँचेगी और उसकी प्रासंगिकता को भी सब समझ सकेंगे।

हिन्दी भाषा देश की राष्ट्रभाषा की आकांक्षा का एक ऐसा रुप है जो देश विदेश सभी को एक संपर्क का माध्यम प्रदान करती है और उम्मीद की जानी चाहिए कि हम आगे इसे और व्यापक बनाने का प्रयास करेंगे जैसे – सरकारी काम काज, शिक्षा, उद्योग–धन्धे, न्याय स्वास्थ्य इत्यादि क्षेत्र में हिन्दी के प्रचलन को सुनिश्चित करेंगे, और इसे विश्व पटल पर एक नया आयाम देने का प्रयास करेंगे। इस बात से इसे समझा जा सकता है कि हिन्दी की पहचान के लिए किस तरह से प्रयास किये जा रहे हैं। उदाहरण – पहले हमें दवाईयों के ऊपर हमेशा अंग्रेजी में उस दवा का नाम लिखा मिलता था लेकिन वर्तमान समय में परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। अब दवा के ऊपर हिन्दी में भी उसका नाम लिखा रहता है।

सरकार द्वारा इस दिशा में जो भी प्रयास किये गये हैं वह सराहनीय हैं लेकिन हमें भी व्यक्तिगत तौर पर इस भाषा के लिए प्रयास करते रहना चाहिए और भारत ही नहीं बल्कि विदेश में भी बहुत से ऐसे विद्वान हैं जो इस दिशा में प्रयासरत हैं। बहुत से ऐसे विद्वान हैं यहाँ हए जिन्होंने इस भाषा के विकास में अपना योगदान दिया जैसे– रामधारी सिंह दिनकर निराला जी, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, अटल बिहारी वाजपेयी इत्यादि ऐसे नाम हैं जो हिन्दी के लिए हमेशा ही प्रयासरत् रहे। पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी की ये पंक्तियां इस बात का प्रमाण है –

बनने चली विश्व भाषा जो, अपने घर में दासी
सिंहासन पर अंग्रेजी है, लिखकर दुनिया हासी
अफसर सारे अंग्रेजमयी, अवधी या मद्रासी
कह कैदी कविराय, विश्व की चिंता छोड़ो

अटल जी ने इन पंक्तियों के माध्यम से हिन्दी की गिरती प्रासंगिकता को बचाने का आह्वान कर रहे हैं कि हमें सबसे पहले अपने देश में हिन्दी को एक सराहनीय दर्जा दें तभी विश्व में भी इसकी एक पहचान बन पाएगी। अपने इन्हीं प्रयासों के कारण उन्हें एक हिन्दी भाषीय प्रधानमंत्री के रुप में पहचान मिली। और भी बहुत से लोग है जो हिन्दी भाषा के विकास में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं और आज के युग में भी उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं।

भूंमडलीकरण के इस युग में हिन्दी तेजी से विश्व की भाषा बनाती जा रही है लेकिन इन सबके बावजूद हिन्दी के सामने कुछ व्यवहारिक संकट भी व्याप्त है। जिसमें सबसे बड़ा संकट विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों मे हिन्दी के विद्यार्थी की लगातार घटती संख्या है जो एक चिन्ता का विषय है। हिन्दी की प्रसांगिकता आज आधुनिक युग में कम तो नहीं हो रही है लेकिन यह बात पूरी तरह से प्रासंगिक नही है। कि हिन्दी की उपयोगिता इन वजहों से घटी है।

हिन्दी भाषा को विश्व पटल पर जाने का प्रयास बहुत पहले से किया जा रहा है। पूर्ववती तथा वर्तमान सरकार हिन्दी को विश्व भाषा के रुप में एक पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है। इसी के सन्दर्भ में आजादी के बाद से विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। जिससे हिन्दी की प्रासंगिकता कम न हो। विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के 'विदेश मंत्रालय' द्वारा किया जाता है। इसका प्रथम प्रयास 10–12 सितम्बर को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में होगा और इसका विषय होगा– हिंदी जगत : विस्तार और संभावनाएं ।

इस तरह के सम्मेलनों के द्वारा सरकार का हिन्दी के प्रति सकारात्मक भावना को एकदम से नकारा नहीं जा सकता लेकिन यह भी नहीं कह सकते कि हिन्दी को एक विश्व पहचान देने के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास पर्याप्त है। इस भाषा के विकास के लिए अभी और भी प्रयास किए जाने चाहिए ।

इस उदाहरण के द्वारा हिन्दी दिशा में किये गये प्रयासों का पता चलता है तथा हिन्दी के प्रति समर्पित
भावना भी ज्ञात होती है। विश्व में दूसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हिन्दी है और सबसे ज्यादा बोली जा
भाषा चीन की मंदारिन है। जिस तरह से हिन्दी का विकास हो रहा है। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी को विश्व भाषा के
जाना जायेगा।

हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र में स्थापित किये जाने का प्रयास किया जा रहा है लेकिन यह सपना अभी दूर दि
रहा है लेकिन इस क्षेत्र में भारत सरकार प्रयासरत है। अभी संयुक्त राष्ट्र की जो छः अधिकाधिक भाषा इस प्र
अंग्रेजी, रुसी, फ्रांसीसी, चीनी, स्पेनिश और अरबी है और इसमें हिन्दी को भी स्थान दिलाने का प्रयास कर रहे है
तरह से हम 2 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' तथा 21 जून को 'योग दिवस' के रुप में पारित करवाने में सफल
वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी को भी वही स्थान दिला के हिन्दी प्रेमियों का सपना पूरा करेंगे।

भारत में हिन्दी भाषा का प्रयोग हम कई रुपों में करते हैं। जिसमें सबसे प्रमुख है शिक्षा क्योंकि शिक्षा के माध्य
मनुष्य के समग्र जीवन में परिवर्तन होता है और यदि शिक्षा की भाषा हिन्दी हो तो उस ज्ञान को आम जनमानस तक आ
से पहुँचाया जा सकता है। इस विषय में एक महान व्यक्ति के शब्द इस प्रकार है –

> शिक्षा केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान नहीं करती है। वह मनोवेगों का प्रशिक्षण है। इससे हमको
> अनुभूति की प्रणाली और आचरण के अभ्यास की सीख मिलनी चाहिए।

डॉ० राधाकृष्णन

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है उस व्यक्ति का व्यक्तित्व, आचरण आदि में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है इसी
शिक्षा की भाषा हमेशा सहज, सरल और समझने योग्य होनी चाहिए और भारत जैसे देश में हिन्दी भाषा को इस रुप में
जा सकता है।

इसलिए हम इस बात को पूरी तरह से नकार नहीं सकते कि आज वर्तमान समय में हिन्दी की वह प्रासंगिकता न
रही जो होनी चाहिए लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि हिन्दी की वहीं प्रासंगिकता बनी हुई है जो
चाहिए। किसी भी भाषा, विषय वस्तु की प्रासंगिकता पूरी तरह से समाप्त तो नहीं हो सकती है। आंशिक रुप से उ
अस्तित्व में कुछ कमी आ सकती है।

"झूठी बुलंदियों का धुआँ पार करके आ।
कद नापना है मेरा तो छत से उतर के आ।।
सोने का रथ फ़कीर के घर तक न आयेगा,
कुछ मांगना है हमसे तो पैदल उतर के आ।"

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से वर्तमान समय में हिन्दी की प्रासंगिकता को समझा जा सकता है।

जर्जर बेड़ियाँ

पूजा ति
बी.एड. प्र

पंडित गंगाराम पाण्डेय पुलिस महकमे में सिपाही थे। स्वभाव से थोड़ा डरपोक थे सो रिश्वत खोरी उनके बस के
नहीं थी। सरकार जो वेतन देती थी उसी में परिवार का भरण पोषण होता था। मियां बीवी और तीन बेटियों समेत परिवार
कुल पाँच लोग थे।

बड़ी बेटी संज्ञा ग्रेजुएशन के फाइनल ईयर में, मंझली वीणा बारहवीं में और छोटी मनीषा नौवीं कक्षा में पढ़ रही थी।
पाण्डेय जी यूँ तो समाज में जहाँ उठते बैठते, वहाँ बेटा बेटी में फर्क न करने की सौ–सौ नसीहतें देते, बेटियों की उपलब्धि
गिनाते न थकते लेकिन अंदर ही अंदर कुढ़ते रहते थे।

एक के बाद एक तीन बेटियाँ हुई थीं। पुत्र प्राप्ति की लालसा मे पाण्डेय जी चौथी बार पिता बनने को तैयार हुए।
इस बार स्त्री के गर्भ ठहरते ही सतर्क हो गये।

यूँ तो लिंग की जाँच करवाना गैर कानूनी था लेकिन फिर भी घूस पात देकर जाँच करवायी गयी।

इस बार भी लडकी ही ठहरी। गर्भपात कराने का निश्चय किया। पत्नी मालती देवी भीरु प्रकृति की सीधी–साधी
महिला थी।पति और सास को तीन बार निराश करने का अपराध–बोध उनके ममत्व पर विजय पा गया। हालांकि उनके
चाहने न चाहने का प्रश्न ही कहाँ उठ सकता था। फिर भी यदि वो गर्भ गिराना नहीं चाहती तो भी उन्हें उसके लिए तैयार
होना था।

भारतीय नारी के त्याग और बलिदान की कुटिल भाषाएँ गढ़ने वालो ने शायद कभी इन बलिदानों की
औचित्य–अनौचित्य का विमर्श नहीं किया। क्योंकि औचित्य–अनौचित्य का प्रश्न विद्रोह को जन्म देता है। खैर, गर्भपात
करा दिया गया। सप्ताह भर घर मे मरघट का सन्नाटा छाया रहा। माँ तीनों बेटियों समेत घर के पिछले कमरे मे पडी रहती।
पाण्डेय जी सुबह–सुबह ही नौकरी पर निकल जाते और देर रात घर आते, खाना खाते और सो जाते। कोई हँस बोल देता
तो ऐसा डपट देते कि सभी को हफ्तों तक साँप सूँघ जाता।

पाण्डेय जी जहाँ समाज में अपनी छवि को लेकर बहुत सतर्क रहते थे वहीं घर के भीतर उनका व्यवहार बहुत
निर्दयी था। ज्यों–ज्यों बेटियाँ बड़ी होती जाती त्यों–त्यों उनको अपने पिता से घृणा होती जाती। घर के इस वातावरण में
उनका दम घुटता था इसलिए तीनों को कॉलेज से बहुत लगाव था। सखियों–सहेलियों के बीच रहकर वो अपने सारे दुःख
चिंताएं भूल जातीं।

किन्तु इन सब मे एक प्राणी को कहीं भी ठिकाना न था वो थी मालती देवी। हँसना बोलना तो कब का भूल चुकी
थी। दिन का अधिकतर समय वो पूजा–पाठ दान–दक्षिणा मे बिताया करती थी। फिर भी एक गहन अवसाद उनके मन को
हर वक्त घेरे रहता था और वे उसे में दिन ब दिन घुलती हुई अपने दिन काट रही थी।

सौभाग्य पाण्डेय जी की पदोन्नति का दिन लाया सभी उत्साहित थे। सालों बाद ऐसा लगा जैसे अब सब कुछ बदल
जायेगा। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उलटा धन और पद ने उन्हें और भी संकीर्ण ह्रदय का कर दिया।

बेटियाँ अब ब्याहने लायक हो चुकी थीं। पंडित जी अब तीनों को किसी भी तरह कहीं भी निपटा कर अपने कर्तव्यों
की इति श्री कर लेना चाहते थे। बड़ी बेटी संज्ञा का विवाह हो गया। एक पाण्डेय जी को छोडकर कोई भी इस विवाह से
खुश नहीं था संज्ञा भी नहीं।

समय बीतता गया वीणा भी ग्रेजुएशन की आखिरी साल में प्रवेश कर गयी। उसके विवाह की बाते भी शुरु हो गयी
थीं। लेकिन मन ही मन उसने ठान लिया था कि वो न केवल अपनी माँ और छोटी बहन के साथ उसके पिता का व्यवहार
सहन नहीं करेगी।

वार्षिक परीक्षा के बाद उसके कॉलेज में कैम्पस में कई कंपनियाँ प्लेसमेंट के लिए छात्रों के चयन के लिए आयी।
वीणा ने दिन–रात एक करके कई सारी कंपनियों की प्रवेश परीक्षाओं में सफलता हासिल की। साक्षात्कार की तिथियाँ
निर्धारित हो गयीं।

एक दिन जब पंडित जी घर पर थे उन्हें एक फोन आया।

– "गंगाराम पाण्डेय जी बोल रहे हैं ?
– जी हाँ "
– "सर वीणा आप की बेटी है? उनका इंटरव्यू कल 9 बजे" दीनानाथ डिग्री कॉलेज में प्रस्तावित है। कृपया उन्हें
सूचित कर दीजिएगा। फोन रखकर पंडित जी थोड़ी देर चुप रहे।

फिर कमरे में गये जहाँ वीणा सो रही थी।
"कल तेरा इंटरव्यू है कोई सुबह जल्दी उठ जाना " वीणा ने सर हिला दिया –
सुबह तड़के दोनों पिता पुत्री दीनानाथ डिग्री कॉलेज पहुँचे। वीणा का दूसरा ही नंबर था।

वो इटरव्यू के लिए अंदर चली गयी तो पंडित जी कॉलेज का चक्कर लगाने लगे।

आधे घण्टे बाद वीणा बाहर आयी। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास और प्रसन्नता झलक रही थी। पर पंडि
उसके चेहरे पर अपने लिए भय देखा

तभी चपरासी ने आवाज लगायी।

"मिस वीणा पाण्डेय"

पंडित जी के हृदय में स्पंदन अचानक बढ़ गया। बोले। "हाँ जी बताइए"

चपरासी!! आप इनके साथ है ? आप भी आ जाइये!!

पंडित जी वीणा को लेकर भीतर गये।

एक भव्य ऑडिटोरियम में सामने बहुत से गणमान्य लोग बैठे हुए थे। ये सभी इंटरव्यू पैनल के लो
ऑडिटोरियम के भीतर थोड़ी ही देर में तिल रखने की भी जगह न बची थी। धीरे–धीरे सब शांत हुआ।

माइक पर एक वृद्ध व्यक्ति ने बोलना शुरु किया। वीणा ने बताया कि वो इस कम्पनी के सीइओ मिस्टर तनेजा
मिस्टर तनेजा बोल रहे थे !

"देवियों और सज्जनों! स्वागत !

मेरा सौभाग्य है कि सीइओ होने के नाते मैने बहुत से इंटरव्यू किये हैं और बहुत सी प्रतिभाओं से रुबरु हो
अवसर मिला। हमारा सामाजिक ताना बाना ही कुछ ऐसा है कि उन साक्षात्कारों में मुझे स्त्रियों को अपने पैनल के स
देखने का अवसर कम ही दिखे। हमारी रुढ़िवादी परम्पराएँ ये मानती आई हैं कि स्त्रियों का कार्य सिर्फ घरेलू कार्यों
सीमित है। इस पिछडी मानसिकता ने स्त्री का अवमूल्यन तो किया ही साथ ही साथ उनके साथ बहुत अन्याय भी कि
पर मैं समर्थक हूँ स्वतंत्रता का। समान अधिकारों का, उस मानसिकता का जिसमें स्त्री पुरुष से कम नहीं आंकी जाती।

पंडित जी की असहजता बढ़ रही थी। मिस्टर तनेजा के शब्द उन्हें ऐसे लग रहे थे मानो कोई कानों में शीशा पि
कर उड़ेल रहा हो।

वीणा से नजर मिलाने की तो हिम्मत ही न थी अब। व्याख्यान जारी था। "और आज में आपको गर्व के साथ
सूचित करना चाहता हूँ कि हमारी एक बेटी ने आज अपनी प्रतिभा से मेरा दिल जीत लिया। अपनी प्रतिभा उसने
पहली बार प्रश्नों के तरकश के सभी तीर जैसे निष्प्रभ कर दिये। इस कंपनी का भविष्य ऐसी ही प्रतिभा के हाथों में सुर
देखना चाहता हूँ"।

"देवियों और सज्जनों आपका कौतुहल समाप्त करने ही जा रहा हूँ"

अब मैं मंच पर बुलाना चाहता हूँ उस बेटी को जिसका पिता होना एक गर्व की बात है।

"देवियों और सज्जनों, करतल ध्वनि से स्वागत करें, "मिस वीणा पाण्डेय का" जो इस कंपनी की जन
मैनेजर नियुक्त की जाती है।

वीणा के हृदय ने जैसे धड़कना बन्द कर दिया। ऐसा लगा मानो जहाँ थी वहीं जम गयी।

तभी कान में किसी की वात्सल्य से भरी आवाज आयी। ये गंगाराम पाण्डेय थे।

"वीणा बेटी ! तुम्हें पुकारा गया है जाओ –

वीणा उठी और पिता का हाथ पकड़कर उन्हें भी अपने साथ मंच पर ले गयी। सारे शहर के सामने अपनी बेटी के कार
मिला सम्मान पंडित जी को गदगद किये जाता था।

मंच पर पहुँच कर वीणा मिस्टर तनेजा से नियुक्ति पत्र लिया और उसके पैर छुए तो उन्होंने उसे अपने सीने से लग
लिया। हर कोई देख सकता था पंडित जी की आँखें सजल थीं। वर्षों से छाये बादल एक तेज आँधी के झोंके से उड़ गये
सूर्य अपनी रश्मियों से चारों दिशाओं को प्रकाशित कर रहा था।

सदियों पुरानी बेड़ियों की एक कड़ी टूट चुकी थी।

"शिक्षा क्या है??"

श्रीमती [illegible]
[illegible]

आज शिक्षा जगत में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक प्रश्न यह है कि शिक्षा क्या है तथा इसमें क्या क्या शामिल
है? शिक्षित होने का पूरा तात्पर्य क्या है? कभी कभी यह सवाल हम स्वयं से पूछते हैं कि हम क्यो पढ लिख रहे है। जिस
तरह की शिक्षा सबको दी जा रही है उसका क्या अर्थ है? अभी भी हमारी समझ में शिक्षा का अर्थ है स्कूल जाना, पढना
लिखना सीखना, परीक्षाएं पास करना और कुछ खेल आदि खेलना। विद्यालयी शिक्षा पूरी करने के बाद कॉलेज जाने लगते
हैं, जहाँ कुछ महीनों तक परिश्रम करते हैं, परीक्षाएं पास करते हैं और कोई नौकरी पा जाते हैं, फिर जो कुछ सीखा होता है
उसे भी भूल जो हैं। क्या इसे ही हम शिक्षा नहीं समझते? क्या हम सब यही नहीं कर रहे हैं?

लड़कियाँ बी.ए. या एम.ए. जैसी कुछ परीक्षाएं पास कर लेती हैं, विवाह कर लेती हैं, खाना पकाती हैं, बच्चों को जन्म
देती हैं उन्हें रटे रटाये तरीकों से पालती हैं और इस तरह से अनेक वर्षों में पाई जाने वाली शिक्षा पूर्णतः व्यर्थ हो जाती है।
हाँ, ये जरूर है कि वो अंग्रेजी बोलना जान जाती हैं, थोडी बहुत चतुर, सलीकेदार, सुव्यवस्थित हो जाती हैं और अधिक
साफ सुथरी रहने लगती हैं, बस इतना ही होता है। इसी प्रकार लड़के कोई तकनीकी काम पा जाते हैं, क्लर्क बन जाते हैं या
फिर किसी तरह की शासकीय सेवा में लग जाते हैं, इसके साथ ही सब समाप्त हो जाता है। इस प्रकार हम जिसे जीना
चाहते कहते हैं वह नौकरी पा लेने, बच्चे पैदा करने, परिवार का पालन पोषण करने, समाचार–पत्रों एव पत्रिकाओं को पढने,
बढ चढ कर दिखावा कर सकने और चतुराई पूर्वक वाद–विवाद कर सकने तक ही सीमित होता है। क्या शिक्षा का कुल
अभिप्राय यही हैं?

सही मायनों में शिक्षा का क्षेत्र इससे अधिक व्यापक है। इसका काम इतना ही नहीं है कि दुनिया मे यह आपको कोई
नौकरी दिलाने में सहायक हो, बल्कि यह भी है कि इस दुनिया का सामना करने में आपकी मदद करे। इस संसार में चारों
तरफ प्रतिस्पर्धा है, प्रत्येक व्यक्ति केवल अपना ही लाभ देख रहा है, अपने लिए सबसे बढिया चीज हथियाने के लिए
संघर्षरत है और उसे पाने के लिए वह दूसरों को धकेलने में भी पीछे नहीं रहता। वह न केवल अपने भीतर चलने वाले
राजनीतिक संघर्ष और धार्मिक संघर्षों को भी झेलता है। अतः यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का ठीक ढंग से
सामना करने के लिए हमको शिक्षित किया जाये। यही शिक्षा वास्तविक है, न कि मात्र कुछ परीक्षाएं पास कर लेना या कुछ
गैर जरूरी विषयों का जिनमें हमारी रूचि बिल्कुल नहीं है, उनका अध्ययन कर लेना। कहने का तात्पर्य यह है कि सम्यक
शिक्षा वही है जो विद्यार्थी को इस जीवन का सामना करने में मदद करे, ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार न मान
ले, उसके बोझ से दब न जाए, जैसा कि हममें से अधिकांश लोगों के साथ होता है। शिक्षा ऐसी हो जो हर तरह के बदलाव
को समझने के योग्य बनाए, बदलाव से पैदा होने वाले दबाव से बाहर निकाल सके तथा आगे बढकर कुछ नया करने में
सक्षम बना सके, केवल परंपरागत ढंग से ही विचार करना न सिखाये। हममें से अधिकांश के लिए शिक्षा का अर्थ यह
सीखना है कि हम "क्या" सोचें। हमारा समाज, हमारे माता–पिता, हमारे रिश्तेदार, हमारी किताबें, हमारे शिक्षक, ये सभी
बताते हैं कि हमको 'क्या' सोचना चाहिए। "क्या सोचना चाहिए" वाली यांत्रिक प्रणाली को हम शिक्षा कहते हैं और ऐसी
शिक्षा हमको केवल यंत्रवत, संवेदनशून्य, मतिमंद असृजनशील बना देती है किन्तु यदि हम यह जानते हैं कि "कैसे सोचना
चाहिए" तब हम यांत्रिक परम्परावादी नहीं होंगे। बल्कि जीवित मानव होंगे।

शिक्षा सिर्फ 21–22 साल की उम्र तक नहीं चलती बल्कि यह तो जीवन पर्यन्त जारी रहती है। जीवन किसी नदी सा
होता है, यह कभी स्थिर नहीं होता, सदैव गतिशील रहता है। सदैव जीवन्त और समृद्ध होता है। जब हम समझते हैं कि
हमने नदी के एक हिस्से को समझ लिया है और उस हिस्से को कसकर पकड़कर रखते हैं तो वह पानी सड जाता है क्योंकि
नदी तो प्रवाह में रहती है। नदी की सारी गतिविधियों को, उन सारी चीजों को जो उस पार हो रहीं हैं ध्यानपूर्वक देखना,
समझना, उनसे सीधे संपर्क में होना यही जीवन है और उसके लिए हम सभी को तैयार होना है। सच्चे अर्थ मे विद्या विमुक्ति

की ओर ले जाती है। अर्थात् विद्या वही जो विमुक्ति दिलवाए–

"विद्या स विमुच्यते"

"Knowledge is liberation"

एक शिक्षक के रूप में हमारा यह भी दायित्व है कि छात्र छात्राओं को चिन्तन मनन के लिए प्रेरित करें।
जीवन की सारी समस्याओं पर विचार करना सिखाएं, उन पर चर्चा करवाएं, समाधान की छानबीन करना सिखाएं।
केवल दूसरों की बनाई लकीरों पर न चलें। बल्कि एक नया रास्ता जो उनके अनुकूल हो उसका निर्माण करना भी
हमें केवल उनको इतनी मदद नहीं देनी कि वे बस छोटी मोटी परीक्षाएं पास कर लें, बल्कि इसमें भी सहयोग करना
कार्य है कि जब वे इस स्थान को छोड़कर जाएं तो जीवन का सामना कर सकें, वे प्रबुद्ध मानव बन सकें।

गुरू-शिष्य सम्बन्ध

उदय प्रकाश पा...
सहायक प्रोफेसर- ...

प्राचीन भारतीय मनीषियों ने शिक्षा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हुए इसे आध्यात्मिक तथा भौतिक उत्थान
एक महत्वपूर्ण कारक माना है। प्राचीनकाल में शिक्षा व्यवस्था के शैशव काल से ही यह ध्वनित है बगैर विद्या और ज्ञान
व्यक्ति ऋषि ऋण से मुक्त नहीं हो सकता था। वैदिक काल में शिक्षा को मोक्ष प्रदायिनी माना गया। ('सा विद्या
विमुक्तये')। शिक्षा धार्मिकता से ओत प्रोत नैतिक चरित्र का विकास करने वाली, विनय प्रदान करने वाली (विद्या ददा
विनयं), जीवन तथा संसार की क्षण भंगुरता का अनुमान तथा भौतिक सुखों की साधन हीनता के भाव ने प्राचीन भारत
शिक्षा व्यवस्था को आधार रूप दिया है, और सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था इन्हीं सिद्धान्तों पर विकसित हुई।

सर्वप्रथम गुरू–शिष्य सम्बन्धों का उल्लेख वैदिक काल से मिलता है। वैदिक कालीन गुरू–शिष्य संबंध जित
प्रगाढ़ रहे थी उतनी कभी भी नहीं रही। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार गुरू–शिष्य के मध्य जो निकटता
संबंध था, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। गुरू–शिष्य को अपना पुत्र समझता था तथा शिष्य भी गुरू को पिता की त
मानता एवं सम्मान देता अर्थात् गुरू–शिष्य संबंध पिता पुत्रवत था। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में गुरू (शिक्षक) अ
विद्वान, स्वाध्यायी, धर्मपरायणता के साथ–साथ अति संयमी तथा चरित्रवान होते थे। उन्हें देवता के रूप में प्रतिष्ठित ही न
किया गया बल्कि उससे श्रेष्ठ स्थान भी दिया गया। ऐसा कहा गया है कि–

गुरूः ब्रह्मा, गुरूर्विष्णुः गुरूदेव महेश्वरः।
गुरू साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरू को विद्यावसु (जिसकी बुद्धि ही धन है) और विश्ववेदा (सर्वरा) आदि विशेषणों से संबोधित किया गया है।
गुरूकुलों के पूर्ण स्वामी होते थे। धर्म, दर्शन एवं आध्यात्मिकता के ज्ञान से परिपूर्ण, ज्ञान पिपासुओं को हमेशा शान्त कर
की सामर्थ्यता के साथ गुरू अपने शिष्यों को निरन्तर जिज्ञासु बनाने में प्रयत्नशील रहे। गुरू, ज्ञान तथा आचार की दृष्टि
वह इतना पूर्ण होता था कि शिष्य उसे ज्ञान के साक्षात रूप में स्वीकार करते थे। शिष्य, गुरू का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप
अनुकरण करते थे। अतः गुरू की भाषा, रहन–सहन, आचरण, व्यवहार आदि सभी बातें शिष्यों के लिए अनुकरणीय थी।

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में शिष्य को ज्ञान पिपासु के रूप में कल्पना की गयी है, जिनमें ज्ञान प्राप्त करने की
उत्कृष्ट अभिलाषा हो तथा जो ज्ञान पिपासा की तृप्ति के लिए किसी योग्य गुरू के सान्निध्य प्राप्त करने का इच्छुक हो। गुरु
के द्वारा शिष्य को उपनयन संस्कार के द्वारा स्वीकार किया जाता था। वैदिक काल में उपनयन संस्कार के पश्चात ही शिष्य
गुरू के परिवार के सदस्य के रूप में गुरू आश्रम या गुरूकुल में निवास करता था। जहाँ तक संस्कार की बात है तो इसका
शाब्दिक अर्थ परिस्कार, शुद्धता या पवित्रता होता है। षोडश संस्कारों में मुख्यतः चार संस्कार वैदिक शिक्षा से सम्बन्धित थे।
पहला विद्यारम्भ, दूसरा उपनयन, तीसरा वेदारम्भ और चौथा समावर्तन संस्कार। उनपयन का शाब्दिक अर्थ 'समीप ले

जाना', अब यह प्रश्न बनता है कि किसके समीप ले जाना तो इसका एक ही उत्तर निकलता है–'गुरू के समीप ले जाना'।
उपनयन सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार होता था। इस संस्कार के समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के बालक के लिए क्रमशः आठ,
ग्यारह तथा बारह वर्ष निर्धारित थी। शूद्र वर्ण के बालक का उपनयन संस्कार होता था, ऐसा उल्लेख स्पष्टः नहीं प्राप्त होता
है। इसमें मतभेद है। पूर्णतः वैदिक विधि–विधान से इस संस्कार को सम्पन्न कराने के उपरांत बालक का विशेष वस्त्र धारण
कराया जाता था, कमर में मेखला (कटिबंध) बांधी जाती थी, तथा तीन ऋणों (पितृ, देव, ऋषि, ऋण) का प्रतीक था। इस
प्रकार उपनयन के पश्चात् गुरू के साथ गुरूकुल में रहते हुए अध्ययनरत, निर्धारित नियमों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत
करता था। शिष्य को ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था और संयमित जीवन व्यतीत करते हुए शिक्षा प्राप्त करनी होती थी।
गुरू आश्रम में रहने वले शिष्यों को 'अन्मासी' कहा जाता है। शिष्यों की एक नियमित दिनचर्या होती थी। प्रातःकाल उठना,
नित्यकर्मों से निवृत्त होकर, आश्रम की साफ–सफाई करना, स्नान करना, गुरू की सेवा करना, इत्यादि ऐसे कार्य जिन्हें
शिष्य नियमित रूप से किया करते थे।

शिष्यों को गुरू के आज्ञाओं का पालन करना और अनुशासन में रहना, संयम के सथ अध्ययन करना, सात्विक
आचरण का अनुसरण करना, गुरूकुल के नियमों में बंधे रहना पड़ता था। यदि कभी किसी शिष्य से अनुशासन भंग हो जाता
या किसी प्रकार की अनुशासनहीनता की शिकायत होने पर ऐसे शिष्यों को विशेष प्रकार का दण्ड दिया जाता था जिसे
'उद्दालक व्रत' कहा जाता था। इसमें शिष्य को तीन माह तक अल्पाहार दिया जाता था। इस प्रकार कोई कठोर दण्ड नहीं
दिया जाता था जिससे बालक का अंग–भंग हो। शिष्य को आश्रम से भिक्षाटन के लिए निकलने से पूर्व गुरू की आज्ञा लेना
आवश्यक होता था और अपने गृह नगर से विपरीत दिशा की तरफ ही भिक्षाटन की अनुमति दी जाती थी। भिक्षाटन से
बालक में ऐसे गुणों का विकास होता था जो उसे सभी बालकों के साथ समान व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता था।
आश्रम में उच्च वर्ण एवं अन्य वर्णों के भी बालक रहते थे इसलिए उन्हें ऐसी शिक्षाएं भी दी जाती थीं–

ऊँ सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै।
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषा व है।।

अर्थात् साथ–साथ एक दूसरे की रक्षा करें, साथ–साथ उपभोग करें, एक दूसरे के शौर्य में वृद्धि करें, अध्ययन के
फलस्वरूप तेजस्वी बनें, एक दूसरे से ईर्ष्या न करें।

गुरूकुल में शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् शिष्य जब अपने गृह को प्रस्थान करता था तब समावर्तन संस्कार सम्पन्न
कराया जाता था। समावर्तन संस्कार किसी शुभ दिन को सम्पन्न कराया जाता था। इस दिन शिष्य प्रातः काल से ही एक
कमरे में बंद रहता था। ऐसा सूर्य को ब्रह्मचारी के तेज से अवमानित होने से बचाने के लिए किया जाता था। औषधियुक्त
जल से स्नान के पश्चात् पहले के वस्त्रों का परित्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता था और गुरु से आशीर्वचन एवं उनकी
आज्ञा लेकर स्वगृह को प्रस्थान करता था।

गुरू–शिष्य सम्बन्धों में गुरू–दक्षिणा का अपना विशेष महत्व होता था। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त शिष्य अपनी
सामर्थ्य के अनुसार गुरू को दक्षिणा भी देता था। गुरू–दक्षिणा के सन्दर्भ में महाकाव्य रघुवंश (कालिदास कृत) से यह ज्ञात
होता है कि ऋषि वरतन्तु के शिष्य कौत्स ने जब गुरू–दक्षिणा देना चाहा तो गुरू ने उनकी सेवा को ही पर्याप्त बताया किन्तु
बारम्बार कौत्स के द्वारा गुरू–दक्षिणा के लिए निवेदन से ऋषि वरतन्तु क्रुद्ध हो गये तथा दण्ड स्वरूप कौत्स को चौदह
करोड़ स्वर्ण मुद्राएं देने को कहा। कौत्स इतनी धनराशि देने में असमर्थ थे। अतः उन्होंने राजा रघु की सहायता से गुरू के
ऐसे मांगी गयी गुरू–दक्षिणा को देने में सफल रहे। ऐसे वृत्तान्तों से यह स्पष्ट होता है कि शिष्य के लिए गुरू–दक्षिणा विशेष
महत्व रखता था।

वस्तुतः प्राचीन काल में शिष्यों का ध्येय आधुनिक युग के छात्रों की भाँति उपाधि के पीछे दौड़ना नहीं था। वे ज्ञान के
सच्चे पिपासु थे। अपने अध्ययन को वे जीवन पर्यन्त संजोये रखते थे। उनकी प्रवल अभिलाषा अपने राष्ट्र की सांस्कृतिक
विरासत को सुरक्षित रखने की थी और वही उनके समस्त शैक्षणिक क्रिया कलापों का मूलमंत्र था।

यद्यपि वर्तमान समय में सम्पन्न होने वाला दीक्षान्त समारोह वैदिक कालीन समावर्तन संस्कार के स्वरूप ही है किन्तु
दीक्षान्त में छात्रों से किसी प्रकार की वचनबद्धता का आज प्रमाण नहीं मिलता है और न ही शिक्षक के प्रति वैसे सदभाव देखे

जाते हैं। गुरू–शिष्य परम्परा का उदाहरण हम अवश्य ही देते हैं किन्तु शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य वह निक अपनत्व का अभाव पाया जा रहा है। भौतिकता की अंधी दौड़ में आध्यात्मिकता से अधिक दूर, मूल्य विहीन शिक्षा निर्माण में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन नहीं कर सकते। वस्तुतः हमें आज आवश्यकता है कि बदलते परि भूमण्डलीकरण के युग में शिक्षक–शिक्षार्थी के सम्बन्धों पर गहनता पूर्वक विचार किया जाए। यद्यपि शिक्षक से भी अ जाती है कि वह अपने उत्तरदायित्वों का सही से निवर्हन करते हुए एक स्वस्थ गुरू–शिष्य परम्परा की स्थापना की

भौतिकवादी युग की देन- मानसिक तनाव

डॉ० ...
सहायक प्रोफेसर...

आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी का दर्द है– मानसिक तनाव। किसी भी प्राणी के जीवन को सक्रिय रखने हेतु उचित स्तर एवं उपयुक्त मात्रा का तनाव आवश्यक है परन्तु जब यह तनाव आवश्यकता से कम या अधिक होता है तो एवं शरीर दोनो के लिए हानिकारक होता है अर्थात् तनाव आवश्यकता से अधिक होने पर हमारे मानसिक एवं शारी दोनो स्तर पर विकृति उत्पन्न करने लगता है। विकृति उत्पन्न करने वाले इस आवश्यकता से अधिक तनाव को ही वा मे तनाव कहा जाता है और जिसकी शुरूआत मानसिक तनाव से होती है। तनाव के कारण ही अनेक मानसिक अवसाद, दुर्भिति, भय, हिस्टीरिया, मनोविदालिता आदि उत्पन्न होते हैं वहीं अनेक शारीरिक रोग, हृदयघात, मस्तिष्काघ आदि होना सामान्य बात हो गयी है।

आज के भौतिकवादी युग में हम आवश्यकताओं से अधिक इच्छाओं के पीछे दौड़ रहे हैं। इच्छाएं केवल चेतन करता है अचेतन मन की तो केवल आवश्यकताएं होती हैं। महत्वाकांक्षाएं भी केवल चेतन मन की है। अचेतन मन महत्वाकाक्षाओं की कोई फिक्र नहीं है और जब चेतन मन की ये इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं पूर्ण नहीं हो पाती हैं, तो अचेतन मन मे चली जाती हैं। ये अचेतन में पड़ी दमित इच्छाएं मन को विकृत कर मनोरोग उत्पन्न करने में सहायक हैं। अपनी इन्ही दमित इच्छाओं की पूर्ति हेतु मनुष्य विकृत मानसिकता के साथ कुछ असामान्य व्यवहार करना सीख लेता जो मनोरोग के रूप में सामने आता है।

यदि हमें आनन्दपूर्वक रहना है तो हमें इच्छाओं को छोड़कर आवश्यकताओं पर ध्यान देना होगा, परन्तु हम भौतिकवादी हो गए हैं, हमें दुखी रहने की आदत पड़ गयी है क्योंकि हमने आवश्यकताओं और इच्छाओं के मध्य के अन्त को समाप्त कर दिया है तथा हम इच्छाओं के पीछे दौड़ रहे हैं, ये दौड़ एक अच्छी दौड़ है– भौतिक वाद की दौड़ आवश्यकताएं सीधी सरल होती हैं। आवश्यकताएं स्वाभाविक होती हैं और इच्छाएं अस्वाभाविक होती हैं। इच्छाओं को त्यागने वाला और आवश्यकताओं को समझने वाला ही स्वस्थ मन होता है। इच्छाओं के पीछे दौड़ने वाला मन ही तनाव रहता है।

मानसिक तनाव से शारीरिक रोग केवल उत्पन्न ही नहीं होते हैं बल्कि उनकी जटिलताएं बढ़ जाती है। कई रोग केवल मानसिक तनाव जनित होते हैं और उन पर औषधियाँ प्रभाव नहीं दिखा पाती हैं। तनाव दूर करने हेतु नींद या नशे की गोलियाँ दी जाती है ताकि रोगी विचार शून्य हो जाए क्योंकि तनाव तो विचारों के कारण ही है परन्तु इसके हल ये नहीं बल्कि जिस सोच नें व्यक्ति को तनावग्रस्त किया है उस सोच को, उन कारणों एवं हालतों को सुधारना अति–आवश्यक होता है जिनके कारण वह व्यक्ति तनाव ग्रस्त हुआ है।

व्यक्ति को तनाव मुक्त रहने हेतु तर्कयुक्त सोच से जीवन जीना चाहिए। जीयो और जीने दो के सिद्धान्त का पालन करते हुए तनाव मुक्त एवं खुश रहना चाहिए। फास्ट फूड,तले भुने, डिब्बा बंद रसायन युक्त आहार की अधिकता भी तनाव बढाने के कारणों मे से एक है। संतुलित आहार का सेवन तनाव से मुक्ति दिलाने में सहायक होता है।

परिवर्तन

नीतू नागर
एम.ए. द्वितीय वर्ष हिन्दी

आता है हर दिवस हमें, कुछ कहने को समझाने को,
खो न बैठे होश जोश में, सच्ची राह दिखाने को।
मानवता का पतन हो रहा, यह कड़वी सच्चाई है,
गिरवी जिसके हाथ है ईमां, वो बढ़ती महँगाई है।
अस्मत का बाजार गरम है, ठंडा खून हो गया भाई,
लथपथ पड़ा तड़पता बच्चा, नहीं किसी ने जान बचाई।
एक अपाहिज एक हाथ था उसको आता दिखा सिपाही,
जान बचाने को बच्चे की, अपाहिज ने थी दौड़ लगाई।
लाया पास सिपाही को वो, और बच्चे की दशा दिखाई,
देख सिपाही ने यह बोला, अपना क्षेत्र नहीं है भाई।
गुजरे राही कितने ही पर, नहीं किसी ने उसे उठाया,
बहता खून सड़क पर यारों, नहीं कोई भी दिल दहलाया।
कैसी यह समाज व्यवस्था, नहीं किसी का कोई नाता,
कैसा यह कानून देश का, उपकार भी है घबराता।
करें कामना आज सभी हम, बदलें भारत की यह काया,
पुनरावृत्ति रोक सकें तो, समझें अपना धर्म निभाया।

'ये कैसी जिन्दगी'

रीना
बी.एड. प्रथम वर्ष

ऐ जिन्दगी बता तू चाहती है क्या?
हर वक्त सताती है हर पल रूलाती है,
कभी आँसुओं में तो कभी हँसी में सताती है,
कभी लोगों के बीच में गम दे जाती है
कभी लोगों की बातों से प्रहार करती है।
कभी भोलेपन का फायदा उठाती है जिन्दगी
ऐ जिन्दगी बता तू चाहती है क्या?
कभी इंसान की निगाह में पागल बना देती है
कभी महफिल में अपनों से बेगाना बना देती है
तो कभी गम के सहारे देती है जीने
कभी कदम–कदम पर ठोकर दिलाती है जिन्दगी
कभी जीते ही मार डालती है जिन्दगी।
ऐ जिन्दगी बता तू चाहती है क्या?
कभी थोड़ा सा प्यार, ढेर सारे गम दे जाती है,
कभी नये दोस्त पाकर अपनों को भूल जाती है
कभी शौहरत दौलत के पीछे भागती है।
कभी ऊँच नीच जाति पाति के भेद उठाती है
कभी इंसान से हैवान बनाती है जिन्दगी
ऐ जिन्दगी बता तू चाहती है क्या?

यदि तुम भूले हुए लोगों के लिए द्वार बन्द कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जाएगा।

कोशिश

अंजली मौर्या
बी.एड

मंज़िल ना पा सके तो क्या
चार कदम चलना तो सीखो।
आकाश न छू सको तो क्या
पक्षी की तरह उड़ना तो सीखो
क्या तुम हो उस शिशु से बढ़कर
पहुँचे मंजिल तक घुटने के बल चलकर
क्या तुम हो उस पक्षी से बढ़कर
बनता जिसका नीड़ उजड़–उजड़ कर।
सफल न हो सको तो क्या
भाग लेना तो सीखो।
गा न सको तो कुछ बोलो तो सही
तैर न सको तो पानी में भीगो तो सही।
मोती न पा सको तो क्या
सागर में गहरे उतरना तो सीखो
मंज़िल न पा सको तो क्या
चार कदम चलना तो सीखो।

ये लड़कियाँ

अंजली सि...
बी.एड

हर उम्र में हर किसी को भा जाती हैं लड़कियाँ
ना जाने क्यूं ठुकरायी जाती हैं लड़कियाँ
बहार आ जाती है जहाँ जाती हैं लड़कियाँ
बदले में झूठी निगाहें पाती हैं लड़कियाँ
महफिल घर आँगन को सजाती हैं लड़कियाँ
फिर भी खुद को बेबस पाती हैं लड़कियाँ
सब कुछ खोकर सैर जगत की कराती हैं लड़कियाँ
फिर भी देखो बदनाम कहलाती हैं लड़कियाँ
हर किसी के खानदान को बनाती हैं लड़कियाँ
पैदा होने पर मारी जाती हैं लड़कियाँ
हर किसी के जुर्म को बरदाश्त कर जाती हैं लड़कियाँ
इंसान को धरती पर लाती हैं लड़कियाँ
सब देख कर अनदेखा कर जाती हैं लड़कियाँ
कुर्बान होकर भी सब कुछ भूल जाती हैं लड़कियाँ

'सूखा पत्ता'

कु० पूजा
एम. ए. द्वितीय वर्ष

राह में पडे सूखे पत्ते, बता तू क्यों इतना उदास है?
क्या जिन्दगी की राह से अब तू निराश है?
हालत बता रही है तेरी, तेरी जिन्दगी की कहानी।
डूब चुकी है अब तेरी, जिन्दगी की निशानी।।
यह सुन फड़फड़ाना सूखा पत्ता।
जैसे कहना चाह रहा हो,
था मैं भी तुम सा जवां एक दिन
थी उमंगें भरी मेरी राहें
बहुत खुश था तब मैं अपने वजूद पर
तभी ....
आई एक आंधी, मिटा गई जिन्दगी की कहानी।
तब, टूट गया मेरा वजूद, टूट गया मेरा गुमान।
अब पड़ा हूँ धूल में मिट गया मेरा निशान।
न करना कभी मेरी तरह, तुम भी अपने पर गुमान।
करोगे तो जिन्दगी बन जाएगी तुम्हारी शमशान।
दूसरे के साथ प्यार से रहो क्योंकि
प्यार ही है जिन्दगी की असली पहचान।

"मुझे कदम-कदम पर"

अलका
बी.एस. सी. तृतीय

मुझे कदम–कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाये।
एक पैर रखती हूँ
कि सौ राहें फूटती,
मैं उन सब पर से गुजरना चाहती हूँ,

बहुत अच्छे लगते हैं
औरों के तजुर्बे और अपने सपने ....
सब सच्चे लगते हैं,
अजीब सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहती हूँ,
जाने क्या मिल जाये।

पक्के ज्ञान की एक मात्र पहचान है सिखाने की शक्ति जो इसमें जितना अधिक कुशल है वह उतना ही ज्ञानी है।

अंधा वह नहीं होता जो देख नहीं सकता, अंधा वह भी है जो जानकर भी अपने दोषों पर पर्दा डालने का प्रयत्न करता है
- महात्मा गाँधी

संस्कृत अनुभाग

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

सम्पादिका

डॉ० नीलम शर्मा

छात्रा सम्पादिका

कु० अंजू एम.ए. चतुर्थ स

कु० मंजू एम.ए. प्रथम स

उपनिषत्सु अध्यात्मविद्या

कु. मन्जू नागर
एम.ए. द्वितीय सेमस्टर

अध्यात्मविद्या उपनिषदामात्मा। उपनिषत्सु- "आत्मा" इतिपदेन ब्रह्म एवाभिप्रेतः।

'अयमात्मा ब्रह्म" **(बृहदा॰ 2-5-26)**
इत्युपनिषद्वाक्यमस्योदाहरणभूतम्।
एवमेव-

'एष म आत्मान्तर्हृदये एतद्ब्रह्म"
-छान्दोग्य0 3-14-4।
"अमृतमयः पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मा इदममृतमिदंब्रह्मेद सर्वम्"
- बृहदा0 2-5-2, 25।
इत्यादीन्युपनिषत्प्रमाणानि - पुरुषस्य, आत्मनः, जीवस्य वा ब्रह्मत्वं समर्थयन्ति। उपनिषदन्मते केवलं ब्रह्म एव सत्यम् अन्यत्सर्व जगदादिकम् असत्यम् मिथ्या वा।
जीवोऽपि तत्त्वतो ब्रह्म एवं यथा चोक्तम् -

"ब्रह्मसत्यं जगमिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः"। रमणीयता वेदान्तदार्शनिकानामियमुक्तिरेवौपनिषत्सु व्याख्याता। ब्रह्मतत्त्वं सच्चिदानन्दस्वरूपं निरूपितम्। ब्रह्मणः सच्चिदानन्दस्वरूपताम्-

(क) आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्।
ऐतरेय॰ 1-1-1
(ख) आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्।
तैतिरीय॰ 3-6
(ग) चिन्मात्रोऽहं सदा शिवः।
कैवल्य उप0 28
इत्यद्याः श्रुतयो दृढ समर्थयान्ति। छान्दोग्योपनिषदि ऋषिप्रवरस्तत्रभवान् शाण्डिल्यः ब्रह्म-तत्त्वं निरूपयन् आदौ "एकमेवाद्धितीयम्" -(6-2-2)
अन्ते च - "ऐतदात्मयमिदं सर्वम्" इत्युक्त्वा ब्रह्मणः- अद्वैततां प्रतिपादयामास। ब्रह्मविद्यानिष्णातस्तत्रभवान् महर्षियाज्ञवल्क्यः बृहदारण्यकोपनिषदि आत्मतत्त्वमुपदिशन् अमृतमय वचन व्याजहार-
"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।"
बृहदा0 4-5-6
स्वभावतो जीवब्रह्मणोरभेदः भेदप्रतीतिरज्ञानेन अविद्यया मायया वा जायते। किन्तु याज्ञवल्क्योपदेशानुसारं आत्मनः श्रवणमनननिद्धियासनैरज्ञानं बाधितं भवति। अज्ञाने बाधिते द्वैतभाने विनश्यति साक्षादद्वैतानुभूतिश्च जायते। तदा मुमुक्षोर्जीवने-

तत्त्वमसि-छान्दोग्य0 6-8-7
अहं ब्रह्मास्मि - बृद्धा0 1-4-10
प्रज्ञानं ब्रह्म - ऐतरेय0 5-3
अयमात्मा ब्रह्म - बृहदा 2-5-16

इत्येतानि महावाक्यानि चरितार्थतां यान्ति। अखण्ड ब्रहमणि साक्षात्कृते आत्मनो ब्रहमस्वरूपतां साक्षादनुभवन् देही सक्षचुरचक्षुरिव "सकर्णोऽकर्णइव" सन् जीवन मुक्तावस्थां दधानस्तावदेहे तिष्ठति यावत् प्रारब्धकर्मफल भोग निष्पत्तिः। तदनन्तरं शरीरपाते सति विदेहमुक्तावस्थायां परमकैवल्यमानन्दैकरसमखिल भेद प्रतिभासरहित-मखण्डब्रह्म एवं अवतिष्ठते। तदानीम्-

न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति। बृहदा0 4-4-6
अत्रैव समवलीयन्ते। बृहदा0 3-2-11
"विमुक्तश्च विमुच्यते"

एताः श्रुतय सार्थकतां यान्ति। एतादृशी ब्रह्मनिष्ठता एवं उपनिषदां अध्यात्मविद्यायाः प्रयोजनम्।

दर्शनबीजानि :
उपनिषदः दर्शनानां जन्मभूमयः। विविधानि दर्शनतत्त्वानि तत्र प्राप्यन्ते। तद्यथा -
अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बहीः प्रजाः

सृजमानां सरूपाः।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां
भुक्तभोगामजोऽन्यः।।
श्वेता0 उप0 4–5

अत्र सांख्यप्रतिपादिता प्रकृतिः वेदान्तानुमयता च माया साक्षात्संकेतिता। अत्रोल्लिखिता "अजा" प्रकृतेः मायाया वा अभिधायिका। अजश्च पुरूषस्य ब्रह्मणो वाभिधायकः। एकस्यां श्रुतौ त्रैतवादो रमणीयतयां चित्रितः।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति।।
श्वेता0 उप0 4–5

अत्र वृक्षः प्रकृतिः। तत्र स्थितौ पक्षिणौ च जीवेश्वरौ।

वेदान्तदार्शनिकानां ब्रह्मसिद्धान्तोऽपि सर्वप्रथ...
" सर्व खल्विदं ब्रह्म" छान्दोग्य0 3–14–1
" ब्रह्मविद् ब्रहमैव भवति" – मुण्डक 03–2–...

इत्याद्यासु श्रुतिष्वेव जन्म लेभे। महोदयस्येयमुक्तिर्वस्तुतः सत्या –

"The Upnishadas are the sources ... vedanta Philosophy."

वेदानां चरमलक्ष्यभूतस्य तत्त्वज्ञानस्य प्रति... वेदानामन्तिमभागत्वेन वा उपनिषदः वे... अभिधीयन्ते। एवमेव उपनिषदां वेदान्तसिद्धान्त... तासां कृते प्रयुक्तस्य वेदान्तशब्दस्य सार्थकता... इत्थमुपनिषद्वेदान्त योस्तादात्म्यं स्वतः सिद्धम्।

भाषाविज्ञानम्

(भाषाशास्त्रे भारतीयानां योगदानञ्च)

ज्ञानविज्ञानसंश्लिष्टं विश्वभाषाविभूतिमत्।
ध्वनि–वाक्य–पद–ज्ञानं भाषाविज्ञानमिष्यते।
(कपिलस्य)

भाषाविज्ञानस्य परिचयः – भासयति या सा भाषा। मानवः केन प्रकारेण वक्ति ? तस्योपभाषायाः विकासः केन प्रकारेण भवति ? भाषासुपभाषासु च केन प्रकारेण, केन–केन हेतुना कदा–कदा च भवति परिवर्तनमथवा विकासः? केन प्रकारेण काचनापि भाषा विकसिता सति कस्याश्चन स्वतन्त्रायाः भाषायाः स्वरूपं धत्ते ? एतेषां समेषां विषयाणां विधिवद अध्ययन क्रियते भाषाविज्ञाननामके विषये।

" वर्णनात्मक – ऐतिहासिक – तुलनात्मकान् अध्ययनानां माध्यमेन भाषायाः प्रकृतेः विकासस्योत्पत्तेः संरचनायाश्चाध्य–यनपूर्वकम् एतेषां समेषां विषयाणां सैद्धान्तिकं निर्धारणमेव भाषाविज्ञानम्।" अर्थात् " ...ाषविज्ञानं भाषायाः उत्पत्तेः, तस्याः संरचनायाः, तस्याः ...िकासस्य तस्याः ह्रासस्य च अध्ययनं क्रियते। अनेन ...कारेण भाषाविज्ञानस्य माध्यमेन कस्याश्चन भाषायाः वैज्ञानिकमध्ययनं क्रियते इति निश्चीयते।

वेदा :– विश्ववाङ्मयस्य प्राचीनतमा निधिस्व... वैदिकग्रन्थाः वर्तन्ते। तेषु ग्रन्थेषु भाषाविज्ञासम्... निर्वचनादयः प्राप्यन्ते। यथा–वृत्रं हनति वृत्रहा. (... 3396), अमावस्या मामा वसन्ति सुकृतः (अथर्व. 7/79/... उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकम् इति उच्यते। (उदक ... अन–अर्थ. 3/13/3) यजुर्वेदे सर्वप्रथमं विश्लेषणार्थ ... कृ धातोः प्रयोग उपलभ्यते। यथा–दृष्टवा रूपे व्याकर... सत्यानृते प्रजापतिः। यजु. 19/17)

किमिति चेत् मुखं विना भोजन – व्यापारः नास्ति। भोज... विना शरीर नास्ति। शरीरं विना प्राणरक्षणं न भवति ऋग्वेदे व्याकरणस्य प्रशंसा एवमस्ति–

चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तास... अस्य, त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्या आविवेश।
(ऋग्वेद...

व्याकरणस्य इच्छापूर्तिकारणत्वाद वृषभेति नाम्ना ...

...बोधनमस्ति। अस्य चत्वारि श्रृङ्गाणि भवन्ति। तानि (1) ... (2) आख्यातः (क्रिया) (3) उपसर्गः (4) निपातः। त्रयः ...ाः वर्तमान–भूत–भविष्यत्कालाः एते त्रयः कालाः ...न्ते। द्वे शीर्षे – सुप तिङ्। अस्य सप्त ...ताः–प्रथमादयः सप्तविभक्तियः सन्ति। त्रिधा बद्धः– ...करणरूप वृषभः उरः, कण्ठः, शिरः, इति स्थानेषु बद्ध ...ते। अयं महान् देवो, यः मनुष्येषु प्रविष्टो विद्यते।

...वान पतञ्जलिः व्याकरणस्य प्रयोजनानि यावत् ...यपादयत्। तेषु (1) रक्षा (2) ऊहः, (3) आगमः, (4) लघुः, ...) अंसदेहः, (6) अपभाषणम् (7) दुष्टः शब्द, (8) अविद्वांसः, ...) विभक्तिं कुर्वन्ति (10) नामकरणमिति, (11) यदधीतम् ...2) यस्तु प्रयंक्ते (13 यो वा इमाम् , चत्वारि इत्यादि ...हाभाष्योदाहरणांनि अपि व्याकरणमध्ययनानां प्रयोजनानि ...न्ति।

...न्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
... वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः
...वरतोपराद्यात्।।
(महाभाष्ये)

...दाङ्गानि – वेदानां षडङ्गेषु व्याकरण, शिक्षा, निरूक्त, ...कल्पं, ज्योतिष, छन्दश्चेति।

छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणन्तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।।
तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।
(पाणि. शिक्षा)

ब्राहमणग्रन्था आरण्यकग्रन्थाश्च – ब्राहमणग्रन्थेषु इन्द्र – वरूण–वृत्रादिशब्दानां निर्वचनं तदर्थविवेचनं च प्राप्यते। गोपथब्राह्मणे (1/24) ओंकार शब्दे धातु – प्रत्यय – उपसर्ग – निपात – विभक्ति – इत्यादयः भाषाशास्त्रीयशब्दानां प्रयोगः सर्वप्रथम उपलभ्यते।

1. भाषा तु एका पद्धतिरस्ति। 2) भाषा संकेतात्मिका अस्ति। 3) वाचिक–ध्वनिसंकेत एवं भाषाऽस्ति। 4) भाषायां यादृच्छिकसंकेतस्य समावेशः भवति। 5) उच्चरणावयवेभ्यः निःसृत ध्वन्यात्मक – विचार एवं भाषाऽस्ति। 6) 'व्यक्ता वाचि वर्णा येषां ते इमे व्यक्त वाचः।
(पतञ्जलि)

पाणिनिपूर्वजा वैयाकरणाः–
ब्रह्म संस्कृतव्याकरणस्य आदि ज्ञाता अस्तीति मन्यते। ब्रहमबृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्रायेन्द्रो भारद्वाजाय भारद्वाजः ऋषिभ्यः ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः इति ऋक्तन्त्र 1/4 उद्धतः। अक्षरसमाम्नाय शिक्षावेदांगस्य मौलिकप्रमुख अंग वर्त्तते। एतेन स्पष्टं भवति यत् शिक्षावेदांगस्य आदि प्रवर्तक सृष्टिकर्ता ब्रह्म अस्ति। द्वितीय प्रवक्ता अंगिर पुत्र बृहस्पतिः देवानां पुरोहितः अस्ति। तृतीयप्रवक्ता देवराज इन्द्रः, चतुर्थो भारद्वाजः, पंचमः ऋषयः षष्ठः ब्राह्मणः वर्तन्ते। इन्द्रेण व्याकरणं परिमार्जितं कर्तुम् पदानां प्रकृतिप्रत्ययादीनां विभाजनं कृतम्। पाणिनिपूर्वजानां 85 वैयाकरणानां नामानि उपलभ्यन्ते। पाणिनेः अष्टाध्याय्यां 10 वैयाकरणानां नामानि उपलभ्यन्ते। पाणिनिपरवर्तिषु वैयाकरणेषु वार्तिककारः– कात्यायनः, महाभाष्यकारः– पतञ्जलिः विशेषतः उल्लेखमर्हतः।

भाषाविज्ञानस्य वर्गीकरणम् –

संस्कृतभाषायाः भाषावैज्ञानिकवर्गीकरणं – संस्कृतभाषायाः वैज्ञानिकमध्ययनमेव भाषाविज्ञानमित्यभिधीयते। इदानीं भाषाविज्ञानस्य पञ्चैव प्रकारास्समुपलब्धाः सन्ति। प्रकाराः संक्षेपेण अत्र प्रस्तूयन्ते।

ऐतिहासिकं भाषाविज्ञानम् – अस्मिन् भाषाविज्ञाने भाषायाः विकासस्य अध्ययनं क्रियते। अस्मिन् अध्ययने कस्याश्चनैकस्या एवं भाषायाः परिवर्तितानां रूपाणाम् अध्ययनं क्रियते। यथा–संस्कृत भाषायाः वैदिकलौकिकरूपयोः अध्ययनम्।

प्रायोगिकं भाषाविज्ञानम् – भाषाविज्ञानस्यास्य विभागस्य सम्बन्धः विविधक्षेत्रेषु भाषाविज्ञानस्य प्रयोगेण सह विद्यते। अन्यस्याः भाषायाः शिक्षा केन प्रकारेण प्रदेया ? अनुवादः केन प्रकारेण करणीयः? उच्चारणस्य दोषा केन प्रकारेण प्रदेया ? अनुवादः केन प्रकारेण करणीय ? इत्यादीनां प्रभृतीनां विषयाणां विचारः अत्र क्रियते।

संरचनात्मकं भाषाविज्ञानम् – अस्मिन् भाषाविज्ञाने भाषायां प्रयुक्तानां सर्वेषां तत्त्वानां पारस्परिके विशिष्टे सन्दर्भेऽध्ययनं क्रियते। संरचनात्मकभाषाविज्ञानस्य विषये

पाश्चात्येषु दशोध्वर्त्यधिकं कार्यं भवति।

वर्णनात्मक भाषाविज्ञानम् – भाषाविशेष्य वक्तारः कस्मिन्नश्चित् समयविशेष येन प्रकारेण तस्याः भाषायाः व्याहरणं व्यवहरणं च कुर्वन्ति, तस्यैव विश्लेषणात्मकमध्ययनं वर्णात्मकं च करोति भाषाविज्ञानम्। एतादृशी व्यवहारमात्राश्रिता संस्कृतभाषा अतीतकालविशेष कीदृश्यासीत ? तस्याः कति ध्वनयः आसन् ? पदानां रचना कीदृश्यासीत ? इत्यादिकानां विषयाणामध्ययनं वर्णनात्मकं भाषाविज्ञानं करोति।

तुलनात्मक भाषाविज्ञानम् – अस्मिन् भाषाविज्ञाने एकाधिकानां भाषाणां तुलनात्मकमध्ययनं विभिन्नान् कालानाश्रित्य क्रियते। कदाचित् तासां साम्यवैषम्ययोर्ज्ञानाय चापि तुलनात्मकमध्ययनं क्रियते।

भाषाविज्ञानस्याङ्गानि – भाषाविज्ञानं साहित्यसम्पत्ति-रहिताया अपि भाषायाः वैज्ञानिकमध्ययनं करोति। अस्मिन् अध्ययने ध्वनीनामुच्चारणस्य, अक्षराणां शब्दानां पदानां वाक्यानां च संरचनायाः अध्ययनं क्रियते।

1) ध्वनिविज्ञानम् – सम्पूर्णा भाषा ध्वन्याश्रिता भवति। अत एव भाषाविज्ञानेऽपि ध्वनेरध्ययनस्य महत्वपूर्णं स्थानं भवति। ध्वनिविज्ञाने मानवशरीरस्योच्चारणोपयोगिनाम् अवयवानां परिचयः क्रियते। तानि चाङ्गानि यथा (क) स्वरयन्त्रम् (ख) मुखम् (ग) जिह्वा (घ) ताल्वादिकं च। अत एव ध्वनिविज्ञानस्य इमे विषयाः सन्ति – उच्चारणावयवः ध्वनीनां संख्या, ध्वनीनां वर्गीकरणम् ध्वनिविकाराणां दिशः तासां कारणानि ध्वनिनियमाश्च।

2) पदविज्ञानम् – पदपदार्थ-निरूपयता महर्षिणा पाणिनिनाऽभिहितम् – "सुप्तिङन्तं पदम्"। तथाहि याः वर्णाः पदशब्देनाभिधीयन्ते येषां वर्णसमूहानामन्ते सुप्विभक्तीनामथवा तिङ्विभक्तीनां संयोगो भवति। अस्मिन् पद विज्ञाने नानाविधानां पदानामध्ययनं क्रियते। यथा – संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया-विशेषणादिकानां, धातुरूपाणां, शब्दरूपाणाम्।

3) वाक्यविज्ञानम् – अनेकेषां सार्थकानाम् पदानां समूहः वाक्यमित्यभिधीयते। निरूपयता आचार्येण विश्वनाथेनाभिहितम् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः" इति। पदानां समूह एव वाक्यमित्यभिधीयते, पदसमूहे वैशिष्ट्यत्रयमपेक्षितं भवति योग्यता 2) आकांक्षा 3)

अर्थविज्ञानम् – शब्दार्थयोः शब्दविद् स्वीकुर्वन्ति। सर्वे शब्दाः सार्थकाः प्रकारेणात्मानं विना शरीरं नश्यति, शब्दानामपि सार्थकता अर्थेनैव भवति। शब्दानामर्थनिर्धारणस्य प्रक्रिया अधीयते।

भाषाणां वर्गीकरणम्– सम्प्रति अस्मिन् संसारे सहस्राणि भाषाः प्रचलन्ति। एतासां सर्वासां वर्गीकरणं कृतमस्ति।

आकृतिमूलक वर्गीकरणम् – वर्गीकरणस्य सम्बन्धतत्त्वमस्ति। वर्गीकरणेऽस्मिन् वाक्यानां अध्ययनं क्रियते। एतदनुसारेणात्र वर्गद्वयम् (क) अयोगात्मिकाः भाषाः (ख) योगात्मिकाः योगात्मिक भाषासवर्गं पुनस्त्रिविधाः उपवर्गाः अश्लिष्टाः 2) श्लिष्टाः 3) प्रश्लिष्टाः

पारिवारिक वर्गीकरणम् – भाषायाः वर्गीकरणमतीव वैज्ञानिकमस्ति। वर्गीकरणे रचनातत्त्वम्, अर्थतत्त्वञ्च समानरूपेण आलोच्यते। पदरचना, वाक्यरचना, अर्थः, शब्दसम्पत्तिः, स्थानम् एतेषु षट्सु विषयेषु साम्यं सति भाषायाम् एकः भवति।

डा० देवेन्द्रनाथशर्मा महोदयः वर्गीकरणे अष्टादशभाषापरिवाराणां नामानि निर्दिष्टानि 1) भारोपीय-परिवारः, 2) द्राविड परिवारः बुरुशस्की-परिवारः, 4) काकेशी-परिवारः यूराल-अल्टाई-परिवारः 6) चीनी – परिवारः जापानी-कोरियाई-परिवारः, 8) अत्युत्तरी परिवारः 9) बास्क-परिवारः, 10) सामी-हामी-परिवारः, 11) सूडानी-परिवारः, 12) बान्तु-परिवारः 13) होतेन्तोत बुशमैनी परिवारः 14) मलय- पोलिनेशियाई परिवारः 15) पापुई – परिवारः 16) आस्ट्रेलियन-परिवारः 17) दक्षिण एशियाई परिवारः 18) अमरीकी – परिवारः।

भारोपीय – भाषापरिवारस्य सामान्यपरिचयः – विश्वेऽस्मिन् सर्वेषु भाषापरिवारेषु भारोपीयभाषापरिवारस्य सर्वातिशायी महत्त्वमस्ति। सम्प्रति भाषापरिवारोऽयं एशिया महाद्वीपादारभ्य यूरोप – महाद्वीपपर्यन्तं विस्तीर्णमस्ति। अध्ययन-सौकर्यदृष्ट्या ते वर्गीकृतानि सन्ति।

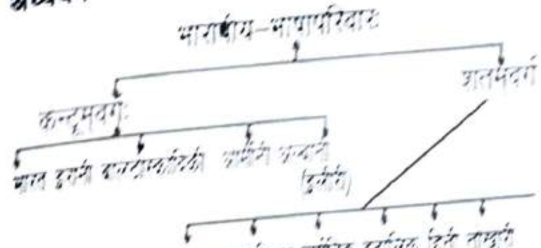

…तु प्रकृतिप्रत्ययात्मता।।
…धातुना सुप्-तिङौ कृच्च तद्धिताः।
…पदमूला च वाक्यता।।
…समासाभिरुचिस्तथा।
… प्रत्ययाधिक्यमेव च।।

ध्वनिवर्गीकरणम्–
स्थान-प्रयत्न-करणैः एव मानव-वाग्यन्त्रस्य निर्मितिः सम्भवति। इमे सर्वे एव सम्मिलितरूपेण ध्वन्युत्पादकाः सन्ति। अत एव एभिः साहाय्येन एव ध्वनेः वर्गीकरणं कर्तुं शक्यते। इमे सर्वे भाषिक-ध्वन्याधारभूताः त्रिवर्गेषु वर्गीकृताः ध्वन्युत्पादकाः अधोलिखिताः (क) स्थानम् कण्ठकदादारभ्य ओष्ठपर्यन्तं स्थानसंज्ञकाः अवयवाः अधोलिखिताः सन्ति–

मुखगत-स्थान-बोधकं - चक्रम्

कण्ठः	तालु	ओष्ठ	मूर्धा	दन्ताः	कण्ठतालु	कण्ठोष्ठम्	दन्तोष्ठम	जिह्वामूलम
अ	इ	उ	ऋ	लृ	ए	ओ	व	≍क
क	च	प	ट	त	ऐ	औ		≍ख
ख	छ	फ	ठ	थ				
ग	ज	ब	ड	द				
घ	झ	भ	ढ	ध				
ङ	ञ	म	ण	न				
ह	य	≍प	र	ल				
विसर्ग	श	≍फ	ष	स				

आभ्यन्तरबाह्यप्रयत्नज्ञानार्थकं चक्रम्-

आभ्यन्तरप्रयत्नाः संज्ञा	स्पृष्टा स्पर्शाः	ईषत्स्पृष्टाः अन्तःस्था	ईषदविवृताः ऊष्माणः	विवृताः संवृताः स्वराः
वर्णाः	क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	अ इ उ ह्रस्वोऽत्र ऋ लृ प्रयोगः ए ओ ऐ औ
बाह्य-प्रयत्नाः	अल्पमहाप्राणाः अल्पमहाप्राण मा.प्रा. विवाराः संवारः संवार श्वासाः नादाः नादाः अघोषाः घोषाः घोषाः	अल्पप्राणाः संवारः नादाः घोषाः	महाप्राणाः विवारः संवारः श्वासाः नाद. अघोषाः घोषाः	उदात्तानुदात्तस्वरितः

ध्वनि-नियमाः

ध्वनिप्रवृत्तिरेव भाषावैज्ञानिकैः 'ध्वनिनियमः' इत्युच्यते। सत्यं तु इदमस्ति यत् सर्वे ध्वनिनियमाः आदौ तु प्रवृत्तिस्वरूपाः एव भवन्ति, किन्तु यदा ते पूर्णतां यान्ति, तदा ध्वनिनियमाः इत्यभिधीयन्ते लोकैः। ध्वनिनियमाः कालसापेक्षाः भवन्ति। भाषा-देश - कालेभ्यः सह सम्बद्धत्वात् इमे ध्वनिनियमाः सीमिताः भवन्ति। अत्र प्रसिद्धाः त्रिविधाः ध्वनिनियमाः संक्षेपेण प्रस्तूयन्ते, ते सन्ति-

1) ग्रिम-नियमः - ग्रिमनियमस्तु ध्वनिनियमस्य सर्वाधिकं प्रसिद्धम् उदाहरणमस्ति। ग्रिममहोदयस्यानुसारेण प्रथमध्वनिपरिवर्तनं मूलभारोपीय ध्वनयः संस्कृतग्रीक-लैटिनभाषासु सुरक्षिताःसन्ति, किन्तु व्यंजनानि तु संस्कृतभाषायामेव विशुद्धरूपेण उपलभ्यन्ते।

एवमेव घोष-महाप्राणध्वनयः घोषाल्पप्राणा अ... परिवर्तनेऽस्मिन् घोषाल्पप्राणध्वनयः अघोषाल्... अभूवन।

2) ग्रासमन-नियमः - द्वौ सन्निकृष्टौ महाप्राणध्वनी (... साकं नहि भवतः, अपितु तयोः द्वयोः वर्णयोः एकः (प्र... अल्पप्राणो भवति। यथा-संस्कृतभाषायां 'धा' ... 'धधाति' इति निष्पन्ने पूर्वधाकारस्य स्थाने द... (अल्पप्राणः) इति जाते 'दधाति' इति निष्पन्नं भवति।

3) वर्नर-नियमः - ग्रिमनियमस्य अपवादपरिमार्जको... वर्नर-नियमः। यदि 'क त प' इत्येषां वर्णानां पूर्ववर्ति... बलाघातो भवति तर्हि ग्रिमनियमानुसारेण 'क त प' इत्ये... स्थानेषु 'ख थ फ' इति परिवर्तनं भवत्येव।

सुभाषितानि

कु० प्रियंका विकल

...मेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
...श्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।

...नीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
...द्भुच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणाम्,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।।

...क्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
...सादयति यो लोकं तं लोको नु प्रसीदति।।

अक्रोधेन जयेत क्रोधमसाधुं साधुना जयेत।
जयेत कदर्य दानेन जयेत् सत्येन चानृतम।।

सत्याधारस्तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमा शिखा।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो यत्नेन वार्यताम्।।

अज्ञः सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः
ज्ञानवदुर्विग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति।।

येषां न विद्या न तपो, न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति।।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः।।

आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

महाकविः बाणभट्टः

बाणभट्ट : संस्कृत साहित्यस्यैकः कविः यस्य जीवनवृतस्य सम्बन्धेऽस्माकं पर्याप्तं ज्ञानमस्ति। तस्य पूर्वजः कुबेरः कर्मनिष्ठः श्रुतान्वितः शास्त्रभिज्ञश्चासीत्। कुबेरस्य चत्वारः पुत्राः अच्युतः ईशानः हरः पाशुपतः आसन्। पशुपतस्य पुत्रोऽर्थपतिरभवत्। अर्थवतेरेकादशसु पुत्रेषु एकेश्चित्रभानुरासीत् अस्य चित्रभानोः सुतो बाणः। शैशवे एवं बाणस्य पितरौ दिवंगतौ।

बाणस्य पार्श्वे प्रचुरा पैतृक् सम्पतिरासीत। संरक्षणा भावाद बाणो देशाटनकारी सञ्जातः। बाणस्य मित्राणि एवंरूपाणि आसन् कतिपये विद्वांसः कतिपय नर्तकाः कतिपये विद्वांसः कतिपये चौराः कतिपये नर्तकाः, कतिपये नटाः, कतिपये ऐन्दजालिकाः। देशाददेशान्तरमटन्बाणो बुद्धिसम्पन्नोऽनुभवी चाभवत्। प्रत्यावर्त्य स विद्याध्ययनमकरोत्।

बाणभट्टः श्रीहर्षवर्धनस्य राजकविरासीत्। हर्षवर्धनस्तं 'वश्यवाणी–कवि चक्रवर्ती' इत्युपाधिना विभूषयति स्म। अतो बाणस्य स्थितिकालः सुगमतयाऽनुमातुं शक्यते। बाणभट्टस्य स्थितिकालः खिष्ट्रादपूर्वस तम् शतकमस्ति। वामनस्य काव्यालंकारसूत्रे उदधृतेन कादम्बर्या गद्येनापि कवेरस्योपयुक्तिः कालः सिध्यति।

हर्षो हर्षः हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय।।

'हर्षचरितम्' बाणस्य प्रथमा गद्यकृतिरस्ति। बाण इमामाख्यायिकामाचष्टे। ऐतिहासिककाव्यरचनाया वास्तविक आरम्भो हर्षचरितेन भवति।

हर्षचरितं साहित्यकशैलीमाश्रित्य लिखितमेकं रोचक वर्णनात्मक गद्यकाव्यमस्ति। काव्यसौन्दर्य वर्णनाशशक्तिचात्राप्रतिमें स्तः। हर्षचरितस्य शैली आलंकारिकी कल्पनाप्रचुरा च वर्तते। तत्कालीनानां सामाजिकव्यवस्थानां, राजनैतिकादर्शानां, सामाजिकव्यवस्थानां च हर्षचरिते सुन्दरं चि[illegible] भासकलिदासप्रवरसेनभट्टारहरिचन्द्रादयरा[illegible] समयनिर्धारणमप्यस्य साहाय्येन भवति। हर्षचरितस्य मुक्तकण्ठेनेत्थं श्लाघामकरोत् बाणभट्टः।

बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती चकास्ति यस्योज्ज्वल[illegible]
एकातपत्रं भुवि पुष्पभूतिवषाश्रयं हर्षचरित्रमेव।।

युक्तं कादम्बरीं श्रुत्वा कवयोमौनमाश्रिताः।
बाणध्वनावनध्यायो भवतीतिस्मृतिपर्यंतः।।

कीर्तिकौमुदी

कादम्बरी संस्कृतसाहित्यस्य सर्वोत्कृष्ट उपन्या[illegible] तस्याः समस्ता तथा कौतुहलेनापूरिता [illegible] पाठकानामुत्कण्ठोत्तरोत्तरं वर्धते। नायिकयाः [illegible] उल्लेखो मध्यस्थले कृतः कविना। महाश्वेतायाः प्र[illegible] मूलकथाया उपोदघातत्वेन निबद्धा। कथामुखे [illegible] राज सभायामद्भुतेन तेन [illegible] सार्धमायान्त्याश्चाण्डालकन्यायाः प्रवेश ईहगुह्यो [illegible] बलाद् रहस्यभेदायोत्कण्ठते। उपसंहारे चेदं रहस्यं [illegible] मूलकथाया उपकथायाश्च समन्वयः कवेर्वस्तुविन्यास[illegible] प्रकटयति।

अस्मिन्नुद्धरणे कविर्युगपन्नायिकानायकयोः [illegible] दर्शनजन्यस्य रागोद्बोधस्य चित्रणमक[illegible] महाश्वेतापुण्डरीकयोः प्रथममिलनस्य चित्रणमप्यति[illegible] भव्यं चास्ति।

'चन्द्रापीडाऽनुकूल सकलगुणधरो नायकोऽस्मिन्नुदात्त[illegible]
नेत्री कन्याऽन्यदीया मृदुललिततनुर्मुग्धकादम्बरी च।
पाञ्चाली नाम रीतिविलसति बहुला विप्रलम्भो र[illegible]
माधुर्याख्यो गुणो वा कविमुकुटमणेः काव्ययोरन्त्यमेतत्[illegible]

विप्रलम्भश्रङ्गाररस्योदाहरणे महाश्वेताविलापः कादम्बरीविरहवर्णनं च स्तः। नारीसौन्दर्यं वर्णनेऽपि बाणः खलु पटुः। चाण्डालकन्याविलासवतीवारविलासिनीप्रभृतीनां भव्यं चित्रणमस्य निदर्शनं वर्तते। बाणभट्टः कदाचित्सुखसमृद्धिसमन्वितजीवनस्य मार्मिकाभिव्यंजनायां निरतो खलु। वस्तुतस्तु

कुबेरनुभवो विशालो विविधो यथार्थश्चास्ति।
कुबेरनुभवो विशालो विविधो यथार्थश्चास्ति, बाणभटटस्य प्रकृति वर्णनं विशदं, सजीवं, संश्लिष्टं चास्ति, क्वचिद् भीषणप्राकृतिकदृश्येषु कवेश्चेतो रमते, क्वचिदसौ प्रकृतेः रम्यरूपाण्य–प्यङ्कयति। एतेषां प्राकृतिकदृश्यानां स्वरूपस्य हृदयऽङ्कनाय स बहुविधा–नामलंकाराणां पुरस्कृत्य स वर्ण्यविषयस्य मनोहारिणीमभिव्यंजनामकरोत्।

श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषयेकेचिद्रसे चापरेऽ–
लङ्कारे कतिचित्सदर्थविषये चान्ये कथावर्णने।
आः सर्वत्र गभीरधीरकविता–विन्ध्याटवीचातुरी–
संचारीकविकुम्भिकुम्भभिदुरो बाणस्तु पंचाननः।।
चन्द्रदेव

स्थने प्रयुक्ता अंलकारा अपूर्वा शोभामावहान्ति। उपमोत्प्रेक्षा–श्लेषविरोधभास प्रभृतीनामलंकाराणां व्यवहारो भावोद्र कार्य, संश्लिष्टार्थ प्रभावोत्पादकार्थ च कृतः कविना। परिसंख्याऽलंकारस्य तु बाणभट्टः सम्राट खलु। नेहान्येन केनचित्कविना शिष्टपरिसंख्या एतादृशाश्च– मत्कारपूर्णः प्रयोगः कृतः। हर्षचरिते बाणेन आदर्शगद्यस्य ये गुणा निरूपितास्तेऽस्य गद्ये पूर्णरूपेण विद्यन्ते–

नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषः स्पष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम्।।

अर्थस्य नवीनता, स्वभावोक्तेः नागरिकता, श्लेषस्य स्पष्टता, रसस्य स्फुटता, अक्षरस्य च विकटबन्धता युगपत्तस्य गद्यकाव्यस्य शोभां प्रकटयन्ति। श्लेषप्रयोगेऽपि कविर्नितान्तः सफलः खलु, निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो सहास्त्रजश्चम्पककुड्मलौरिव, इत्युक्तिः कादम्बरीमुद्दिश्यैव कथिता तेनैव। रसनोपमोया इदमुदाहरण कीदृङ् मनोरममस्ति–

"क्रमेण च कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नव–पल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन नवयोवनेन पदम्।"

बाणभट्टशैली गद्यकवीनां कृते आदर्शभूताऽस्ति। अस्य लेखन शैली विषयवर्णनस्य नितान्तमनुरूपा खलु। चित्रणस्य सजीवतां प्रभावशालितां चौत्पादयितुं कविः समासबहुलामोजगुणमण्डितां च शैलीं स्थाने स्थानेऽवश्यमाश्रयते। परमन्यत्रादीर्घवाक्यानि प्रयुज्य स स्वशैली सशक्तां मार्मिका चाकरोत्। कपिञ्जलो ब्रह्मचारी मदनव्यथा संतप्त पुण्डरीकं मर्त्सयति–

"सखे पुण्डरीक, नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः। धैर्य–घना हि साधवः। किं यः कश्चित्प्राकृत इव विकलीभवन्त मात्ममान न रूणत्सिक्तव ते तद् धर्यम्। क्वासौ इन्द्रियजयः।

तत्त्वतो बाणस्य गद्यशैल्यां चादभु तम् सामञ्जस्यं विद्यते। राजशेखरस्यं मते बाणभट्टस्य शैली पाञ्चाली खलु–

शब्दार्थयोः समोगुम्फः पांचालीरीतिरिष्यते।
शिलाभट्टारिकावाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।

बाणभट्टस्य वर्णने स्निग्धता, रूचिरतां, गोचरी भवन्ति।

'कथितपदता' तु गवेष्यमाणाऽपि न क्वचित्प्रत्यक्षीभवति। नवपद विन्यासो, नूतनाऽर्थाभिव्यक्ति, मंजूला भावभंगी च पदे पदे पाठकानां चित्तमार्जयन्ति

इमे एव सन्ति ते गुणा यैराकृष्टो धर्मदास आह–

रूचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरूणी ? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।।

काव्येषु नाटकं रम्यम्

प्रस्तावना – [illegible] काव्यमिति [illegible] दृश्यश्रव्यभेदेन द्विविधं भवति [illegible] काव्यं [illegible] नाटकं कथ्यते।

नाट्यम् :– अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्।
काव्ये निबद्धः धीरोदात्त –
धीरोद्धत–धीरललित–धीरप्रशान्तानां नायकानाम्–
अवस्थानुकारः चतुर्विधाभिनयनाट्य कौशलेन अभिनेतु नटस्य तादात्म्यापत्तिरेव नाट्यमिति।
अभिनेतुं योग्यमभिनेयमिति [illegible] नटादिभिर् निर्मीयमाण नायकादीनाम् [illegible]मभिनयमुच्यते।
एतदभिनयमेव नटे रामादिनायकानां स्वरूपारोपणात् रूपकमिति अभिधीयते। तथा चोक्तं साहित्यदर्पणे तद्–रूपारोपात्तु रूपकमिति–यथा–मुखाकर चरणेषु कमलस्यारोपत्वात–रूपकाऽलंकारो भवति तथैव नायकादीनां स्वरूपारोपात– रूपकमित्युच्यते।
अस्याभिनयस्यापि आङ्गिकवाचिकाहार्य सात्त्विकभेदेन चत्वारो भेदाः भवन्ति। तथा चाह। दशरूपके – "भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः स चतुर्विधः।

आङ्गिकोवाचिकश्चैवमाहार्यः सात्त्विकस्तथा"।
नाट्यशास्त्रेऽपि– "त्रिविधस्त्वाङ्गिको ज्ञेयः–शारीरो मुखजस्तथा।
तथा चेष्टाकृतश्चैव शाखाङ्गोपाङ्गसंयुतः"
इत्यनेनाङ्गिकस्याभिनयस्य त्रयोभेदाः भवन्ति।
वाचा निष्पन्नोऽभिनयः वाचिकः [illegible]
[illegible] निष्पाद्य आहार्यः
[illegible] सात्त्विकस्त्वोच्यते।
[illegible]–भेदाः प्रदर्शिताः सन्ति।

नाट्यभेद :– रसाश्रयेण, [illegible] प्राधान्येन दश भेदाः भवन्ति
यथा च दशरूपके द्रष्टव्यमिति–

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।
व्यायोग समवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति।।

दशानामप्येषामवस्थानुकारात्मकत्वेन [illegible] नेता, रसस्तेषां भेदहेतवः भवन्ति। तथा चोक्तं [illegible]
"वस्तुनेता रसस्तेषां भेदकः" इति।
साहित्यदर्पणे नाटकलक्षणम् प्रतिपादयता [illegible] प्रोक्तम्–
"नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासर्द्ध्यादिगुणवद् युक्तं नानाविभूतिभिः।।"
सुखदुःखसमुद्भूति नानारसनिरन्तरम्।
पञ्चादिका दशपरास्तत्रांका परिकीर्तिताः।।"
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान् नायको मतः।।
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे।।"

उपरूपकाणि त्वष्टादशविधानि सन्ति – "नाटिका त्रोटक गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम्। विना विशेषं सर्वेषां [illegible] नाटकवन्मतम्।" एवं विधिना नाटकस्यलक्षणं भेदाः प्रदर्शिताः सन्ति। प्राधान्येन शृङ्गारः वीरो वा रस स्यात् धीरोदात्तादिषु कश्चिदुच्च कुलोत्पन्नः नेता स्यात् दिव्योऽथवाऽदिव्यो अथवा दिव्यादिव्यश्च नेता स्यात् [illegible]

[illegible]।
इत्यादिकथने नाटकस्य [illegible] कलाया अन्तः नाटकेषु रमणीयता [illegible] ललितकलासु काव्यान्येव न सन्ति अपि तु [illegible] ललित कला पञ्च दृश्यते इति मन्यन्ते। [illegible] वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला, स्वीक्रियन्ते वास्तुकला [illegible] कलासु [illegible] कलायाः काव्यकला चेति। आसु पञ्चसु कलासु [illegible] सैव कला निरूपणे न्यूनतमानि साधनानि प्रयुज्यन्ते [illegible] श्रेष्ठतमीष्यते। अतः वास्तुकलायाः [illegible] काव्यकलायामेव श्रेष्ठाऽस्ति। क्रमशो[illegible] काव्यकलैव श्रेष्ठतमा न्यूनतमसाधनानुपयुज्यन्तेऽत्र काव्यस्य श्रव्यापेक्षया कलाऽस्ति। तत्रापि [illegible] रमणीयत्वमास्वाद्यते। यतश्च दृश्यकाव्येऽधिकतरम् रमणीयत्वोपपादकानि तत्वानि केवलं श्रव्यकाव्ये तु रमणीयत्वोपपादकानि भवन्ति। तथा सहृदयाः श्रवणाभ्यामेव आस्वादकराणि भवन्ति। [illegible] कल्पनाशक्त्या चित्रणं श्रव्यकाव्यान्तर्गतानां भावानां [illegible] कष्टमनुभवन्ति। येन रमणीयतायाः हन्मानसेऽङ्कितं कृत्वा [illegible] स्वादयितुं शक्यते येन वास्तविकं स्वरूपमनायासेना [illegible] दृश्यकाव्य रमणीतायाः पूर्णआस्वादोऽनुभोक्तुं न पार्यतेऽतः दृश्यकाव्य कष्टकल्पनया।

अतएव साहित्यजगति नाटकस्यैव सर्वातिशयिनी प्रतिष्ठा श्रूयते।
"काव्येषु नाटकं रम्यम्" इति।

इदमेव कारणमस्ति–यत्–[illegible] अलौकिक कलाकौशलेनाभिनयने [illegible] सर्वोऽपि भावः नायक प्रदर्शितनाटकावलोकनेनैव सामाजिकानां चेतस्सु साक्षात्कृतो भूत्वा नायिकादीनां सद्योरसानुभूति विषयो भवति।

भारतीय महिलानामादर्शस्वरूपम् प्रत्यपादयत्रलिखत् यत्–
" शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रिय सखी वृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः।।"

अपि च –
" अभिजनवतो भर्तुः श्लाध्ये स्थिता गृहिणीपदे।"
"[illegible] याति शकुन्तला [illegible]
इत्यादिभिरुदाहरणै [illegible]
चेतांसि न समावर्जयति। [illegible]
यच्चित्रमवलोकयत – [illegible]
नाप्लावितं स्यात्।

तथा च –
निराधारं धैर्यं कमिव शरणं यातु [illegible]
इह विरता दानपरता। श्रव्य काव्ये तु [illegible] श्रवणसाहाय्येन दृश्ये तु [illegible] सहृदयैरनुभूयतेऽतः श्रव्यापेक्षया दृश्यस्य रमणीयत्वं [illegible] श्रेष्ठतमां पदवीमध्यास्ते।
"[illegible] गीतिकरो रागः"
इति [illegible] यते तदपि दृश्य – [illegible] पूर्णरूपेणशक्यते। नाट्यशास्त्राविष्कर्त्रा [illegible] नाट्यशास्त्रे प्रत्यपादितथाहि समीक्ष्यन्ताम् –

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न तत्कर्म न वा योगो नाटके यन्न दृश्यते।।

अतः संस्कृतनाटकानि अन्यासां भाषाणां नाटकानामपेक्षया सरसवचनरचनया काव्यकलाकौशलशैल्या प्रायशः सुखान् [illegible] सद्योरसानुभूतऽतिप्रसिद्धानि सन्तीति सर्वैरपि [illegible] स्वीक्रियन्ते। संस्कृतनाटकानि [illegible] पञ्चसन्ध्यर्थप्रकृत्यादिभिः [illegible] सुखैश्वर्यव्यावहारिक[illegible] सामाजिकैरनुभूयते। यथा [illegible] कालिदासः हस्तिनापुर[illegible] गार्हस्थ्यमुपदेष्टुम्
काश्यपमुखेन श्लोकमिमं [illegible]

"हतं सत्यं सत्यं प्रजातु कृपण [illegible]
जगज्जातं शून्यं त्वयि [illegible]"

नागानन्दनाटकस्य [illegible] न द्रवीभवति। श्रीहर्षेण [illegible] प्रणीते [illegible]।
[illegible]

हृदयाह्लादकं कस्य चेतसि सुभगां रमणीयतां न पोषयति।

तथा च– उत्तररामचरितनाम्नि नाटके सीताविरहेण ग्रावाऽपि रोदिति व वज्रत्रस्यापि हृदयं दलतीत्यधीत्य रमणीतया सर्वोत्कृष्टं रूपमास्वादयितुं शक्यते। मुद्राराक्षसे राजनीते दुरासदाः उपदेशाः एवमेव स्मातिपयेन चेतसि प्रविशन्तः कर्तव्यपरायणतायाम् नियोक्तुं प्रभवन्ति।

अपि च – अतीत कालस्य सदाचारिणं कर्त्तव्यपरायणानां नृपाणां, वीराणाम्, देशभक्तानाम् , सावित्रीसीताऽऽत्रेयी–अहल्यालक्ष्मीबाईत्यादीनामुदार– चित्तानां देवीनामभिनयेनैतदनुभूयते यद्राभवत् प्रवर्तितव्यम् नपुरावणादिवत् –

इत्युपदेशोऽपि नाटकेभ्यः संगृहातेऽवः नाटकेषु काव्यापेक्षायाऽधिकं रमणीयत्वम् समनुभूयते।

काव्यापेक्षया नाटकानामभिनेतुं रङ्ग मञ्चस्य विविध–कलात्मक वस्तुविन्यासादिरलङ्कृतस्य साहाय्येन सम्वादादिषु स्वाभाविक सरस काव्यादीनाम् दृश्यकाव्येऽतीवरमणीयता प्रत्यपादि वस्तुतः भित्ररूचिरस्तु नाटकेष्वपि विभिन्न भावानां विविधविविधैः रमणीतया सम्पादितत्वाद्–

विभिन्नरूचीनामपि जनानाभिनयं प्रतिसमाकृष्य भावैः सामाजिकानां मनांसि स्मयति।

अस्मिन् विषय एव कविकुलगुरूः कालि निम्नांकितश्लोकेनालिखत्।

यत च :– देवानानिदमामनन्ति मुनयः शान्तं कर्तुं रूद्रेणेदमुमाकृतव्यतिकरे स्वाङ्ग विभक्त द्विधा।
त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते
नाट्यं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्।।

अतएव विभिन्न रूचीनामपि जनानां समावर्ज केषु नाट्य काव्यापेक्षयाऽवश्यं रमणीयत्वं वर्तते, नात्र संशीतिः।।

सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युपलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासङ्घातकर्कशम् ।।

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय सेमिनार

पुनरुत्थित भारत की आवाज : स्वामी विवेकानन्द विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का अविस्मरणीय पल

डॉ० कमल टावरी अध्यक्षीय उद्बोधन प्रदान करते हुए

लैंगिक असमानता ... चुनौतियाँ एवं ... सेमिनार के ... सुखद अवसर

भारत में विकास : मुद्दे, चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ विषयक राष्ट्रीय सेमिनार की मुख्य अतिथि प्रो. सुषमा यादव का पुष्प गुच्छ से स्वागत करती प्राचार्या महोदया

डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन पर माँ सरस्वती के सम्मुख द्वीप प्रज्जवलन

आई.सी.एस.एस.आर. प्रायोजित राष्ट्रीय सेमिनार की संयोजक डॉ० सुशीला विषय प्रवर्तन करते हुए

राष्ट्रीय संगोष्ठी में स्व विचाराभिव्यक्ति करती हुई प्रो. शीला रेड्डी

विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में मंचासीन अतिथिगण

महाविद्यालय के विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत आयो[illegible] विभिन्न

महाविद्यालय के अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न गति

English Section

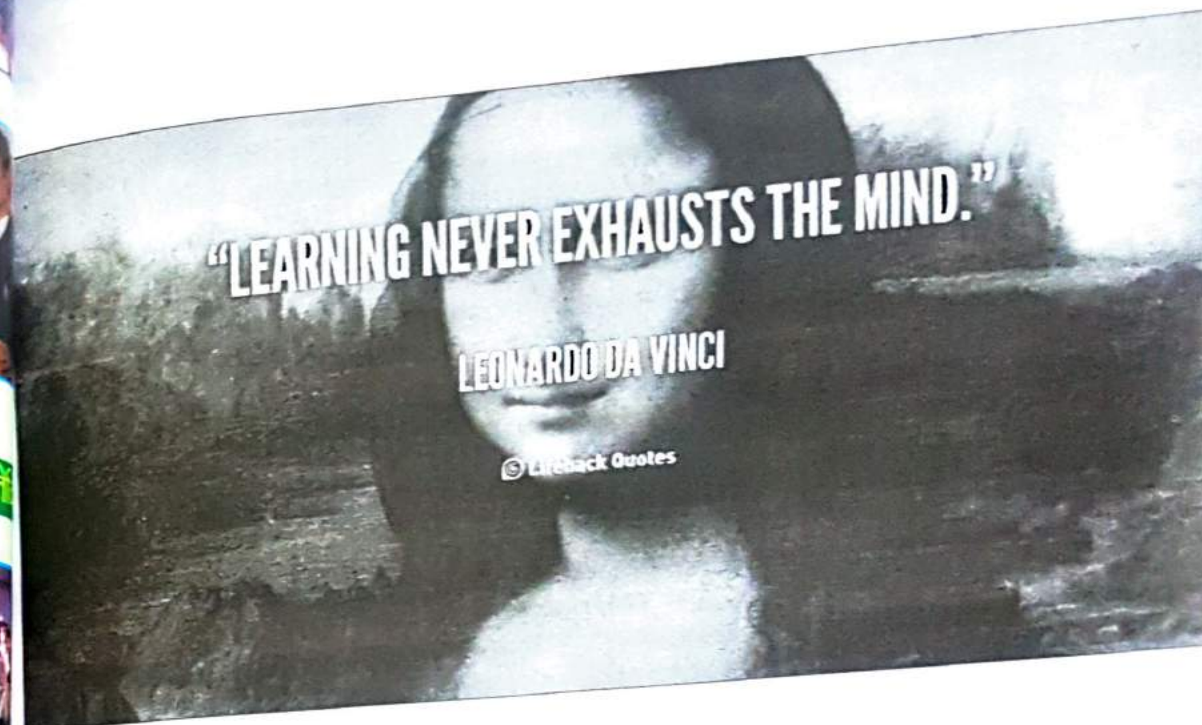

Editor

Ms. Diksha

Student Editors

Ms. Pratibha (M.A. IV[th] Sem.) English
Ms. Divya Verma (M.A. II[nd] Sem.) English

The Need for World Unity

Hopelessness and uncertainty hanging all round. Tears of families flooding the house and explosions reducing houses to ashes. Tomorrow just seems too far away. Homeless desperately hang on flighting to survive and restraining the will to close their eyes once and Did you know that more than 10 million people died in wars. While millions of homes and land were destroyed ? Is it really necessary ? Was mankind created to extinguish its own race world was formed as one large body. Man split the world into 195 countries. Has the time where we should consider reforming the countries into one world ? The world should reun protect earth from threats, improve the world's economy and create a sense of unity.

To begin with, the concord of the world creates can be advantageous in defending extra-terrestrial threats, defending Earth from global warming and defending earth from na disasters. If you suggest extra terrestrial threats are stretching the limits of reality, how ab virtual catastrophe ? Global Warming is only one of countless manmade crises arising insi Earth. Global warming's effects are cataclysmic, including the increase of flooding, increa disease, and increase of temperature extremity. Already, global warming's risk is stating to because of the Kyoto Protocol. This agreement restricted the amount of green house gas emiss Inarguably. You can conclude that the unity of the other 35 countries would've reduced g warming risks even further. Of course, there is the well dread calamity. December 21, 2012, tha Mayan Calendar Predicted. Let's say that 2012, is the climax of Earth's troubles. As displayed i movie, 2012. China alone built ships to rescue several hundred people. If country alone can do much, visualize how much we could do to protect Earth and how many more grateful people we rescue from the jaws of death if the whole world work together. The unity of the world can pro Earth from all types of threats, internal and external. In addition to protecting Earth, uniting world. In will greatly improve the economy of the world. This can be achieved because of ncreased speed of advancement, a greater availability of goods, and a greater network of ideas.

If the world unites, you won't have to worry about what Europe had to worry about w hina shut down the silk road. Goods will still float about when the worlds unites because there absolutely no point in keeping all materials and resources to themselves.

No one is competing for anything such as the victory of a war or the advances in technolog one will be a miser. Ultimately the unity of the world will provide the widespread of ideas, such gious, stories and moral beliefs. Philosophers creates ideas. Ideas creates books. Boo written ideas have captured an awe[illegible] amount of attention in history especially today [illegible]

united states only ties for 21st (with [illegible] other [illegible] prove how popular literature has become. In the world, different [illegible] become commonly available and appreciated by the public. In brief, the [illegible] improved because of faster achievements and a greater accessibility of goods [illegible]

Morever, the reformation of the world as one also generates a sense of unity [illegible] This will decrease racism and segregation, abet the unfortunate and decrease wars [illegible] racism. It has existed as far as you can trace back the earliest human civilizations [illegible] that after all that America's gone through and all that protesting, racism would [illegible] Wrong. Just on October 21, 2010. Daron Lee, an African American councilman, was [illegible] He claimed. "I am not working in a cotton field." Rather rudely. Councilman [illegible] "Well you should be " indicating to Lee's enslaved ancestors. Extremely [illegible] room. As you can see, racism has not gone yet and is still, influencing [illegible] But ask yourself this. Is it really necessary ? Do we need to constantly [illegible] misfortunes of our kind.

If the world is united as one country, people will have more [illegible] lifestyles. This will provoke tolerance, acceptance and reverence rather [illegible] Uniting the world can provide humans with a better sense of harmony [illegible] several aspects.

Hence the unity of the world creates a stronger bond between Earth [illegible] ostensibly insurmountable advantages. As Mahatma Gandhi once [illegible] the whole world blind as we don't see what we should be seeing. [illegible] the truth out there. We humans, are divided into so many parts. How much [illegible] join forces ? How much more can we accomplish if we can make [illegible] of a bomb dropping above your head ? How much more can we achieve [illegible] time to change our ways. It's time to defend our Earth. It's time [illegible]

Fate is not the ruler but the servant of [illegible]

[illegible]

Tips for Good Life

Pooja Nagar
M.A. I Sem.

1. Three things to love -
   Honesty, Purity and Truth
2. Three things to admire -
   Intellect, Beauty and Art
3. Three things to respect -
   Old age, Religion and Law
4. Three things to govern -
   Tongue, Temper and Action
5. Three things to value -
   Time, Health and Wealth
6. Three things to avoid -
   Drinking, begging and gambling

Life

Anjali
M.A.

Life is a mixture of pleasure and pain. There
pleasure of life without the taste of bitter
Life without trouble is impossible.
Troubles come whether you want them or n
As it is said
Life is a struggle, Line it.
Life is a song, sing it.
Life is a challenge, accept it
Life is a Live, love it.
Life is a music, enjoy it.

Life is a Journey

Pooja Nag
M.A. I Se

Life is a gift of God.
A journey for everyone
Nothing can stop ones life.
Life is full of dreams and wonders.
A mixture of joy and sorrow,
Sometimes up sometimes down
We do not realize how precious Life is.
When season passes by
Life starts struggling to win.
Generation after generation.
Life starts decaying or failing.
We experience many good and bad things
Leaving behind only memories.
Time comes and goes
Nothing in this world is immortal.
Only one way to live on immortal life.
When we enter the kingdom of God.
That is Heaven.
Fight a good fight to complete your journey.

Message For Students

Priya Jindal
B.Com. III

This time is not for you to waste.
Use it according to your taste.
None will help you in your need.
Read my dear students read.
If you are really anxious to pass
You must daily attend your class.
If you want to build your future
Serve your parents obey your teacher.
Never do an evil deed.
Read my dear students read.
Never be careless to class in college.

Pollution

Kavita Saroj
B.Ed. I year

What is Pollution?
What is its solution?
Nature donate generously
Man exploits vigorously
Man spoils air and water
Keeps mudding atmosphere
He kills animals for food
And cut trees for wood
To control pollution
We suggest tree plantation
Saving nature, birds and animals
Is the duty of humans
Pollution has a solution
If a man follow resolution.

The Koel

Kamini
M.A. IV Sem. Engish

There sits a little Koel
Upon a mango tree
It wakes me up each morning
And sings a song for me.
It gobbles up a big fat worm
And with its small black eye
it gives a little wink to me
Then flies up in the sky.
And when the light is coming
and the sky is turning red
the koel says to me, "Good night.
It's time you went to bed."

Life without Education

Kavita Saroj
B.Ed. I year

Life without education is like
A sun without shine
A glass without wine
A bird without feather
A body without matter
A man without heart
A machine without parts
A clouds without rain
A house without drain
So Education is vital
For our survival.

Komal
B.A. I

The King of seasons has come.
It makes the flowers bloom.
And makes the cow to the ground.
To eat the grass around.
It makes the world beautiful
with different colours.
It makes the birds come to the trees and sing.
It makes the people think
of a new life, a jolly life.

Formula of Success

Shivani Sharma
B.Sc. II Year

Read but write more
Talk but think more
Play but study more,
I promise you will succeed sure.
Eat but chew more,
Weep but laugh more,
Sleep but work more,
I promise you will be healthy sure.
Hate but love more,
Order but obey more,
Quarrel but agree more,
I promise people will love you sure.
Consume but produce more,
Talk but silence more,
Take but give more,
Cruel but kind more,
I promise people will respect you sure.

M...
M.A. IV S...

1. Education is a journey not a de...
2. To have balance in all situatio... key to happiness.
3. Be like a flower, which mesme... world that crushes it.
4. The greatest loss is the los... confidence
5. Reading without thinking is lik... without digesting
6. Enjoy the day "everyday".
7. Do not wait for the leaders do it... person to person.
8. To receive the best, you have got... your best.
9. The blue birds carry the sky on... back.
10. Treat today as if you won't... tomorrow.
11. There is no achievement wit... objectives.
12. Attitude is a little thing that makes... difference.
13. Pray for the dead and struggle for... living.
14. Heroes and winners are not the s... thing.
15. Beauty lies in the eye of beholder.
16. An injury is much sooner forgotten t... insult.
17. Character is much easier kept th... recovered

The Secret of a Successful Student

Kanchan Nagar
M.A. III English

...ever think about those things which bring negative thoughts in your mind. Always think about the ...ings which increase your pulse and set focus on your target. Always keep the positive attitude.

...ecause we know:

Success is never permanent, failure is never final, So do not stop your effects until your victory ...akes history".

...he equation of success is:

Hundreds of sleepless nights thousands of hardworking days + thousands of lectures + thousands ...f challenging problems + hundreds of quizes + lots of ups and downs + Immense confidence + ...onsistency + sincerity + self motivational approach, all would go to make a successful student".

Save your Trees

Monika Nagar
M.A. II Sem.

In spite of all the publicity and propaganda through the media, we are still destroying our forests wealth. No amount of information, warning, pleading can stop man from his march towards self destruction. Man's greed to became rich blinds him to any disaster. Blindly, selfishly, greedily our forest wealth is being destroyed day after day. Of course, we do not need houses for the growing population. We need vast lands for our various projects, but at what cost? Have we stopped to think even for one minute where our desire to get rich quickly is taking us?

We are destroying natural beauty also. The greenery is vanishing, all our famous hill stations look bare. Cities are becoming concrete jungles. Highways roadways, flyovers are destroying greenery.

Drastic action is needed. For every tree destroyed, a dozen new should be planted. Every child should be taught appreciation and care of plants.

Last but not the least, there is an urgent need for education and control of population. Only removal of illiteracy and poverty will make us understand the value of gold.

The word 'Mother', is not just a six letter word; it is the filling which fills everyone's ... lots of emotions. In the dictionary, you will only get the meaning as the person who gives bi... But the meaning of mother is one word or in one sentence. A mother help us in every sph... When we are sad or there is something which hurts us deep, we tell our mother, and ... between right and wrong. When we are suffering from pain, she is the only person who su... us.

A mother always wants the best for her child. She guides us and show us the right pa... leads us to success in life. She is always the best friend of the child. She encourages us to ... hurdles which comes across our way. When we go away from our mother, no matter ho... luxuries we have, there is something we miss and that is love, affection care and concer... mother. In my opinion, if someone doesn't have luxuries, he is not unlucky but if he doesn'... mother than he is really unlucky.

Thoughts

1. School makes us good human being. It grants knowledge which will certainly keep every... lead a successful life.
2. When we think of doing something we should try to put all our efforts into it. We must be... our own ability to do things and should work hard to achieve.
3. We are good because of our good habits. Never let the bad habit be the part of life. Good habi... us to lead a successful life.
4. Animals understand only the language of love. If you give them love and affection they wil... back with their love only.
5. Freedom is very precious. It cannot be matched with expensive gifts. We should respect o... other's freedom as well.

The Importance of Voting

Jyoti Bhadana
M.A. IV English

The reason to vote cannot be over stated. One man one vote says a lot. It puts each person on equal footing. A vote from a rich person has the same power as a poor person. Young people have the same right to be heard as their elders.

Voting gives you the right and voice to have the say who will be the next most powerful leader in the world. It is the single most effective way to make your voice be heard. By not voting, you give away your right to influence the government overfall. In some class now a days. People hesitate to vote. They say that their vote isn't be that important anymore. They need to wait in long lines hoping that their candidate will be elected. People think that it is all useless and a waste of time.

If the right to vote no longer existed, the country would no longer survive as a democratic nation. But completely totalitarian. When a person does not vote, that one individual citizen does not participate with the electoral process as with any other voter. And if no votes our democracy would end.

Choose your candidate wisely. There are many issues to consider when casting your vote. Every vote has its significance. Several elections have been decided by a single vote.

It is therefore important to vote to have say about what happens to you and to the people in the nation, if you vote.

Quotes about Poetry

Shailendri
M.A. II Sem.

1. Every heart sings a song incomplete until another heart whispers back. Those who wish to sing always find a song. At the touch of a lover, everyone becomes a poet.

Plato

2. Painting is poetry that is seen rather than felt, and poetry is painting that is felt rather than seen.

Leonardo Da Vinci

3. Resist much, obey little..

Walt Whitman

4. Unbeing dead isn't being alive.

E.E. Cummings

Some Great Thoughts

Shivan
M.A.

1. Don't compare yourself with anyone in this world. If you do so you are insulting yourself.

Allen

2. Everyone thinks of changing the world, but no one thinks of changing himself.

Leo To

3. Believing everybody is dangerous, but believing nobody is more dangerous.

Abraham Lin

4. Winning doesn't always mean being first, winning means you are doing better than you have before.

Bonnie

5. Life is not about finding yourself. Life is about creating yourself.

George Bernard S

6. To succeed in life, You need two things: Ignorance and Confidence.

Mark Tw

7. Success is not the key to happiness. Happiness is the key to success. If you love what you are do you will be successful.

Albert Einste

8. There is only one success- to be able to spend your life in your own way.

Christopher Mor

9. Education is the most powerful weapon which you can use to change the world.

Nelson Mande

10. The root of education is bitter, but the fruit is sweet.

Aristo

11. The education is the key to unlock the golden door of freedom.

George Washington Carv

12. The great aim of education is not knowledge but action.

Herbert Spenc

Environmental Challenges Faced by India

Dr. Meenakshi Lohani
Assistant Prof. Geography

It is essential to make the public aware of the formidable consequences of the Environmental Degradation, if not retorted and reformative measures undertaken would result in the extinction of life. We are facing various environmental challenges. It is essential to get the country acquainted with these challenges so that their acts may be eco-friendly. Some of these challenges are as under.

1. Growing Population :

A population of over thousands of millions is growing at 2.11 percent year. It puts considerable pressure on its natural resources and reduces the grains of development. Hence, the greatest challenge before us to limit the population growth. Although population control does automatically lead to development, yet the development leads to a decrease in population growth rates.

2. Poverty :

India has often been described a rich land with poor people. The poverty and environmental degradation have a nexus between them. The vast majority of our people are directly dependent on the nature resources of the country for their basic needs of food, fuel shelter and fodder. About 40% of our people are still below the poverty line.

Environment degradation has adversely affected the poor who depend upon the resources of their immediate surroundings. Thus, the challenge of poverty and the challenge environment degradation are two facts of the same challenge. The population growth is essentially a function have little relevance for him.

3. Agricultural Growth :

The people must be acquainted with the methods to sustain and increase agricultural growth with damaging the environment. High yielding varieties have caused soil salinity and damage to physical structure of soil.

4. Need to Ground Water :

It is essential of rationalizing the use of groundwater. Factors like community wastes, industrial effluents and chemical fertilizers and pesticides have polluted our surface water and affected quality of the groundwater.

It is essential to restore the water quality of our rivers and other water body as lakes is an important challenge. It so finding our suitable strategies for consecration of water, provision of safe drinking water and keeping water bodies clean which are difficult challenges is essential.

5. Development and Forests :

Forests serve catchments for the rivers. With increasing demand of water, plan to ha... mighty river through large irrigation projects were made. Certainly, these would submerg... displace flora and fauna.

As such, the dams on the river Narmada, Bhagirathi and elsewhere have become... political and scientific debate. Forests in India have been shrinking for several centuries... pressures of agriculture and other uses. Vast areas that were once green, stand today as waste...

These areas are to be brought back under vegetative cover. The tribal communities in... forests respects the trees and birds and animal that gives them sustenance. We must recogn... role of these people in restoring and conserving forests.

The modern knowledge and skills of the forest dept. should be integrated with the trad... knowledge and experience of the local communities. The strategies for the joint managem... forests should be evolved in a well planned way.

6. Degradation of Land :

At present out of the Total 329 mha of land, only 266 mha possess any potential for prod... of this, 143 mha is agricultural land nearly and 85 suffer from varying degrees of soil degradat... the remaining 123 mha 40 are completely unproductive.

The remaining 83 mha is classified as forest land, of which over half is denuded to va... degrees. Nearly 406 millions head to livestock have ro be supported on 13 mha, or less than 4 pe... of the land classified as pasture land, most of which is o

overgrazed. Thus, our of 226 mha, about 175 mha or 66 percent is degraded to varying deg... Water and wind erosion causes further degradation of almost 150 mha.

7. Reorientation of Institutions :

The people should be roused to orient institutions, attitudes and infrastructures, to... conditions and needs today. The change has to be brought in keeping in view India's tradition... resources use managements and education etc. Change should be brought in education, in attitu... in administrative procedures and in institutions. Because it affects way people view techno... resources and development.

8. Reduction of Genetic Diversity :

At present most wild genetic stocks have been disappearing from nature. Wilding includ... the Asiatic Lion are facing problem of loss of genetic diversity. The protected areas network li... sanctuaries, national parks, biosphere reserves are isolating populations. So, they are decreas... genetic diversity.

9. Evil Consequences of Urbanization :

Nearly 27 percent Indians live in urban areas. Urbanization has given birth to a gre...

number of environmental problems that need urgent attention. Over 30 per cent of urban Indians live in slums. Out of India's 3.245 towns and cities, only 21 have partial age and treatment facilities. Hence, coping with rapid urbanization is a major challenge.

10. Air and Water Population :

Majority of our industrial plants are using out-dated and population technologies and make shift facilities devoid of any provision of treating their wastes. A great number of cities and industrial areas that have been identified as the worst in items of air and water pollution.

Acts are enforced in the country, but their implement is not so easy. The reason is their implementation needs great resources, technical expertise, political and social will Again the people are to be made aware of these rules. Their support is indispensable to implement these rules.

Gender Discrimination and child abuse

Anju Sharma
Computer Operator

The recent deaths of babies facing cruelty at the hands of relatives have shocked the country. But it is true that gender discrimination is not confined to one particular economic class or section or a community. It is widespread and even the states that top the literacy chart like Kerala has a skewed child sex ratio.

The 2001 and 2011 Indian census reports show a significant decrease in the number of girls compared to boys in the 0-6 categories.

State health society report reveals that child sex ratio has fallen 9 out of 14 districts in past 10 years. This we are talking about where the population is highly educated and fairly well off compared to other states.

According to sociologists the problem is acute because mothers are often unable to speak up for their children. They have limited rights within the family and practically no decision-making powers.

There is an urgent need to change the mindset of the communities while strengthening the laws within the country. There is no dearth of laws but the implementation needs to be tightened.

The Pre Natal Diagnostic Techniques Act and Rules is in fairly a stringent law but then female feticide is rampant across the cities and villages.

The need of the hour is to implement the laws more strictly with heavy punishments as deterrents. Another measure could be to introduce fast track courts to look at the cases that involve the rights of minors.

A 2007 report of the ministry for women and child development revealed that more than 53%

of children in India been sexually abused and many have never shared the fact of this abu anyone.

They need speedy justice to move on and leave the past behind. The institutions inv child protection should be given more teeth so that they can take some effective measures a child abuse.

Interesting Facts On India That You Had No Idea About

Dr. Vineet
Assistant Prof. Soc

"India is, the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of hi the grandmother of legend, and the great grandmother of tradition. Our most instructive mat in the history of man are treasured up in India only." These are not our words. These are the wo the great Mark Twain. And here are 25 Indians facts to support his statement:

1. A Floating post office

India has the largest postal network in the world with over 1,55,015 post offices. A single office on an average serves a population of 7,175 people. The floating post office in Dal L Srinagar, was inaugurated in August 2011.

2. Kumbh Mela gathering visible from space

The 2011 Kumbh Mela was the largest gathering of people with over 75 million pilgrims gathering was so huge that the crowd was visible from space.

3. The wettest inhabited place in the world

Mawsynram, a village on the Khasi Hills, Meghalaya, receives the highest recorded ave rainfall in the world. Cherrapunji, also a part of Meghalaya, holds the record for the most rainfa the calendar year of 1861.

4. Bandra Worli Sealink has steel wires equal to the earth's circumference

It took a total of 2,57,00,000 man hours for completion and also weighs as much as 50 African elephants in the world. A true engineering and architectural marvel.

5. The highest cricket ground in the world

At an altitude of 2,444 meters, the Chail Cricket Ground in Chail, Himachal Pradesh, is t highest in the world. It was built in 1893 and is the part of the Chail Military School.

6. Shampooing is an Indian concept

Shampoo was invented in India, not the commercial liquid ones but the method by use herbs. The word 'shampoo' itself has been derived from the Sanskrit word champu, which means massage.

7. The Indian National Kabaddi team has won all World Cups

India has won all 5 men's Kabaddi World Cups held till now and have been undefeated throughout these tournaments. The Indian women's team has also won all Kabaddi World Cups held till date.

8. Water on the moon was discovered by India

In September 2009, India's ISRO Chandrayaan- 1 using its Moon Mineralogy Mapper detected water on the moon for the first time.

9. Science day in Switzerland is dedicated to Ex-Indian President, APJ Abdul Kalam

The father of India's missile programme had visited Switzerland back in 2006. Upon his arrival, Switzerland and declared May 26th as Science Day.

10. India's first President only took 50% of his salary

When Dr. Rajendra Prasad was appointed the President of India, he only took 50% of his salary, claiming he did not require more than that. Towards the end of his 12-year tenure he only tool 25% of his salary. The salary of the President was Rs. 10,000 back then.

11. The first rocket in India was transported on a cycle

The first rocket was so light and small that it was transported on a bicycle to the Thumba Launching Station in Thiruvananthapuram, Kerala

12. India has a spa just for elephants

Elephants receive baths, massages and even food at the Punnathoor Cotta Elephant Yard Rejuvenation Centre in Kerala. Now that's a BIG step for the country.

13. India is the world's second- largest English speaking country:

India is second only to the USA when it comes to speaking English with around 125 million people speaking the language, which is only 10% of our population. This is expected to grow by quite a margin in the coming years.

14. Largest number of vegetarians in the world:

Be it because of religious reasons or personal choices or both, around 20-40% of Indians are vegetarians, making it the largest vegetarian-friendly country in the world.

15. The world's largest producer of milk:

India recently overtook the European Union with production reaching over 132.4m tonnes in 2014.

16. The first country to consume sugar :

India was the first country to develop extraction and purifying techniques of sugar. Many visitors from abroad learnt that refining and cultivation of sugar from us.

17. The human calculator :

Shakuntla Devi was given this title after she demonstrated the calculation of two 13 digi

numbers : 7,686,369,885,870 X 2,465,099,745,779 which were picked at random. She an[illegible] correctly within 28 seconds.

18. Rabindranath Tagore also wrote the national anthem for Bangladesh :

Rabindranath Tagore is credited not only for writing the Indian national anthem, Jana [illegible] Mana, but the bangladeshi national anthem, Amar Sonar Bangla, as well. He was also [illegible] knighthood by the British but refused the honour after the Jalianwala Bagh massacre.

19. Dhyan Chand was offered German citizenship :

After defeating Germany 8-1 in the 1936. Berlin Olympics, Major Dhyan Chand, the wiz[illegible] hockey, was summoned by Hitler. He was promised German citizenship, a high post in the Ge[illegible] military and the chance to play for the German national sside. Dhyan Chand however decline[illegible] offer.

20. Freddle Mercury and Ben Kingsley are both of Indian descent :

Freddie Mercury, the legendary singer of the rock band 'Queen' was born a parsi wit[illegible] name Farrokh Bulsara while the famous Oscar winning. Hollywood star Ben kingsley was b[illegible] Krishna Pandit Bhanji.

21. Astronaut Rakesh Sharma said India looks saare jahaan se ancha from space :

Former Prime Minister Indira Gandhi asked the first Indian in space, Rakesh Sharma, ab[illegible] how India looked from space. His response was our famous patriotic song, Saare Jahan Se Achcha'

22. Havell's is purely an Indian brand & named after its first owner :

Though the company was bought for just 10 lakh Rupees a long time ago and is now [illegible] multibillion electrical goods company, it's an Indian company and is still named after its origi[illegible] owner, Haveli Ram Gupta.

23. Diamonds were first mined in India :

Initially, diamonds were only found in the alluvial deposits in Guntur and Krishna Distric[illegible] the Krishna River Delta. Until diamonds were found in Brazil during the 18th century, India led t[illegible] world in diamond production.

[illegible]4. A special polling station is set up for a lone voter in the middle of Gir Forest :

Mahant Bharatdas Darshandas has been voting since 2004 and during every election sin[illegible] [illegible]hen, a special polling booth is set up exclusively for him as he is the only voter from Banej in G[illegible] [illegible]orest.

[illegible]5. Snakes and Ladders originated in India :

Earlier known as Moksha Patamu, the game was initially invented as a moral lesson abou[illegible] [illegible]arma to be taught to children. It was later commercialized and has become one of the most popula[illegible] [illegible]oard games in the world.

"CRY THE PEACOCK " A PSYCHOLOGICAL STUDY

Dr. Seema Sharma
Associate Prof. English

The novels of Anita Desai are psychologically important. Psychologists have defined and described adjustment in various ways. S. Freud in his book. " Civilization and discontent" finds that are three inescapable sources of human sufferings in adjustment.

First of all, many forces of nature such as floods, fires man's existence. Freud finds that sometimes, adjustment is disturbed because of these natural forces.

Secondly, Freud points to the disposition of our bodies to age and wither. Man's mortality has always been his ultimate limitation. But if one thinks constantly about one's coming destruction, then one is unable to adjust one's conditions.

Finally, Freud finds that a maladjusted person lacks the ability to wok out a satisfactory means of keeping human relationships at the level of family, community and society in harmony. It appears from this view of Freud that in some cases, the individual himself is responsible for his maladjust - ment but in others, even though he wants to adjust but he can not because of various factors. Maya, the heroine of the novel 'Cry the Peacock' is psychologically important. She has not attained maturity in her attitude so she is mala adjusted. She runs after happiness, determined to do anything to attain it, it is always out of her reach because of her inabilities to face the adversities of life with courage. She is not aware of the realities of life and remains in daydreams. She thinks of translating these dreams into facts but that is impossible for her to do so as she does not know how ? This is the reason why she is not able to understand Gautama her husband and to adjust with him. This leads to her unhappy martial relationship with her husband and this in return increases her unhappiness and her problems, which frighten her so much that she runs away from reality into daydreams even more than before!

Like many other novels, the husband wife alienation is the main theme in this novel. Thi[illegible] theme is developed in a slow incremental manner such as we find in a typical psychological novel Ker relation with her husband is not in harmony. In th very beginning, we find a vast difference between the attitudes of the two. Maya is a girl of sensitive and reflective temperament who goes o[illegible] brooding over any incident that takes place, while Gautama is not disturbed by the adversities of li[illegible] This difference between the two can clearly be seen in their reactions to the deayj of Maya's pet dog Toto. Mata regards the death as something unexpected happening, but for Gautama, it is a natural happening. Her attachment is clear from her speech- "I thought of Toto's short stamp of a white ta[illegible] again, of the foolish little wisp at its end...... and thrilled bark". (1)

Though Gautama too remembers the dog, yet he is not excessively attached to anything. He
the favour of detachment, as taught by lord Krishna in Geeta. Her excessive attachm
Gautama. She never thinks of detaching herself from the world. Her sadness is increa
intensified by the attitude of her husband who does not console her in her distress. In fact,
that her behaviour is childish.

Meena Belliappa takes this situation into consideration ans writes that, " The very sy
the tone of Maya's passionate outbursts and Gautam's cool replies underline a contrast be
creature of impulse and emotion, and a man of logic and common sense" (2)
Being a creature of emotion and impulse, she is chilled by the cold logic offered to her
husband. She feels that her husband does not understand her does not try to share her thoug
feelings, her joys and sorrows. It seems to ger that they in two different worlds which ha
connection at all with each other. She says to herself, "The distance he coldly keeps from me
loneliness in this house" (3)

There is sufficient evidence to show that this novel presents a clash of the two irreconc
temperaments - the one poetic and another prudential. There are enough incidence which hig
a want to communication between the two. One major incident is when Maya says that she w
like to go the south to see a Kathakali dance performance in semidarkness. Gautama advises h
wait till a troop came to Delhi as it will be less expensive. Every individual lives is an environ
which has a far reaching influence on his behavior. The experiences of childhood which is the
impressionable age live a lasting impact upon the personality of a human being.
Desai has presented psychology of as childless woman how Maya has lived in an affectio
environment, is unable to adjust in a totally different environment where only logic is important
emotions have no place in life.

Knowledge is the eye of desire and can become the pilot of the soul

(Will Durant)

महाविद्यालय में आयोजित विविध

एन.सी.सी., रैंजर्स, गाँधी जयन्ती, स्वतन्त्रता दिवस,

राष्ट्रीय सेवा योजना : सत्र

समाचारिका

Team Work

Less Ego

More We go

सम्पादक मण्डल

डॉ० निधि रायज़ादा

श्रीमती नेहा त्रिपाठी

वार्षिक आख्या - सत्र 2015-16

श्रीमती रा...
एसो. प्र...

पूर्णतया ग्रामीण अँचल में स्थित कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर की 19...
स्थापना में शासन का उद्देश्य क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक रुप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुण...
उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण एवं शहरी विभेदों को दूर करते हुए राष्ट्र विकास में संलग्न कराना है।

अपनी पूर्ण व्यस्क अवस्था को प्राप्त एवं संसाधनों से सम्पन्न यह महाविद्यालय स्नातक स्तर पर 12 एवं स्नातको...
स्तर पर 9 विषयों के अध्ययन अध्यापन कार्य से सुसज्जित है। इसके अतिरिक्त विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय भी स्नातक...
पर संचालित है। शिक्षा संकाय की कक्षाएँ इसी वर्ष उत्तर प्रदेश शासन के सहयोग एवं प्राचार्या के अथक प्रयास...
फलस्वरुप 100 छात्राओं के प्रथम बैच एवं पूर्ण विभाग प्राध्यापकों के संरक्षण में क्रियाशील हो गई हैं। इतिहास विषय में...
केन्द्र भी कार्य कर रहा है, जिसमें 08 शोधार्थी पंजीकृत है। अन्य विषयों के लिए प्रयास जारी है।

किसी भी महाविद्यालय की समृद्धि एवं विकासगति के परिचायक उसके अध्ययनरत विद्यार्थी होते हैं। अत्यन्त...
का विषय है कि 26 छात्र–छात्राओं से प्रारम्भ करते हुए महाविद्यालय में अब 1850 छात्राएं पंजीकृत हैं। शिक्षकों के...
अध्यापन से वर्ष 2014–15 का परीक्षा परिणाम औसतन 90% रहा है।

महाविद्यालय की अन्य उपलब्धियों में U.G.C. द्वारा प्रदत्त स्वामी विवेकानन्द एवं डॉ. अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र...
वर्ष भर इन महापुरुषों के प्रेरणादायक विचारों एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित लघु पाठ्यक्रम प्रसार व्याख्यान आदि संचा...
किये जा रहे हैं। इन नव स्थापित केन्द्रों में इस वर्ष "Swami Vivekanand : The Voice of Resurgant India"...
Development in India: Issues challenges and strategies with special reference to Dr. Ambedkar's role...
विषयों पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार भी आयोजित किये गये। इस वर्ष डॉ० अम्बेडकर फाउन्डेशन, दिल्ली में भा...
सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा "कल्याणकारी अर्थव्यवस्थाओं में अधिकारों...
सुनिश्चितीकरण" शीर्षक पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय के डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र की छा...
कु. नेहा रावत M.A. III Sem. (Economics) ने एक लाख रुपये का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। महाविद्यालय...
ऐसे होनहार विद्यार्थी की उपलब्धि पर गर्व अनुभव हो रहा है।

महाविद्यालय में बौद्धिक प्रचार प्रसार एवं वैचारिक ऊर्जा को गति प्रदान करने के उद्देश्य से समय–समय...
सेमिनार, विचार गोष्ठी आदि आयोजित किये जाते हैं। इस श्रृंखला में Indian Council of Social Science Resear...
New Delhi द्वारा प्रायोजित समाज शास्त्र विभाग के तत्वावधान में "Gender Disparity and women security: Issue...
Challenges and solution" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में सामाजिक चेतना एवं देश सेवा से सम्बन्धित ईकाईयाँ जैसे राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी...
रेंजर्स की यूनिट कार्यशील हैं। एन.एस.एस. में 100 स्वयं सेवी, एन.सी.सी. में 68 कैडेट्स तथा रेंजर्स में 132 (6 टो...
छात्राएं पंजीकृत हैं। इन ईकाईयों के तत्वावधान में छात्राओं में टीम भावना एवं अनुशासन की प्रवृत्ति के प्रोत्साहन...
विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे – वृक्षारोपण, स्वच्छता, प्लास्टिक एवं प्रदूषण पर रोक एवं जागरुकता रैलियां, सा...
बाल कल्याण, मतदाता जागरुकता आदि कार्यक्रम सम्पन्न कराये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक दिवसीय सात दिव...
एवं प्रशिक्षण शिविर इत्यादि भी आयोजित किये गए हैं। इस वर्ष NCC में 02 छात्राओं ने 'C' certificate परीक्षा उत्तीर्ण की

हमारा भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उत्तर प्रदेश शासन के आदेश द्वारा...
नवम्बर को छात्रसंघ चुनाव निष्पक्ष रुप से सम्पन्न कराये गये।

महाविद्यालय में छात्राओं के स्वस्थ तन एवं स्वस्थ मन की उपयोगिता एवं पर्यावरण संवर्द्धन हेतु गाँधी जयन्ती के
अवसर पर महाविद्यालय में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय ग्रामीण अंचल में स्थित होने के कारण बहुत सी छात्रायें परिस्थितिवश संस्थागत कोर्स में सम्मिलित
नहीं हो पाती। उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के प्रसार हेतु 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
अध्ययन केन्द्र' सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है जिसमें सत्र 2015–16 में 130 विद्यार्थी विभिन्न विषयों में पंजीकृत है। इस
वर्ष 02 INDUCTION प्रोग्राम तथा दिनांक 10 अक्टूबर 2015 को IGNOU के Counsellors के लिए एक Orientation
Workshop का आयोजन किया गया। हर्ष का विषय है कि इस केन्द्र की परीक्षायें भी महाविद्यालय में सम्पन्न करायी जाती
हैं।

छात्राओं कें सर्वांगीण विकास हेतु सभी विभागों में विभागीय परिषदों का गठन किया गया है, जिसमें समय–समय
पर वाद विवाद, भाषण, क्विज़ स्वरचित कविता, लेखन एवं पाठ, निबंध, स्लोगन, पोस्टर एवं सामान्य ज्ञान आदि
प्रतियोगितायें सम्पन्न करायी जाती हैं। विजयी प्रतियोगियों को वार्षिक समारोह में पुरस्कृत किया जा रहा है। विज्ञान
संकाय में Science exhibition का आयोजन किया गया जिसमें Science और Technology से संबंधित Models का
प्रदर्शन किया गया। छात्राओं की योग्यता को और अधिक परिमार्जित करने के ध्येय से अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित
प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने हेतु भी छात्राओं को प्रेरित किया जाता है। इस वर्ष नेहरु युवा केन्द्र गौतम बुद्ध नगर, उ०प्र०
द्वारा आयोजित खण्ड स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में कु० रुबी शर्मा, M.A. II (Eco.) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कु० सोनिका नागर M.A. (Pol. Sc.) ने यूजीसी द्वारा आयोजित JRF परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय की प्रथम
JRF छात्रा का गौरव प्राप्त किया।

छात्राओं की नारी सुलभ रुचियों एवं प्रतिभाओं का ध्यान रखते हुए – मेहंदी, रंगोली, कलश सज्जा, लोकगीत,
लोकनृत्य एकांकी नाटक आदि प्रतियोगिताओं का साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद, गृहविज्ञान, चित्रकला एवं संगीत परिषद
के माध्यम से वर्षपर्यन्त आयोजन किया जाता है।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के निरन्तर उन्नयन के दृष्टिगत शोध गतिविधियाँ एवं शोध परियोजनायें महाविद्यालय में
क्रियाशील हैं। इस वर्ष संस्कृत विभाग में कु० नीलम शर्मा को पी०एच०डी० डिग्री प्रदान की गई तथा डॉ० ममता उपाध्याय
एवं डॉ० किशोर कुमार की एक–एक पुस्तक प्रकाशित हुई।

महाविद्यालय के विकास की असीमित सम्भावनाओं को देखते हुए प्राचार्या महोदया द्वारा क्रियान्वित नवीन
योजनाओं के क्रम में छात्राओं की उपस्थिति में पारदर्शिता लाने हेतु इसी वर्ष कैम्पस में बायो–मैट्रिक मशीनों को लगवाकर
स्नातक स्तर पर उपस्थिति दर्ज करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। इसके अतिरिक्त परिसर में Wi-Fi करण का कार्य अपने
अन्तिम चरण में है।

मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि आगामी सत्र में सभी विभाग internet सेवा से लाभान्वित होंगे जो विकास की
श्रृंखला में महत्वपूर्ण कदम होगा।

हिन्दी साहित्य परिषद्

शिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। महावि... छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास व उनके व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षा के साथ–साथ शिक्षणेत्तर गतिविधि... महत्वपूर्ण स्थान है। अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए सम... शिक्षणेत्तर कार्यकलापों में सहभागिता करना आवश्यक है। महाविद्यालय में विभागीय परिषद् इस दिशा में महत्वपूर्ण... निभाती हुई सतत् प्रयासरत रहती है। हिन्दी साहित्य परिषद के तत्वावधान में समय–समय पर विभिन्न प्रति... आयोजित की जाती रही हैं जो छात्राओं के दिशा निर्देशन के साथ–साथ उनके मनोबल को भी बढ़ाती है। इसी... हिन्दी साहित्य परिषद् में सत्र 2015–16 में विभागीय परिषद् का गठन कर अनेक प्रतियोगिता आयोजित की गई... छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिन्दी विभाग द्वारा सितम्बर माह में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया... विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कहानी लेखन प्रतियोगिता में कु० निशा सिंह, बी०कॉम० तृतीय प्रथम, कु०... शर्मा बी०कॉम० प्रथम द्वितीय तथा कु० प्रियंका, बी०एड० विभाग तृतीय स्थान पर रहीं। इसी क्रम में हिन्दी विभा... निबन्ध लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें वंदना पाण्डेय, बी०एड० प्रथम, शैलजा शर्मा बी०एड० द्विती... स्वाति बी०एस–सी० III, तृतीय स्थान पर रही। विभाग द्वारा कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें... नागर, एम०ए० हिन्दी सुजाता नागर बी०एड० एवं वन्दना पाण्डेय बी०एड० क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर... विभाग द्वारा भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें गीता शर्मा एम०ए० द्वितीय प्रथम, पूजा नागर... द्वितीय द्वितीय एवं रितु नागर एम०ए० तृतीय स्थान पर रहीं।

उपर्युक्त सभी छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

संस्कृत परिषद्

डॉ० दीप्ति वा...

परिष...

सत्य–शील–सौन्दर्य–समीरा, ज्ञान–जला गति–सारा।

छल–छल कल–कल प्रवहतु दिशि दिशि पावनसंस्कृतधारा।।

सामान्य जन–मानस से लेकर विशिष्ट एवं बुद्धिजीवी समस्त वर्ग को प्राचीन भारतीय सभ्यता व संस्कृ... सुपरिचित कराकर उसे आत्मसात करने की प्रेरणा देने वाली संस्कृत भाषा एवं साहित्य अपनी वैज्ञानिकता, श... अर्थकोश, दार्शनिक तत्त्व, साहित्यिक समृद्धता की दृष्टि से भव्य एवं अनुपम है।

भारतीय संस्कृति एवं वैश्वीकरण से उत्पन्न नवीन प्रत्याशाओं का समाहार कर छात्राओं में नवोन्मेष प्रति... नेतृत्व क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से विगत वर्षों की भाँति सत्र 2015–16 में भी महाविद्यालय में संस्कृत परि... गठन किया गया –

परिषद् प्रभारी – डॉ० दीप्ति वाजपेयी

सह–प्रभारी – **डॉ० नीलम शर्मा**
सदस्य – **श्रीमती कनक लता यादव**
उपाध्यक्ष – कु० अन्नू, एम.ए. III Sem.
सचिव – कु० मन्जू नागर, **एम.ए. I Sem.**
सह–सचिव – कु० संजू नागर, **बी.ए. III**
कक्षा प्रतिनिधि – कु० चित्रा शर्मा, **बी.ए. II**
कक्षा प्रतिनिधि – **कु. प्रियंका विकल, बी.ए. I,**
कु. प्रिया मावी, **बी.ए. I**

सर्वप्रथम संस्कृत परिषद् के तत्वावधान में दिनांक 06/10/15 को 'अभिविन्यास कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत छात्राओं के विषय की महत्ता, सत्र पर्यन्त होने वाली विभिन्न गतिविधियों की सूचना तथा संस्कृत अध्ययनोपरान्त रोजगार की विभिन्न संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

दिनांक 02/11/15 को परिषद् के तत्त्वावधान में "पर्यावरण सुरक्षित तो जीवन संरक्षित" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत पूर्वाह्न में महाविद्यालय संस्कृत परिषद् की छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता, वृक्ष सिंचन, व्यर्थ वस्तुओं को नष्ट करना इत्यादि कार्य किये गये।

अपराह्न में डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं ईको फ्रैण्ड्ली वस्तुओं के प्रयोग से सम्बन्धित सार गर्भित जानकारी प्रदान की गई। इस क्रम में डॉ० नीलम शर्मा ने प्रदूषण समस्या व श्रीमती कनक लता यादव ने पर्यावरण में वृक्षों का योगदान विषय पर वक्तव्य प्रदान किये।

दिनांक 02/03/16 को परिषद् के अन्तर्गत करियर काउन्सिलिंग सत्र का आयोजन किया गया। जिससे डॉ० मधु श्रीवास्तव एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद ने मुख्य वक्ता के रुप में छात्राओं को कैरियर संबंधी जानकारी प्रदान की। तत्पश्चात डॉ० दीप्ति वाजपेयी ने उच्च शिक्षण संस्थानों में अनिवार्य राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) के विषय में छात्राओं को सार गर्भित जानकारी प्रदान की। डॉ० नीलम शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय से सन्बन्धित विभिन्न पाठ्यक्रमों के सम्बन्ध में तथा श्रीमती कनक लता यादव ने पी०एच०डी० प्रवेश परीक्षा से सम्बन्धित विभिन्न ज्ञान से छात्राओं को लाभान्वित कराया। इसी क्रम में दिनांक 17/03/16 को संस्कृत परिषद् के तत्त्वाधान में सामाजिक जागरुकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें बालिका शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता को आधार बनाकर **विभाग प्राध्यापकों एवं स्नातकोत्तर छात्राओं ने ग्राम बादलपुर की बालिकाओं पर सर्वेक्षण किया तथा उन्हें शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता हेतु जागरुक किया।**

दिनांक 18/03/16 को संस्कृत परिषद् के अन्तर्गत भूतपूर्व छात्रा समागम का आयोजन किया गया। समागम में विगत वर्षों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर चुकी छात्राओं ने संस्कृत विभाग के प्राध्यापकों एवं छात्राओं से विचार–विनिमय किया व भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त परिषद् के अन्तर्गत श्लोक लेखन प्रतियोगिता एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। श्लोक लेखन प्रतियोगिता में **कु. संजू नागर प्रथम, कु. मंजू नागर द्वितीय एवं कु० हर्षिता नागर तृतीय** एवं निबन्ध प्रतियोगिता में कु. संजू नागर प्रथम, कु. मंजू नागर द्वितीय एवं कु. सरिता तृतीय स्थान पर रहीं। समस्त विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कृत किया गया।

"नगरे–नगरे ग्रामे–ग्रामे विलसतु संस्कृत वाणी

सदने–सदने जन–जन वदने जयतु चिरं कल्याणी"

इस भाव को अन्तस् में समाहित किए संस्कृत परिषद् संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु कृतसंकल्प है। आगामी सत्रों में भी महाविद्यालय की संस्कृत परिषद् पूर्ण मनोयोग से विविध क्रिया–कलापों के माध्यम से संस्कृत को सहज व सरल रुप से जन–जन तक प्रसारित करने का पुनीत कार्य करती रहेगी।

अंग्रेजी परिषद्

अंग्रेजी परिषद् के तत्वावधान में वर्ष 2015–16 में विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आ... गया जिसमें बी.ए. एवं एम.ए. की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभाग में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का ... किया गया जिसके परिणाम निम्नवत है :–

1. Paper Presentation Competition :-

(i) Pratibha - I[st] M.A. III Sem.

(ii) Meenakshi II[nd] M.A. III Sem.

(iii) Anjali Nagar II[nd] M.A. I Sem.

(iv) Shailendri III[rd] M.A. III Sem.

2. Essay Writing Competition :-

(i) Anchal I[st] B.A. III

(ii) Shaily Bhati II[nd] B.A. III

(iii) Anju III[rd] B.A. III

विजेता छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कार प्रदान किये गये। दिनांक 07.11.2015 को विभागीय छात्र–परिषद का ... किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से कु. शैलेन्द्री M.A. II को अध्यक्ष पद के लिये चयनित किया गया। स्थानान्त... फलस्वरुप डॉ० ज्योति यादव का विदाई समारोह एवं डॉ० सीमा शर्मा के विभाग में आगमन पर उनका स्वागत स... अंग्रेजी विभाग के सदस्यों एवं छात्राओं के द्वारा आयोजित किया गया। डॉ० नीलम शर्मा, संस्कृत विभाग का Rasa The... पर एक व्याख्यान छात्राओं के लिए आयोजित किया गया। विभाग द्वारा 25.01.2016 को कैरियर काउंसिलिंग प्रोग्रा... अन्तर्गत एक व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें डॉ० गुरुवीर सिंह, एसो.प्रो. अंग्रेजी M.M.H. College गाजिया... मुख्य वक्ता थे।

राजनीति विज्ञान परिषद

डॉ० ममता उपा...

एसो. प्रो., राजनीति वि...

शासन से प्रबंधन की ओर अग्रसर विश्व–समाज की आज की सबसे बड़ी आवश्यकता वैश्विक दृष्टि से युक्त उदार... नागरिकों के विकास की है ताकि मानवीय, भौतिक, प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रबंधन कर सर्वतोन्मुखी सतत् वैश्वि... विकास एवं शान्ति के व्यापक लक्ष्य को हासिल किया जा सके। कहते हैं कि शिक्षण संस्थायें नागरिक गुणों के विकास... पाठशालाएँ होती हैं एवं युवा भविष्य के शिल्पी। महाविद्यालय की युवा छात्राओं में उदारवादी लोकतंत्र के अनुरुप उ...

नागरिक गुणों यथा – स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व का भाव, धैर्य, सहनशीलता, विरोधी के दृष्टिकोण के प्रति सम्मान का भाव, क्षमाशीलता व शांतिपूर्ण साधनों से संघर्ष समायोजन की क्षमता के विकास हेतु राजनीति विज्ञान परिषद् का गठन सत्र 2015–16 में किया गया। नवम्बर 2015 में गठित इस परिषद् की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग द्वारा की गई व परिषद की प्रभारी के रुप में डॉ० दिव्यानाथ, एसो. प्रो. द्वारा कार्य किया गया। परिषद के सदस्यों के रुप में डॉ० ममता उपाध्याय एसो. प्रो., डॉ० सीमा देवी, असि. प्रो. एवं डॉ० पंकज चौधरी, असि. प्रो. के द्वारा आवश्यकतानुसार व समयानुसार वर्षपर्यन्त सहयोग प्रदान किया गया। छात्रा प्रतिनिधि के रुप में कु. प्रीति एम.ए. II, कु. मीनाक्षी एम.ए. I, कु. नेहा नागर, बी.ए. कु. चित्रा शर्मा, कु. मोनिका शर्मा, बी.ए. II, व रजनी भाटी बी.ए. I सक्रिय रहीं।

अधिकारों की उपलब्धि कर्तव्यपथ की निर्देशक है व कर्तव्यों का पालन अधिकारों का सृजक। इस तथ्यानुभूति एवं उ.प्र. शासन के निर्देशांतर्गत 10 दिसम्बर 2015 को विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा एक शपथ–ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की प्राचार्य, प्राध्यापकगण एवं छात्राओं द्वारा मानव श्रृंखला बनाकर मानवाधिकारों की रक्षा की शपथ ली गई। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ० ममता उपाध्याय द्वारा महत्वपूर्ण मानवाधिकारों की जानकारी छात्राओं को दी गई एवं इस दिवस के महत्व से अवगत कराया गया।

भ्रमण द्वारा शिक्षण के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए विभाग द्वारा 23 दिसम्बर, 2015 को विभाग की छात्राओं के लिए संसद भवन, नई दिल्ली के लिए एक शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया, भ्रमण के दौरान उन्हें संसदीय कार्य–प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई।

छात्राओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा की भावना के विकास के उद्देश्य से सत्र में निबंध व भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। निबंध प्रतियोगिता का विषय था – 'सामाजिक–धार्मिक सहिष्णुता भारत की एकता के लिए वांछित है।' भाषण प्रतियोगिता – 'फाँसी की सज़ा कितनी उपर्युक्त' ? विषय पर आयोजित की गई। निबंध प्रतियोगिता में कु. मीनू नागर पुत्री श्री धीरज नागर, बी.ए. I ने प्रथम स्थान, कु. सोनम, बी.ए. I ने द्वितीय स्थान व कु. मुनेश, पुत्री श्री वेदपाल सिंह, बी.ए. I ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता की विजेता छात्राओं में कु. कंचन, पुत्री श्री भगवत सिंह, बी.ए. I, कु. प्रियंका, पुत्री श्री दलवीर सिंह, बी.ए. I, कु. श्वेता नागर, पुत्री श्री सिंह राज नागर, बी.ए. I व कुमारी चित्रा शर्मा, पुत्री श्री शिवकुमार शर्मा, बी.ए. II रहीं जिन्होंने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। द्वितीय स्थान पर दो छात्राएं – कु. प्रियंका नागर व कु. श्वेता नागर रहीं।

शिक्षा का एक व्यवहारिक उद्देश्य छात्र–छात्राओं को रोजगारोन्मुख बनाना है। राजनीति विज्ञान विषय का अध्ययन करने वाली छात्राओं को कैरियर चयन में सहायता करने के उद्देश्य से फरवरी 2016 में विभाग द्वारा एक कैरियर काउंसिलिंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें उन्हें शिक्षा, लोक सेवाओं, केन्द्र व राज्य सरकारों की अधीनस्थ सेवाओं, वैदेशिक सेवाओं, पत्रकारिता व गैर सरकारी स्वैच्छिक संगठनों में रोजगार की संभावनाओं के विषय में बताया गया। कार्यक्रम का आयोजन व संचालन विभाग के प्राध्यापकों डॉ० ममता उपाध्याय व डॉ० पंकज चौधरी द्वारा किया गया।

सत्र में विभाग की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही की एक पूर्व छात्रा कु. सोनिका नागर ने विभाग के सतत् संपर्क में रहते हुए यू.जी.सी. द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण कर जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त की। विभाग के लिए गौरव का विषय यह भी रहा कि विभाग प्रभारी डॉ० दिव्यानाथ ने डिग्री प्राचार्य पद पर पदोन्नत होकर राजकीय महाविद्यालय कुशीनगर में कार्यभार ग्रहण किया। विभाग उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करते हुए उन्हें रोजगार परक शिक्षा के प्रति भी जागरुक बनाने का प्रयास करता है। महाविद्यालय की छात्राएं भी विभि... गतिविधियों में रुचि लेती हुई न केवल अधिक संख्या में समाजशास्त्र विषय का चयन करती हैं, बल्कि शिक्षणेत्तर का... में भी सहर्ष एवं उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं।

छात्राओं के पाठ्यक्रम को दृश्य, श्रव्य संचार माध्यमों के द्वारा प्रस्तुतीकरण, व्याख्यान आदि के द्वारा रोचक... का प्रयास किया जाता है। समाजशास्त्र विभाग द्वारा मतदाता सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टर, स... इत्यादि प्रदर्शनी लगाई गयी तथा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

समाजशास्त्र परिषद् के तत्वावधान में समय–समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती रही हैं जो कि छा... को दिशा देने के साथ–साथ ही उनके मनोबल को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं। विजेता छात्राओं को उनके उत्साह... हेतु पुरस्कृत भी किया जाता है। परिषद् के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नवत् है –

निबन्ध प्रतियोगिता –

प्रथम स्थान	–	मोनिका	एम०ए० I
द्वितीय स्थान	–	अनुपम नागर	एम०ए० I
द्वितीय स्थान	–	पिंकी	बी०ए० II
तृतीय स्थान	–	शीतल नागर	बी०ए० I

पोस्टर प्रतियोगिता –

प्रथम स्थान	–	डॉली चौहान	बी०ए० I
द्वितीय स्थान	–	मीनाक्षी भाटी	बी०ए० I
तृतीय स्थान	–	रुपल नागर	बी०ए० I

गृह विज्ञान परिषद्

डॉ० शिवानी ...
परिषद् ...

छात्राओं की सृजनात्मक अभिव्यक्ति एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु, विषय की महत्ता को अनुभव करते हुए एवं छात्राओं को इसके प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से सत्र 2015–16 में गृह विज्ञान परिषद् का गठन किया गया। जीवन में सफलता के शिखर तक पहुँचने के लिए विद्यार्थी का पठन पाठन के अलावा शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी सहभागिता अति–आवश्यक है। महाविद्यालय की छात्राएं विभाग की गतिविधियों में रुचि लेते हुए गृह विज्ञान विषय का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु शिक्षणेत्तर कार्यक्रमों में भी सहर्ष एवं उत्साहपूर्ण भाग लेती हैं। गृह विज्ञान की छात्राओं को नवीन तकनीकों से परिचित कराने हेतु एवं शैक्षिक गतिविधियों को सरल बनाने की दृष्टि से विभाग द्वारा समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रम ए... प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। इस सत्र 2015–16 के आरम्भ में दिनांक 27.08.15 को अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गृहविज्ञान विषय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं को गृहविज्ञान सम्बन्धी विषयों एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी गई।

गृहविज्ञान विभाग द्वारा "पोषण सप्ताह" दिनांक 01.09.15 से 07.09.15 तक का आयोजन किया गया जिसमें स्नातकोत्तर की छात्राओं ने सम्बन्धित विषय पर प्रतिदिन "पोस्टर प्रस्तुतिकरण", नारा लेखन, नुक्कड़ नाटक, क्विज़ (Quiz), एवं प्रोटीन–प्रधान खाद्य पदार्थ की रेसिपी की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी के साथ विभाग ...ध्यापिकाओं एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं द्वारा प्राइमरी स्कूल, बादलपुर में जाकर मध्यान्ह भोजन का सर्वेक्षण करते हुए

उन्हें पोषण सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गई।

दिनांक 03.09.15 को डॉ० डी.एन.सिंह द्वारा विभाग की छात्राओं के लिए 'पर्यावरण एवं पोषण' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

वर्तमान सत्र में गृह विज्ञान परिषद् के तत्वावधान में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. कलश सज्जा दिनांक 27.11.15
2. कढ़ाई प्रतियोगिता दिनांक 10.02.16

विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह में प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विभाग द्वारा समय–समय पर प्राध्यापिकाओं द्वारा गृह विज्ञान विषय से सम्बन्धित कैरियर की जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त डॉ० शबनम छाबड़ा द्वारा " गृह विज्ञान के विभिन्न आयाम" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। दिनांक 29.03.16 को गृह विज्ञान विभाग द्वारा "महिला उद्यमिता प्रोत्साहन हेतु प्रदर्शनी एवं सेल" का आयोजन किया गया, जिसमें स्नातकोत्तर की छात्राओं ने हस्तनिर्मित वस्तुएं जैसे – अचार, जैम, मुरब्बा, लड्डू, पापड़, कुर्ते, फ्रॉक, प्लाजो, लहंगे इत्यादि का निर्माण कर प्रदर्शनी लगाई। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग द्वारा किया गया।

भूगोल परिषद्

श्री कनक कुमार
परिषद् प्रभारी

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए तथा सफलता के उच्चतम शिखर पर अग्रसर होने के लिये विषय संबंधी अध्ययन के अलावा सम सामयिक शिक्षणेत्तर कार्यकलापों में सहभागिता करना आवश्यक है। इसी ध्येय की पूर्ति करने के लिए भूगोल परिषद् का गठन किया गया।

कक्षा प्रतिनिधि :

आँचल शर्मा	एम०ए० I
मोनिका	एम०ए० II
अर्चना सिंह	बी०ए० III
शुभान्नी	बी०ए० II
आँचल	बी०ए० I

भूगोल परिषद् का मुख्य लक्ष्य छात्राओं की अभिवृत्तियों को प्रकाशित करना एवं उनके अन्दर की प्रतिभाओं को बाहर निकालना है। छात्राओं को न केवल पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता है अपितु पाठ्यान्तर क्रियाओं में भी सम्मिलित किया जाता है। भूगोल विभागीय परिषद् के तत्वावधान में सत्र 2015–16 में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसके परिणाम निम्नवत् हैं –

वाद–विवाद प्रतियोगिता :–

1. सोनू नागर D/o श्री धीर सिंह नागर एम०ए० I प्रथम
2. बिसरा रिजवी D/o श्री मुशाहीद खान एम०ए० II द्वितीय
3. मोनिका D/o श्री पाल एम०ए० II तृतीय

आशु भाषण प्रतियोगिता :–

1. आँचल D/o श्री अजीत सिंह बी०ए० I प्रथम
2. नेहा नागर D/o श्री विजय पाल सिंह बी०ए० III द्वितीय
3. शुभान्नी शर्मा D/o श्री प्रवीन शर्मा बी०ए० II तृतीय

शिक्षाशास्त्र परिषद्

डॉ० श

शिक्षा मानव के अन्तर्निहित जन्मजात गुणों को प्रस्फुटित करती है, सत्य एवं ज्ञान की ओर अग्रसर होने के प्रदान करती है ताकि ज्ञान की अज्ञान पर, प्रकाश की तमस पर तथा विद्या की अविद्या पर विजय प्राप्त की जा सके विजय के द्वारा मानव विकास की ओर उन्मुख होता है। वर्तमान में यह विकास सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ पाठ्य क्रियाओं द्वारा सम्भव है। इसलिए प्रत्येक वर्ष की भाँति इस सत्र में भी शिक्षाशास्त्र परिषद् के तत्वावधान में प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका परिणाम निम्नवत है–

कंचन कुशवाहा बी.ए. II प्रथम स्थान
ज्योति शर्मा बी.ए. I द्वितीय स्थान
संजू नागर बी.ए. III तृतीय स्थान

निबन्ध प्रतियोगिता में विजयी सभी छात्राओं को वार्षिकोत्सव 2016 में पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर उत्साहवर्द्धन किया

संगीत परिषद्

डॉ० बबी

संगीत के बिना जीवन अधूरा है। संगीत न केवल मन को आनन्दित करता है, यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का सुन्दर साधन है। वर्तमान समय में युवा वर्ग बड़ी संख्या में संगीत को जीवकोपार्जन के रुप में अपना रहे हैं। संगीत है। संगीत की सुन्दरता, गम्भीरता, परिवक्तता को संगीत प्रेमी ही अनुभव कर सकता है। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में हुए वर्ष 2014–15 में महाविद्यालय में संगीत को विषय के रुप में मान्यता प्राप्त हुई और आज यहाँ बी०ए० कक्षा में छात्रायें अध्ययनरत हैं।

सत्र के प्रारम्भ में ही संगीत विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसके अन्तर्गत सत्र पर्यन्त अनेक गतिविधि हुई। स्नातक स्तर पर विभागीय परिषद् के तत्वावधान में इस वर्ष एक शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता का आ किया गया, जिसमें अनेक छात्राओं द्वारा सहभागिता की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत् रहे –

क्रम सं०	छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	प्रतियोगिता में स्थान
1.	सोनम देवी	श्री प्रकाश	B.A. I	प्रथम
2.	कुक्की नागर	श्री सुरेश नागर	B.A. I	द्वितीय
3.	मोनिका नागर	श्री विजयपाल नागर	B.A. I	तृतीय

विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

विभागीय परिषद् प्रतियोगिता के अतिरिक्त महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों यथा 26 जनवरी, 15 अगस्त व 2 अ पर आयोजित कार्यक्रमों में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई । वार्षिकोत्सव पर भी महाविद्यालय की छात्राओं अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिनकी प्रशंसा मुख्य अतिथि डॉ० जसवन्त सिंह नेगी, क्षेत्रीय उच्च अधिकारी, मेरठ मण्डल के द्वारा भी की गई।

चित्रकला परिषद्

डॉ० सोनम शर्मा
प्रवक्ता– शिक्षाशास्त्र

भारत की संस्कृति अपने अन्दर विविधताओं को समाहित किए हुए है, यह संस्कृति भौतिक एवं अभौतिक दोनों ही प्रकार की होती है। अभौतिक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस देश की कलाओं का ज्ञान परम आवश्यक है। कला मानव संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग है, जो कलात्मकता, भावनात्मकता और हृदय के विभिन्न विचारों को एक आकार प्रदान करती है। इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी छात्राओं की प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए चित्रकला परिषद् द्वारा दो प्रतियोगिताओं को आयोजित किया गया। इन प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत हैं–

मटकी सज्जा प्रतियोगिता–

संतोष बी.ए. III प्रथम स्थान
निर्मल बी.ए. III द्वितीय स्थान
रजनी भाटी बी.ए. I तृतीय स्थान

रंगोली प्रतियोगिता–

संतोष बी.ए. III प्रथम स्थान
रजनी भाटी बी.ए. I द्वितीय स्थान
निक्की भाटी बी.ए. I तृतीय स्थान

विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

वाणिज्य परिषद्

डॉ० अरविन्द कुमार यादव
परिषद् प्रभारी

वाणिज्य परिषद् 2015–16 का गठन दिनांक 06.10.2015 को छात्राओं के चहुँमुखी विकास को ध्यान में रखकर किया गया। वाणिज्य परिषद् में निम्नांकित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चयनित किये गये:–

1. उपाध्यक्ष :– ज्योति भाटी (बी.कॉम तृतीय वर्ष)
2. सह उपाध्यक्ष :– सोनिया नागर (बी.कॉम प्रथम वर्ष)
3. सचिव :– प्रगति गर्ग (बी.कॉम द्वितीय वर्ष)
4. सह सचिव : श्वेता शर्मा (बी.कॉम प्रथम वर्ष)
5. कोषाध्यक्ष : नेहा (बी.कॉम प्रथम वर्ष)
6. प्रचार मंत्री : गुड्डल नागर (बी.कॉम प्रथम वर्ष)
7. कक्षा प्रतिनिधि : काजल सिंह (बी.कॉम तृतीय वर्ष)
   सपना (बी.कॉम द्वितीय वर्ष)
   भावना गर्ग (बी.कॉम प्रथम वर्ष)

वाणिज्य परिषद् के तत्वावधान् में दिनांक 20 जनवरी 2016 को SEBI की ओर से एक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें SEBI के पदाधिकारियों ने SEBI के कार्य और अंशों में विनियोग तथा नयी कार्य पद्धति के संबंध में बताया।

वाणिज्य परिषद् के अन्तर्गत एक बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक ... गया जिसमें निम्नलिखित छात्राओ ने स्थान प्राप्त किये:-

प्रथम स्थान : निशा शर्मा D/O श्री मुकेश शर्मा बी. कॉम प्रथम वर्ष

विमलेश रावल D/O श्री संजय रावल बी. कॉम प्रथम वर्ष

द्वितीय स्थान : रेनू नागर D/O श्री सुदेश नागर बी. कॉम प्रथम वर्ष

तृतीय स्थान : भावना गर्ग D/O श्री दिनेश गर्ग बी. कॉम प्रथम वर्ष

उक्त छात्राओं को वार्षिक समारोह में पुरस्कार प्रदान किये गये।

रसायन विज्ञान परिषद्

गत वर्षों की भाँति 2015-16 में दिनांक 05/11/15 को रसायन विज्ञान परिषद् का गठन किया ... विभिन्न पदों पर निम्नलिखित छात्राओं को चयनित किया गया।

संरक्षक – प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग

प्रभारी / अध्यक्ष – नेहा त्रिपाठी

उपाध्यक्ष – कु० निधि (D/o श्री अजब सिंह) B.Sc. III

सचिव – कु० गीता झा (D/o श्री शिवजी झा) B.Sc. I

संयुक्त सचिव – कु० शिवि चंडेला (D/o श्री प्रेम सिंह चंडेला) B.Sc. I

कक्षा प्रतिनिधि –

B.Sc. I- कु० प्रीति (D/o श्री अशोक कुमार)

B.Sc. II- कु० काजल बंसल (D/o श्री प्रवीन)

B.Sc. III- कु० सुम्बुल जेहरा (D/o नफीस अब्बास)

इस परिषद के अन्तर्गत दिनांक 25/01/16 को एक निबन्ध प्रतियोगिता (विषय : पॉलीथिन के प्रयोग ... नितांत आवश्यक) का तथा दिनांक 11/02/16 को एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ... निम्नवत् रहे–

निबंध / लेख प्रतियोगिता –

1. कु० रुकसाना / श्री अली मोहम्मद – B.Sc. III – प्रथम पुरस्कार
2. कु० सोनी शर्मा / श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा – B.Sc. III – द्वितीय पुरस्कार
3. कु० तारिका अग्रवाल / श्री संतोष अग्रवाल – B.Sc. III – तृतीय पुरस्कार

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का परिणाम :-

1. कु० श्वेता बरहेला – श्री महेश कुमार – B.Sc. I – प्रथम स्थान
2. कु० निधि – श्री अजब सिंह – B.Sc. III – द्वितीय स्थान
3. कु० रुकसाना – अली मोहम्मद – B.Sc. III – द्वितीय स्थान

उपरोक्त सभी छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कार वितरण किया गया।

भौतिक विज्ञान परिषद्

डॉ० ऋचा
परिषद् प्रभारी

गत वर्षों की भाँति वर्ष 2015-16 में दिनांक 5/11/2015 को भौतिक विज्ञान परिषद् का गठन किया गया। परिषद् के विभिन्न पदों पर जिन छात्राओं का चयन किया गया उनका विवरण निम्नवत् है –

संरक्षक – डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या)

प्रभारी / अध्यक्ष – डॉ० ऋचा

उपाध्यक्ष – कु० प्रज्ञा रघुवंशी D/o श्री मनोज रघुवंशी B.Sc. III

सचिव – कु० सविता D/o श्री चमन लाल B.Sc. I

संयुक्त सचिव – कु० भारती D/o श्री श्यौराज सिंह B.Sc. I

कोषाध्यक्ष – कु० राधा राघव D/o श्री राजेश राघव B.Sc. III

कक्षा प्रतिनिधि –

B.Sc. I – कु० शिवानी मावी D/o श्री सतवीर मावी

B.Sc. II – कु० शिखा नागर D/o श्री संजय नागर

B.Sc. III – कु० मधु शर्मा D/o श्री विनोद कुमार शर्मा

इस परिषद् के अन्तर्गत दिनांक 10/2/16 को एक क्विज (प्रश्नोत्तरी) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 45 छात्राओं ने भाग लिया, साथ ही एक लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका परिणाम निम्नवत् रहा –

<u>प्रश्नोत्तरी परीक्षा का परिणाम –</u>

प्रथम – कु० मधु शर्मा D/o श्री विनोद कुमार शर्मा B.Sc. III

द्वितीय – कु० अंजली शर्मा D/o श्री भरत पाल सिंह B.Sc. III

तृतीय – कु० रुकसाना D/o अली मोहम्मद B.Sc. III

<u>लेख प्रतियोगिता का परिणाम –</u>

प्रथम – कु० प्रियंका यादव D/o श्री श्रीनाथ यादव B.Sc. III

द्वितीय – कु० पूजा नागर D/o श्री सतेन्द्र नागर B.Sc. I

तृतीय – कु० लक्ष्मी D/o अनिल शर्मा B.Sc. II

उपर्युक्त सभी छात्राओं को वार्षिकोत्सव समारोह में भौतिक विज्ञान परिषद की तरफ से पुरस्कृत किया गया।

वनस्पति विज्ञान परिषद्

डॉ० प्रति

गत वर्षों की भाँति वर्ष 2015–16 में दिनांक 5/11/2015 को वनस्पति विभाग परिषद् का गठन किया परिषद् के विभिन्न पदों पर जिन छात्राओं का चयन किया गया उनका विवरण निम्नवत् है –

संरक्षक – डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या)
प्रभारी / अध्यक्ष – डॉ० प्रतिभा तोमर
उपाध्यक्ष – कु० विजेता पुत्री श्री मंथन सिंह (B.Sc. III)
सचिव – कु० तारिका अग्रवाल पुत्री श्री संतोष अग्रवाल (B.Sc. II)
संयुक्त सचिव – कु० काजल नागर पुत्री श्री नरेन्द्र नागर (B.Sc. II)
कोषाध्यक्ष – कु० चंचल

<u>कक्षा प्रतिनिधि –</u>
B.Sc. I – कु० मीनू रानी D/o श्री नागेन्द्र सिंह
B.Sc. II – कु० सपना शर्मा D/o श्री मानवेन्द्र शर्मा
B.Sc. III – कु० श्वेता बंसल D/o श्री राजकुमार बंसल

परिषद् के अन्तर्गत दिनांक 06/01/16 को एक निबन्ध प्रतियोगिता व 27/2/2016 को पोस्टर प्रतियो आयोजित की गई, जिसका परिणाम निम्न है –

<u>निबन्ध प्रतियोगिता –</u>
प्रथम – कु० भावना सैनी पुत्री श्री गजेन्द्र सिंह सैनी B.Sc. III
द्वितीय – कु० तारिका अग्रवाल पुत्री श्री संतोष अग्रवाल B.Sc. II
तृतीय – कु० ज्योति B.Sc. I

<u>पोस्टर प्रतियोगिता –</u>
प्रथम – कु० शिवानी शर्मा पुत्री श्री बी. एम. शर्मा B.Sc. II
द्वितीय – कु० सुषमा शर्मा पुत्री श्री एस. चंद B.Sc. II
तृतीय – कु० सोनम पुत्री श्री देवी सिंह B.Sc. II

उपरोक्त सभी छात्राओं को महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में पुरस्कृत किया गया।

बी.एड. संकाय

डॉ० बलराम सिंह
अधि. प्र., बी.एड. संकाय

बी.एड. संकाय महाविद्यालय का नवीनतम संकाय है, जहाँ बी.एड. का प्रथम सत्र 2015 से प्रारम्भ हुआ है। यहाँ उ०प्र० लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित सात शिक्षकों की नियुक्ति हुयी तथा बी.एड. प्रथम वर्ष में 68 छात्राओं का नामांकन हुआ है। बी.एड. पाठ्यक्रम का संचालन "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्" (NCTE) द्वारा निर्धारित नियमानुसार होता है।

किसी भी देश में समाजों की दिशा तथा दशा को बदलने में वहाँ के शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ज्ञानवान व कुशल शिक्षक ही इस दायित्व को सफलतापूर्वक निभाने में सक्षम होते हैं। एक ओर जहाँ बच्चों का सर्वांगीण विकास करना अध्यापकों का प्राथमिक दायित्व होता है वहीं दूसरी ओर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षकों को तैयार करना बी.एड. संकाय का दायित्व होता है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यह संकाय कार्यरत है जहाँ न केवल कक्षा शिक्षण पर ध्यान दिया जाता है वरन् छात्राध्यापिकाओं को पाठ्य सहभागी व पाठ्येत्तर कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करना व उनका संचालन करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये प्राचार्या के संरक्षण में परिषद् का गठन किया गया जो निम्नवत् है –

संरक्षक – प्राचार्या
अध्यक्ष – मीनू शर्मा
उपाध्यक्ष – प्रियंका धसमाना
सचिव – भावना सिंह
कोषाध्यक्ष – शोभना
सदस्य – अंजलि मौर्य, 2. सरिता यादव

सत्र 2015–16 के दौरान महाविद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में बी.एड. की छात्राओं ने उत्साहवर्धक हिस्सा लिया। विभागीय स्तर पर वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम निम्नवत रहें –

वाद–विवाद प्रतियोगिता – जय श्री सिंह – प्रथम स्थान
शिवानी यादव – द्वितीय स्थान
रमा सैफी – तृतीय स्थान

क्विज़ प्रतियोगिता – रमा सैफी – प्रथम स्थान
रंजीता चौबे – द्वितीय स्थान
पूनम – तृतीय स्थान

शिक्षण प्रशिक्षण के साथ साथ यहाँ की छात्राओं को भविष्य में उपयोगी पाठ्यक्रमों की जानकारी, परीक्षा की तैयारी से संबंधित समस्याओं का समाधान तथा सफलता के लिये शिक्षकों द्वारा समय समय पर निर्देशन एवं परामर्श भी दिया जाता है। इसी वर्ष विभाग की होनहार छाया प्रीति शर्मा ने नेट (संस्कृत) क्वालीफाई करके विभाग का मान बढ़ाया है।

भविष्य में विद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षक उपलब्ध करवा सके, इस उद्देश्य के साथ विभाग प्रतिबद्ध है।

साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद्

डॉ० अनीता रा...
प्रभारी

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवतानस्तभागधेयं परमं पशुनाम्।।

साहित्य, सगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात् पूंछ और सींग रहित पशु के समान है। वस्तुतः संस्कृति मानसिक, नैतिक, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं कलात्मक जीवन की समग्रता का नाम है। संस्कृति एव समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव के दृष्टिगत् संस्कृति को उसके अंगभूत साहित्य से जोड़ते हुए विगत वर्षों इस वर्ष भी छात्राओ के उत्तरोत्तर विकास एवं परिष्कार हेतु साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद का गठन किया गया एकमात्र उद्देश्य छात्राओ की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभाओं को निखारना' उनकी सुकोमल भावनाओं को विक उसकी प्रतिभाओ के सर्वोत्तम विकास को प्रतिबिम्बित करना तथा उन्हें एक अच्छा नागरिक बनने की ओर अग्रसर

04 सितम्बर 2015 को परिषद् प्रभारी डॉ० अनीता रानी राठौर के नेतृत्व में त्वरित आशु भाषण प्रतियोगिता के द्वारा परिषद् का शुभारम्भ हुआ जिसमें कु. श्वेता नागर B.A. I ने प्रथम, भावना गर्ग B.Com I ने द्वितीय तथा सुम B.Sc. III ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

20-10-15 को महावि० स्तर पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कल्पना B.Sc. I, पूजा कश्यप English तथा अंशू शर्मा M.A. III Home Science ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया।

7-11-15 को डॉ० शिल्पी एवं डॉ० नेहा त्रिपाठी के निर्देशन में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया प्रतियोगिता मे आंचल सिंह M.A. I Home Science ने प्रथम स्थान प्राप्त किया' शिवानी यादव B.Ed. ने द्वितीय नीरु B.A. II ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

15.12.15 को 'भारत मे इन्टरनेट का प्रयोग राष्ट्र विकास के लिए उपयोगी है' विषय पर राजनीति विज्ञान प्राध्या ममता उपाध्याय के कुशल निर्देशन में एक वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। साथ ही दिनांक 22.1.16 को अधिकारी गौतम बुद्ध के निर्देशानुसार 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' विषय पर एक अन्य वाद विवाद प्रतियोगिता का आ किया गया जिसमें छात्राओं ने सोत्साह भाग लिया।

22.1.16 को संगीत विभाग द्वारा नृत्य, ढोलक एवं गायन प्रतियोगिताऐं सम्पन्न हुई इसमें छात्राओं की अभिव्यक्ति रुचि देखते बनती थी।

24.2.16 को हिन्दी प्रवक्ता डॉ० अर्चना सिंह द्वारा 'कन्या भ्रूण हत्या समस्या/महिला शिक्षा' विषयों पर कहानी प्रतियोगिता सम्पन्न करायी गई जिसमें पूनम कुमारी B.Com I ने प्रथम, निशा शर्मा B.Com I ने द्वितीय तथा मोनिका B III ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

8.2.16 को साहि. सांस्कृतिक परिषद् की सह–प्रभारी डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा अंतर संकाय लघु नाटिका प्रतियो का आयोजन किया गया जिसमें विज्ञान संकाय की छात्राएं विजयी रहीं। तत्पश्चात् डॉ० अर्चना सिंह द्वारा स्वरचित पाठ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

साहि. सा. परिषद् का मुख्य आकर्षण छात्राओं द्वारा वार्षिक समारोह में प्रतिभाग करना था जिसकी मनोहारी सांस्कृ कला की सराहना करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदय ने छात्राओं की भूरि–भूरि प्रशंसा की तथा उन्हें जिल राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान बनाने की प्रेरणा दी। परिषद् के समस्त सदस्य डॉ० अनीता रानी राठौर, डॉ० दी वाजपेयी, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० शिल्पी, डॉ० नेहा त्रिपाठी, डॉ० बबली अरुण वर्ष पर्यन्त छात्रा मार्गदर्शन, उत्साहवर्धन एवं निर्देशन हेतु कृत संकल्प रहे हैं।

वार्षिक क्रीड़ा समारोह

मुख्य अतिथि- भारतीय कबड्डी कोच पद्मश्री, अर्जुन अवार्ड एवं द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित डॉ० ...

मुख्य अतिथि - प्रो० जे० एस० नेगी, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी मेरठ मंडल

क्रीड़ा परिषद्

श्री धीरज कुमार
सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा

शिक्षा के सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिये तथा सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के लिये विषय सम्बन्धी ज्ञान ही नहीं अपितु अन्य शिक्षणेत्तर कार्यकलापों में सहभागिता करना आवश्यक है। महाविद्यालय में संचालित होने वाली गतिविधियों से छात्राओं के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ बौद्धिक, मानसिक एवं उनके मनोबल को भी बढ़ावा मिलता है। प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय में क्रीडा गतिविधियाँ सत्र के प्रारम्भ से ही आरम्भ हो जाती हैं। दिनांक 03–04 फरवरी 2016 को वार्षिक क्रीडा समारोह का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि भारतीय कबड्डी कोच पद्मश्री अर्जुन अवार्ड और द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित डॉ० सुनील डबास ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित किया।

छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट तथा मुख्य अतिथि को सलामी दी गयी, तत्पश्चात् गतवर्ष की चैम्पियन छात्रा द्वारा प्रज्जवलित मशाल लेकर क्रीड़ा प्रांगण की परिक्रमा लगायी गई।

मुख्य अतिथि डॉ० सुनील डबास ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि नकारात्मक ऊर्जा अपने अन्दर उत्पन्न न होने दें, सकारात्मक ऊर्जा आपको आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करेगी। जीवन का लक्ष्य बनाएं एवं उसे पूरा करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें। उन्होनें कविता के माध्यम से छात्राओं को प्रेरित किया –

भारत की बेटियाँ दुनिया पर छाने लगी हैं,
विश्व के आसमान पर तिरंगा लहराने लगी हैं,
भारत के माँ बाप भी अपनी बच्चियों पर इतराने लगे हैं।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग ने छात्राओं को उद्बोधित करते हुए कहा कि महिला महाविद्यालय में प्रेरणा दायिनी व्यक्तित्व की स्वामिनी महिला अतिथि की उपस्थिति से उत्साह का संचार होता है। प्राचार्या महोदया ने कहा कि प्रत्येक छात्रा में प्रतिभा होती है, आवश्यकता होती है उसे उभारने की। उन्होंने कहा कि खेल में भाग लेने का महत्व होता है। सकारात्मक भाव से जय–पराजय को स्वीकार करें।

क्रीड़ा प्रभारी डॉ० सत्यन्त कुमार ने वार्षिक क्रीड़ा आख्या प्रस्तुत की । क्रीड़ा सचिव डॉ० धीरज कुमार ने अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगितायें जैसे 100 मी० दौड़, गोला प्रक्षेपण प्रतियोगिता, चक्का प्रक्षेपण, भाला प्रक्षेपण, ऊँची कूद, लम्बी कूद आदि का आयोजन किया गया।

इस वर्ष की क्रीड़ा चैम्पियन कु० संजू पायला पुत्री श्री सगुन पाल बी०ए० प्रथम वर्ष रहीं। इस वर्ष महाविद्यालय में प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के बीच भी गोला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें पुरुष वर्ग में प्रथम स्थान पर डॉ० सत्यन्त कुमार द्वितीय स्थान पर डॉ० विक्रम सिंह तथा तृतीय स्थान पर श्री सुधीर कुमार, महिला प्राध्यापकों में प्रथम डॉ० रश्मि कुमारी द्वितीय स्थान पर डॉ० मिन्तु तृतीय स्थान पर नीलम शर्मा रहीं।

राष्ट्रीय सेवा योजना

"सेवा धर्मः परमगहनो"

(युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित योजना)

डॉ० दीप्ति […]
कार्यक्रम अधिकारी
रा० से० यो०

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धान्त वाक्य अथवा प्रत्यवचन है – "मुझको नहीं तुमको"। यह सिद्धान्त वाक्य है परिधि से ऊपर उठकर पर और सर्व की भावना का बोध कराता है। सेवा भावना और पर कल्याण की भावना को महत्व देने वाली राष्ट्रीय सेवा योजना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार की एक महत्त्वपूर्ण योजना है। इस कार्यक्रम से जुड़े विद्यार्थियों में राष्ट्र प्रेम, साम्प्रदायिक सौहार्द, अनुशासन और एकता की भावना जाग्रत होती है। प्रवेश और नियुक्ति के समय राष्ट्रीय सेवा योजना प्रमाण–पत्र धारकों को अतिरिक्त अंक भार दिया जाना भी योजना के महत्व को द्विगुणित कर देता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना महाविद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर के छात्र–छात्राओं हेतु दो वर्ष की अवधि का कार्यक्रम है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक स्वयंसेवी छात्र/छात्रा को 240 घंटों का सामुदायिक कार्य करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निमित्त कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की प्रत्येक स्वयंसेवी छात्रा पूर्ण तत्परता एवं मनोयोग से सामान्य प्रशिक्षण, नियमित कार्यक्रमों एवं विशेष शिविरों के माध्यम से योजना को मूर्त रुप देने में सतत् संलग्न है।

वर्तमान सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के चार एक दिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम एक दिवसीय शिविर दिनांक 03/11/15 को लगाया गया। पूर्वाह्न में कार्यक्रम अधिकारी के निर्देशन में सभी स्वयंसेवी छात्रायें ग्राम बादलपुर के प्राथमिक विद्यालय पहुँची। जहाँ पर उन्होंने ग्राम की स्वच्छता एवं शिक्षा सम्बन्धी वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की। विचार–विमर्श के पश्चात् स्वयंसेवी छात्राओं से स्वच्छता अभियान चलाया व बच्चों को स्वच्छता के विषय में बताया। बौद्धिक सत्र से श्रीमती शिल्पी सहायक प्रो० गृहविज्ञान द्वारा "किशोरावस्था में आहार एवं पोषण" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। तदुपरान्त भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 26/11/15 को द्वितीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिनमें छात्राओं ने जन जागरुकता रैली के माध्यम से ग्राम्य निवासियों को लैंगिक असमानता, अंध विश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज इत्यादि सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरुक किया। बौद्धिक सत्र में डॉ० अनीता रानी राठौर, एसो. प्रो. अंग्रेजी में "महिला शक्ति : भविष्य की संभावनाएँ" विषय पर प्रेरणादायी व्याख्यान दिया। अंत में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था - "महिला उत्पीड़न : कारण एवं निवारण"। दिनांक 8/12/15 को तृतीय एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। शिविर में छात्राओं ने ग्राम बादलपुर में पर्यावरण रक्षा व स्वच्छता के दृष्टिगत एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया तत्पश्चात् महिलाओं को प्लास्टिक के थैले का प्रयोग न करने की सलाह देते हुये कागज के लिफाफे व थैले बनाने की प्रक्रिया समझाई व बनाकर दिखाये तथा वितरित भी किए।

बौद्धिक सत्र में डॉ० दिव्या नाथ एसो. प्रो. राजनीति विज्ञान ने "भारतीय संविधान में महिला सुरक्षा सम्बन्धी अधिकार व कानून" विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई। तत्पश्चात् क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

चतुर्थ एक दिवसीय शिविर दिनांक 8/01/16 को आयोजित किया गया। शिविर में छात्राओं ने ग्राम–बादलपुर के

प्रमुख स्थलों, चिकित्सालय, मंदिरों, प्रमुख चौराहों पर जाकर विशेष शिविर लगाये जाने की जानकारी ग्राम्य वासियों को प्रदान की व सहयोग की अपील की। इसके पश्चात छात्राओं ने ग्राम के धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता एवं श्रमदान कार्य किया। अंत में "ग्रामों की समस्याऐं एवं निवारण" विषय पर समूह परिचर्चा कराई गयी जो कि दिनांक 18/01/16 से 24/01/16 तक लगाये गये राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का आधार स्तम्भ सिद्ध हुई।

इस प्रकार वर्तमान सत्र 2015–16 में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत विभिन्न शिविरों के माध्यम से अधिग्रहीत ग्राम बादलपुर में श्रमदान स्वच्छता, साक्षरता, वृक्षारोपण, एड्स से बचाव, मतदान के प्रति जागरुकता, विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागृति, स्वास्थ्य एवं आहार पोषण सम्बन्धी जानकारी, पल्स–पोलियो एवं टीकाकरण आदि राष्ट्रीय अभियानों में सहयोग, सर्वेक्षण एवं परिचर्चा कार्यक्रमों के माध्यम से जागरुकता अभियान चलाया गया। साथ ही समय–समय पर निबन्ध, स्लोगन, डस्टबिन निर्माण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 18.01.2016 से 24.01.2016 के मध्य किया गया।

शिविर की कार्य योजना के अनुरुप सभी स्वयंसेवी शिविरार्थी राष्ट्रीय सेवा योजना के मूल उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य किया। शिविर को प्रतिदिन तीन सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में अधिग्रहीत ग्राम बादलपुर की मलिन बस्तियों की स्वच्छता, वृक्षारोपण, समतलीकरण से सम्बन्धित श्रमदान कार्य किए गये। तत्पश्चात् भोजनावकाश के पश्चात बौद्धिक सत्र में साक्षरता, जनसंख्या नियंत्रण, पर्यावरण सुरक्षा, समूह परिचर्चा, सामुदायिक एवं व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि विषयों पर विषय–विशेषज्ञों को आमंत्रित कर गोष्ठी के माध्यम से शिविरार्थी छात्राओं को लाभान्वित किया गया। तृतीय सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित कर छात्राओं में हस्तकौशल एवं क्षमताओं में अभिवृद्धि का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त शिविर के सात दिनों में स्वयंसेवी छात्राओं ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जनजागरुकता, साक्षरता एवं कुरीतियों के उन्मूलन हेतु नुक्कड़ नाटक रैली, भाषण इत्यादि के माध्यम से जागरुकता अभियान को गति प्रदान की गई।

शिविर के प्रथम दिन मुख्य अतिथि माननीय समाज कल्याण अधिकारी श्री करुणेश त्रिपाठी (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा शिविर के विधिवत् उद्घाटन के उपरान्त बौद्धिक सत्र में पूर्व एन०एस०एस० कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अर्चना सिंह द्वारा "राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य, उद्देश्य एवं शिविरार्थियों की आचार संहिता" पर प्रकाश डाला गया। तत्पश्चात् शिविरार्थियों द्वारा ग्राम बादलपुर का सर्वेक्षण कर विभिन्न समस्याओं की जानकारी प्राप्त की गई। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि बादलपुर के 60 प्रतिशत व्यक्तियों के मतदाता पहचान पत्र बने हुए हैं अन्य लोगों के बनवाने हेतु प्रेरित किया गया और समय–समय पर लगने वाले मतदाता पहचान पत्र शिविरों के विषय में अवगत कराया गया।

शिविर के दूसरे दिन सर्वधर्म प्रार्थना के उपरान्त स्वयंसेवी छात्राओं ने बादलपुर के धार्मिक स्थलों की स्वच्छता एवं पौधारोपण का कार्य किया। भोजनोपरान्त द्वितीय सत्र में डॉ० आशा किरन, राजकीय चिकित्सालय बादलपुर द्वारा "महिलाओं की स्वास्थ्य एवं पोषण समस्या पर सारगर्भित जानकारी प्रदान की गई व तृतीय सत्र में "ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की समस्याऐं" विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शिविर के तीसरे दिन दिनांक 20.01.2016 को शिविरार्थियों द्वारा "महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकार" विषय पर जागरुकता रैली निकाल कर ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की समस्याऐं" विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शिविर के तीसरे दिन दिनांक 20.01.2016 को शिविरार्थियों द्वारा " महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकार' विषय पर जागरुका रैली निकाल कर ग्रामीण जनों से परिचर्चा की गई। बौद्धिक सत्र में डॉ० नेहा त्रिपाठी, विज्ञान संकाय द्वारा "साँसे हो रही है कम, कैसे पर्यावरण बचायें हम" विषय पर विचारोत्तेजक व्याख्या प्रदत्त किया गया। तृतीय सत्र में नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 21.01.2016 को शिविर के चौथे दिन शिविरार्थी छात्राओं द्वारा प्रथम चरण में मतदाता पहचान–पत्र सर्वेक्षण कार्य किया, एवं मतदान के अधिकार के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। बौद्धिक सत्र में डॉ० अरविन्द कुमार यादव वाणिज्य संकाय द्वारा समूह परिचर्चा कराई गयी, जिसमे समस्त छात्राओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। तृतीय सत्र में सामाजिक कुरीतियों पर लघु नाटिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर के पाँचवे दिन शिविरार्थियों द्वारा ग्राम बादलपुर की सड़कों की सफाई एवं स्वच्छता का महत्व बताने वाले नुक्कड नाटिका का आयोजन किया गया। बौद्धिक सत्र मे श्री वीरेन्द्र कुमार, शाखा प्रबन्धक, सिन्डीकेट बैंक, बादलपुर द्वारा छात्राओं को बैंकिंग प्रणाली, ए०टी०एम० का उपयोग, खाता खुलवाने की प्रक्रिया सम्बन्धी उपयोगी जानकारी उपलब्ध कराई गई। इसके पश्चात् अनुपभोग्य वस्तुओं से उपयोगी सामग्री बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न हुआ।

शिविर के छठे दिन दिनांक 23.01.2016 को स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा ग्राम बादलपुर का साक्षरता, सर्वेक्षण कार्य किया गया एवं ग्राम्य जनों को शिक्षा के महत्व से सुपरिचित कराने का प्रयास किया गया। बौद्धिक सत्र में प्रधानाचार्य राजकीय महिला पॉलीटेक्नीक बादलपुर द्वारा शिविरार्थी छात्राओं को रोजगारोन्मुख शिक्षा व रोजगार के साधन विषय पर उपयोगी जानकारी प्रदान की गई। तृतीय सत्र में हस्तकौशल विकसित करने के उद्देश्य से तथा प्लास्टिक पर रोक लगाने को दृष्टिगत रखते हुए थैला निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

शिविर के अन्तिम दिन दिनांक 24.01.2016 को समापन समारोह के शुभ अवसर परे माँ शारदे के सम्मुख दीप प्रज्जवलन के पश्चात कार्यक्रम अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी आगन्तुकों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात शिविरार्थी छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। इसके पश्चात कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शिविर की आख्या प्रस्तुत की गई तथा शिविरार्थी छात्राओ ने शिविर के अनुभवों पर वक्तव्य दिए।

अंत मे मुख्य अतिथि श्री भीम सिंह ग्राम प्रधान बादलपुर द्वारा छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया गया। विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के आशीर्वचन के उपरान्त कार्यक्रम अधिकारी डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के संचालन में विश्वविद्यालय प्रशासन, ग्राम बादलपुर के निवासियों, प्राथमिक विद्यालय प्रशासन ने वांछित संसाधन उपलब्ध कराकर विशेष सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण समिति डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० मिन्तु, डॉ० शिल्पी, डॉ० ऋचा, डॉ० विनीता सिंह एवं डॉ० नीलम शर्मा ने सम्पूर्ण सत्र मे संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसके कारण समस्त कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक प्रगति प्रदान की जा सकी।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग जी के कुशल निर्देशन व मार्गदर्शन तथा महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों एवं कर्मचारी वर्ग के महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय सहयोग से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के समस्त कार्यक्रम एवं शिविर अपने उद्देश्यों की पूर्ति मे सफल सिद्ध हो सके।

सेवा परमो धर्मः

राष्ट्रीय कैडेट कोर

डॉ० नीलम शर्मा

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास के लिए कक्षागत अध्ययनमात्र पर्याप्त नहीं है, अपितु उसमें विभिन्न गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उनमें राष्ट्रीय कैडेट कोर उन छात्र–छात्राओं के लिए जो एक सैनिक की भांति साहसिक खेलों के साथ अनुशासित रहने का पाठ सीखना चाहते हैं, एक बहुत अच्छा माध्यम बन सकता है। यह विद्यालय और महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए एक स्वैच्छिक संगठन है। इसका आदर्श वाक्य है – 'एकता और अनुशासन''। राष्ट्रीय कैडेट कोर एक सुयोग्य नागरिक निर्माण के उद्देश्य से युवाओं में चरित्र, साहस, मैत्री, साहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण क्रीड़ा कौशल और निस्वार्थ सेवा की भावना आदि गुणों का विकास करती है। एन.सी.सी. के कैम्पों में संचालित अनेकविध् कार्यक्रमों के द्वारा न केवल जिम्मेदारी की भावना और आत्मविश्वास का विकास किया जाता है, अपितु सम्प्रेषण कौशल, समय प्रबन्धन, संगठन कौशल और सृजनात्मक–कल्पनात्मक क्षमताओं में भी वृद्धि की जाती है।

एन.सी.सी. के इन्हीं वैशिष्ट्य को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय में छात्राओं के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से एन.सी.सी. की एक यूनिट संचालित है। वर्ष 2015–16 में 37 नवीन कैडेट्स नामांकित किए गए। इनके अतिरिक्त वर्ष 2014–15 के 'B' सर्टिफिकेट हेतु 26 कैडेट्स और 'C' सर्टिफिकेट हेतु 5 कैडेट्स सहित इस सत्र में महाविद्यालय में 68 कैडेट्स की यूनिट है। इस वर्ष फरवरी माह में आयोजित 'B' सर्टिफिकेट परीक्षा में 10 कैडेट्स ने 'B' सर्टिफिकेट प्राप्त किया। महाविद्यालय में 13 यू.पी. गर्ल्स बटालियन् गाजियाबाद के पी०टी० स्टाफ के सहयोग से वर्षपर्यन्त 40 परेड आयोजित की गई।

सत्र 2015–16 में महाविद्यालय के कैडेट्स ने 4 कैम्पों में भाग लिया। प्रथम कैम्प 15 नवम्बर से 31 नवम्बर 2015 तक लखनऊ में आयोजित हुआ, जिसमें 5 कैडेट्स ने प्रतिभागिता की। 11–20 दिसम्बर 2015 तक बालक इण्टर कॉलेज, ग्रेटर नोएडा में आयोजित CATC में 13 कैडेट्स ने भाग लिया। तृतीय कैम्प CATC-121 का आयोजन 15 मई 2016 से 24 मई 2016 तक ग्रेटर नोएडा में हुआ। जिसमें 11 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया। इनमें से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु 3 कैडेट्स का चयन किया गया है। इन तीन कैडेट्स ने 6 जून से 15 जून 2016 तक महर्षि दयानन्द इण्टर कॉलिज, गोविन्दपुरम् मोदीनगर में CATC- 123 में प्रतिभागिता की।

राष्ट्रीय कैडेट कोर ने छात्राओं में समुदाय के प्रति निस्वार्थ सेवा भाव, श्रम का सम्मान, स्वावलम्बन और समाज के कमजोर वर्ग के उन्नयन की भावना विकसित करने हेतु सामुदायिक विकास की विविध गतिविधियों को स्वीकार किया है, जिसमें महाविद्यालय के समस्त कैडेट्स ने पूर्ण उत्साह से उत्तम प्रदर्शन किया। वृक्षारोपण, महाविद्यालय मतदाता जागरुकता रैली, समसमायिक विषयों पर जनचेतना रैली आदि में भाग लिया। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर और महाविद्यालय के समीपवर्ती स्थलों पर नवम्बर माह में कूडासंग्रहण और स्वच्छता अभियान चलाया गया। महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठियों में भी कैडेट्स का योगदान सराहनीय रहा।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जून को आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग प्रदर्शन हेतु कैडेट्स डी.एस. गाजियाबाद में सम्मिलित हुये। जून माह में महाविद्यालय में योगाभ्यास हेतु नियमित कक्षाएं संचालित की गईं।

रैंजर्स वार्षिक आख्या
सत्र 2015-16

राष्ट्रीय एकता और युवा वर्ग की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्काउटिंग गाइडिंग भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित है। राष्ट्रीय एकता भावना को प्रोत्साहित करने और युवा विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण करने व परिश्रम, अनुशासन समर्पण एवं दृढ़ संकल्प और युवा वर्ग के मन में सम्यक् मूल्यों का संचार करने उनके व्यक्तित्व को मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं में निखार लाना तथा एक आदर्श लोकतंत्र शक्ति और एक प्रगतिशील समाज बनाने में आज भारत स्काउट एवं गाइड महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे सौहार्द एवं सहिष्णुता की भावना को अपने प्रत्येक ताने–बाने को मजबूत करने में भी युवा रैंजर्स अपना योगदान दे रहे है। कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रैंजर्स इकाई का संचालन से अहिल्याबाई टीम के नाम से किया जा रहा है। महाविद्यालय की रैंजर्स इकाई के अन्तर्गत यह प्रयत्न किया है कि एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में रैंजर्स के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हो सके। इस इकाई के माध्यम रैंजर्स को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने एवं उनमें सेवा, सौहार्द्र, सहयोग, स्वावलम्बन, स्वदेश प्रेम विश्वबन्धुत्व की भावनाओं का विकास करना, के माध्यम से रैंजर्स इकाई के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों का उद्देश्य है।

रैंजर्स इकाई सत्र 2015–16 की प्रमुख गतिविधियाँ

महाविद्यालय की रैंजर्स इकाई के तत्वावधान में दिनांक 9 फरवरी 2016 से दिनांक 11 फरवरी 2016 त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत आयोजित गतिविधियाँ निम्नवत् रही:-

महाविद्यालय मे 21 जनवरी, 2016 को रेंजर्स इकाई एवं महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में "नारी सशक्तिकरण" : एक वास्तिवकता या भ्रम" विषय पर अर्न्तसंकाय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 09–फरवरी , 2016 से दिनांक 11–फरवरी, 2016 तक त्रिदिवसीय रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर का आयोजन जिला मुख्यालय भारत स्काउट एवं गाइड, गौतमबुद्ध नगर द्वारा किया गया जिसके अन्तर्गत रैंजर्स को फायर फाइटिंग के दौरान प्राथमिक चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण, गाँठे व बन्धन, तम्बू निर्माण, पुल एवं गैजेट्स संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। त्रिदिवसीय रेंजर्स प्रशिक्षण के दौरान अनेक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया जैसे – निबन्ध, पोस्टर, सामान्य ज्ञान इत्यादि उक्त प्रतियोगिताएँ विभिन्न समसामयिक विषयों पर आधारित थी सामाजिक कुरीतियों व अंध विश्वासों के विरुद्ध अभियान, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान एवं शिविर के दौरान ही 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के तहत एक रैली का भी आयोजन किया गया, साथ ही छात्राओं में हस्त शिल्प कला कौशल को बढ़ावा देने हेतु एक हैंडीक्राफ्ट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण शिविर के दौरान रेंजर्स को टोली विधि प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। सत्र 2015–16 के अन्तर्गत कुल 135 रेंजर्स ने प्रतिभाग लिया। उक्त रेंजर्स को पृथक–पृथक टोलियों में विभाजित कर पृथक–पृथक राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए गाँठें व बंधन संबंधी प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतियोगिता तम्बू निर्माण का रूप दिया गया

जिसके अन्तर्गत पृथक राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए संबंधित प्रदेश की संस्कृति का अनूठा परिचय प्रस्तुत कर केरल राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए सरोजिनी नायडू टोली ने संबंधित राज्य की संस्कृति को परिलक्षित करते हुए सर्वश्रेष्ठ टोली का पुरस्कार प्राप्त किया। प्रशिक्षण शिविर के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में निम्न छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

निबंध प्रतियोगिता

1. कु० मोनिका – बी.एस.सी. तृतीय (प्रथम पुरस्कार)
2. कु० मनीषा चौहान– बी.एस.सी. द्वितीय (द्वितीय पुरस्कार)

पोस्टर प्रतियोगिता

1. कु० स्वाति – बी.ए. तृतीय (प्रथम पुरस्कार)
2. कु० रेशमा – बी.ए. तृतीय (द्वितीय पुरस्कार)
3. कु० शशि – बी.ए. तृतीय (तृतीय पुरस्कार)

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

1. कु० नीतू नागर – एम.ए. द्वितीय (प्रथम पुरस्कार)
2. कु० गीता शर्मा – एम.ए. द्वितीय (द्वितीय पुरस्कार)
3. कु० रितु नागर – बी.कॉम. द्वितीय (तृतीय पुरस्कार)

हस्त शिल्प कला कौशल प्रतियोगिता

1. कु० मोनिका – एम.ए. द्वितीय (प्रथम पुरस्कार)
2. कु० मनीषा चौहान – एम.ए. द्वितीय (द्वितीय पुरस्कार)
3. कु० गीता शर्मा – बी.कॉम. प्रथम (तृतीय पुरस्कार)

तम्बू निर्माण प्रतियोगिता

सत्र 2015–16 के अन्तर्गत तम्बू निर्माण प्रतियोगिता में सर्वोत्तम टोली का पुरस्कार सरोजिनी नायडू टोली ने प्राप्त किया। उक्त टोली में कुल 23 छात्राएँ सम्मिलित थीं तथा सत्र के अन्तर्गत सर्वश्रेष्ठ रेंजर का पुरस्कार कु० गीता शर्मा एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी) ने प्राप्त किया।

प्रशिक्षण शिविर का समापन डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग, प्राचार्या कु० मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर के मुख्य आतिथ्य एवं देखरेख में सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय सेमिनार

"लैंगिक विषमता और महिला सुरक्षा : मुद्दे, चुनौतियाँ एवं समाधान"

डॉ० सुशी...
संयोजिका...

कु० मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर में दिनांक 28 व 29 नवम्बर, 2015 को इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साईस रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा अनुदानित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन "लैंगिक विषमता और महिला सुरक्षा : मुद्दे, चुनौतियाँ एवं समाधान' विषय पर किया गया।

वैश्वीकरण और महिला सशक्तिकरण के इस दौर में आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता एवं योगदान दे रही हैं, किन्तु देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाला यह वर्ग आजादी के 70 वर्षों में भी कहीं न कहीं अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहा है। आज जब महिलाएं आर्थिक रुप से सशक्त हो रही हैं तो उनके इस आर्थिक सशक्तिकरण के साथ उनके प्रति हो रहे अपराधों के ग्रा... में भी उत्तरोत्तर वृद्धि जारी है, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, भेदभाव और उनकी सुरक्षा का प्रश्न आज समाज वैज्ञानि... शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, कानूनविदों के समक्ष अति महत्वपूर्ण एवं विश्वव्यापी चुनौतिपूर्ण मुद्दा है।

संगोष्ठी के दो दिवसीय सफर का शुभारम्भ माननीय मुख्य अतिथि प्रो० एन. के तनेजा, कुलपति चौ. चरण सि... विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। संगोष्ठी के अन्तर्गत कुल छ: तकनीकी सूत्रों का संचालन किया गया। वृहद संख्या में शिक्षाविदों, समाजविदों, कानूनविदों एवं शोधार्थियों द्वारा की ग... प्रतिभागिता ने दो दिवसीय संगोष्ठी को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

संगोष्ठी के प्रथम दिवस एक लघु शोध पत्र सारांश पत्रिका का भी विमोचन किया गया, जिसके अन्तर्गत विभि... राज्यों से प्राप्त कुल एक सौ बावन शोध सारांश प्रकाशित हुए, सेमिनार के अन्तर्गत संचालित छः तकनीकी सत्रों में कुल ए... सौ चार शोध पत्रों को विभिन्न राज्यों एवं जनपदों से आए प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रथम दिवस संगोष्ठी की मुख्य वक्ता समाजशास्त्री प्रो० मधु, नागला, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक र... द्वितीय दिवस में मुख्य वक्ता समाजशास्त्री प्रो० राजेश मिश्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ रहे, दोनों ही मुख्य वक्ताओं ने अपने उदबोधन में कहा कि जब तक हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक विचारधारा अर्थात् सोच में बदलाव नहीं होगा तब तक यह समस्या जस की तस बनी रहेगी, उन्होंने महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध के लिए भारतीय सामाजिक व्यवस्था... व्यक्तिगत एवं सामाजिक संवेदनशीलता के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। संगोष्ठी के प्रथम दिवस के अन्तर्गत ही उद्घाटन सत्र के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों एवं सेमिनार प्रतिभागी शोधार्थियों के मध्य सीधा संवाद के नाम से एक विशे... सत्र का संचालन भी किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता समाजशास्त्री प्रो० बी.के. नागला, महर्षि दयानन्द ... विश्वविद्यालय रोहतक के द्वारा की गयी, कानूनविद् के रुप में माननीय उच्चतम एवं उच्च न्यायालय, नई दिल्ली के अधिवक्ता श्री महेन्द्र प्रताप सिंह तथा प्रो० अजीत सिंह चहल, इंदिरा गाँधी नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी हरियाणा, त... इतिहासविद् के रुप में प्रा० गार्गी चक्रवर्ती, अध्यक्ष नेशनल वूमेन फेडरेशन और शिक्षाशास्त्री के रुप में प्रो० दिनेश चह... सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी महेन्द्र गढ़ हरियाणा रहे, यह संवाद पत्र राष्ट्रीय गोष्ठी के मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति में सार्थक एक सफ... प्रयास रहा।

संगोष्ठी संरक्षक डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग (प्राचार्या) के द्वारा प्रथम दिवस समस्त अतिथियों का स्वागत किया गया संगोष्ठी के उदघाटन सत्र का संचालन डॉ० रश्मि कुमारी द्वारा विषयम विशेषज्ञ सत्रा संवाद का संचालक डॉ० सुशीला अ... तकनीकी सत्रों का संचालन डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० आशा रानी, डॉ० सीमा देवी तथा डॉ० शिवानी वर्मा द्वारा किया गया समापन सत्र का संचालन डॉ० सुशीला तथा समापन सत्र के अन्त में डॉ० किशोर कुमार के द्वारा समस्त सेमिनार अतिथि एवं प्रतिभागियों का आभार ज्ञापित किया गया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन महाविद्यालय परि... के लिए अत्यन्त सुखद एवं अविस्मरणीय अनुभव है।

राष्ट्रीय सेमिनार

पुनरूत्थित भारत की आवाज : स्वामी विवेकानन्द

Swami Vivekananda : The voice of Resurgent India

डॉ० किशोर कुमार
संयोजक, स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र

पुनरूत्थित भारत से अभिप्राय है – चेतनाशील भारत, तर्क रहित धारणाओं से मुक्त भारत, औचित्यपूर्ण अवधारणाओं का भारत, स्वतन्त्र और सही भारत, सिद्धान्त एवं व्यवहार में मानवतावादी भारत। पुनरूत्थित व्यक्ति, पुनरूत्थित समाज और पुनरुत्थित राष्ट्र सीमाओं से, विभिन्न दायरों से, छद्म चेतनाओं से, किसी क्षेत्र से और किसी विषय वस्तु के एकान्तिक पक्ष से स्वयं को सीमित नहीं रखता अपितु उसका दायरा और सीमायें असीमित हैं, अनन्त हैं।

पुनरूत्थित व्यक्ति "धर्म और विज्ञान", "तकनीक और कला", "पूर्व और पश्चिम", "राष्ट्र और विश्व" के मध्य औचित्यपूर्ण समन्वय बनाने में सक्षम है। स्वामी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। स्वामी विवेकानन्द के विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर कहते हैं कि धर्म हमें बंधनों से मुक्त करने का माध्यम है अर्थात् मुक्ति का लक्ष्य है और धर्म माध्यम, परन्तु हमने धर्म को लक्ष्य मान लिया। धर्म का ऐसा वाह्य स्वरूप हमें सम्प्रदायवाद की ओर ले जा रहा है। हमें इस छद्म चेतना से बचना है और वास्तविक चेतना को जागृत करना है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य छात्र–छात्रा के व्यक्तित्व में अन्तर्निहित श्रेष्ठ मूल्यों और क्षमताओं को अभिव्यक्ति प्रदान करना है परन्तु आजादी के 68 वर्ष पश्चात् नई शिक्षा नीति की आवश्यकता एक विडम्बना को प्रदर्शित करती है।

एक पुनरूत्थित व्यक्ति एवं एक सामान्य व्यक्ति में केवल एक अंतर होता है– पुनरूत्थित व्यक्ति द्वारा मानवीय क्षमताओं और चेतना का औचित्यपूर्ण अधिकतम उपयोग करना एवं सामान्य व्यक्ति द्वारा उनका औसत उपयोग करना।

भारत में पुनरूत्थित अभिव्यक्ति का क्रम अविरल है महात्मा गाँधी, राम मनोहर लोहिया, डॉ० अम्बेडकर, सुभाष चन्द्र बोस, अन्ना हजारे, जय प्रकाश नारायण, डॉ० कलाम, ई० श्रीधरन और असंख्य व्यक्तित्व इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं परन्तु यह असंख्य भी अपेक्षित बदलाव के लिए कम हैं। परिदृश्य आपके सामने है, जो अच्छा नहीं है। यह संवाद अगर किसी एक को भी इस प्रक्रिया में प्रेरित कर सका तो सेमिनार अपने उद्देश्यों में सफल माना जाएगा।

स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र, युग–प्रवर्तक, सार्वभौमिक चिंतन की अनुराशि, मानव मात्र की कल्याण भावना से ओत–प्रोत स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अकादमिक जगत एवं जन सामान्य को सुपरिचित कराने एवं उनके सम्बन्ध में तर्क रहित अवधारणाओं के समूल उन्मूलन हेतु निरन्तर प्रयासरत है। "पुनरूत्थित भारत की आवाज : स्वामी विवेकानन्द" नामक इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन इसी प्रयास की एक श्रृंखला है। वृहद् संख्या में विद्वतजनों एवं शोधार्थियों द्वारा की गई प्रतिभागिता ने संगोष्ठी को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ० कमल टावरी, सेवानिवृत आई.ए.एस. एवं पूर्व अतिरिक्त सचिव भारत सरकार ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि आज समस्या एक पक्षीय नहीं वरन् समग्रता में है अतः हमें समाधान भी समग्रता में ढूंढना होगा। स्वार्थ को छोड़कर परार्थ, स्वार्थ एवं परमार्थ को ग्रहण करना ही हमारी सांस्कृतिक विकास की धरोहर है और यही स्वामी विवेकानन्द का संदेश भी है उन्होंने युवा शक्ति से आवाह्न रूप में कहा कि स्थापित मान्यताओं और नियमों पर प्रश्न कीजिए और उनका उत्तर स्वयं खोजिए। यदि हम पुनरूत्थित भारत चाहते हैं तो हमें सबल और सतत् प्रयास करने होंगे। ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति में निहित है बस उसके क्रियान्वन की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि डॉ० आर. पी. एस. यादव, अपर सचिव, उच्च शिक्षा परिषद् लखनऊ ने अपने उदबोधन में कहा कि स्वामी विवेकानन्द भारतीय नव जागरण के अग्रदूत हैं। शिक्षा के विषय में उनके विचार समाज की सोच

बदलने की सामर्थ्य रखते हैं अतः शिक्षकों का यह गुरुतर दायित्व है कि वह स्वामी जी के विचारों का ... पीढ़ी को अग्रसारित करें।

संगोष्ठी की अन्य विशिष्ट अतिथि एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ती डॉ० शीला टाइटी ने ... आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि अन्तस् से चेतना का जागरण जीवन को जन्म देता है। विवेकानन्द ... संस्कृति के उन्नायक बन जाते हैं। अगर हम अपनी आन्तरिक चेतना को जगाकर स्व–कर्तव्यों का ... स्वामी जी की भाँति अपनी संस्कृति के सबल उन्नायक बन सकते हैं।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध इतिहासविद प्रो. अशोक कुमार शास्त्री जी ने कहा कि ... युवाओं के मुख्य ... स्वामी विवेकानन्द के विचारों को आत्मसात करना चाहिए। राष्ट्र निर्माण ... विवेकानन्द का स्वप्न था और इस हेतु उन्होंने चरित्र निर्माण पर बल दिया था। अतः आज सामाजिक ... नैतिक ... की आवश्यकता है। जो युवाओं का चरित्र–निर्माण कर उन्हें राष्ट्र–निर्माण ... सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द अपने समय से बहुत आगे के व्यक्ति थे। उनका जीवन साहस, त्याग, सेवा, ... स्वामी जी की श्रद्धा अन्ध भक्ति नहीं वरन औचित्यपूर्ण श्रद्धा थी। वर्तमान परिस्थितियों में उनके ... आलोकित उन विचार–बिन्दुओं एवं शोध निःसन्देह राष्ट्र निर्माण का नूतन पथ आलोकित करेगा। इस उद्देश्य से ... संगोष्ठी का तीन तकनीकी सत्र में विभाजित किया गया था। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० राजेश कुमार ... इतिहास दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा, द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० के. के. शर्मा एसो. प्रो. इतिहास ... कॉलेज गाजियाबाद द्वारा एवं तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ० रंजना जैन विभागाध्यक्ष अंग्रेजी विभाग ... राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर द्वारा की गई।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में विषय–विशेषज्ञों, अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों द्वारा स्वामी विवेकानन्द के ... सैद्धान्तिक, दार्शनिक एवं व्यवहारिक पदों पर सारगर्भित विचाराभिव्यक्ति की गई तथा उनके ... सम्बन्धित व्यक्तित्व पर तथ्यपूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत किये गये।

संगोष्ठी के समापन सत्र के अतिथि वक्ता प्रो. हरविन्दर सिंह प्रो. मार्केटिंग मैनेजमेंट आई. एम. टी. गाजियाबाद ... स्वामी जी को ओजस्वी व्यक्तित्व का धनी बताते हुए कहा कि विवेकानन्द जी समग्र व्यक्तित्व का पर्याय है। उनकी ... सार सम्पदा का भाव अपने अन्दर ग्रहण करने में है। यदि हम उन विचारों पर व्यावहारिक रूप से अमल करें तो ... रूप से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ० अश्वनी कुमार गोयल, संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा उ.प्र. ने सार रूप में ... स्वामी विवेकानन्द का मूल मंत्र है– ''उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक बढ़ते रहो''। आज राष्ट्र के लिए कुछ करने का ... है। अतः राष्ट्रहित के लिए हम अपने लक्ष्य निर्धारित करें तभी विवेकानन्द जी के सपनों का भारत सृजित होगा।

अन्त में महाविद्यालय की प्राचार्या एवं संगोष्ठी संरक्षिका डॉ. ज्योत्स्ना गर्ग ने सेमिनार समापन अवसर ... विचाराभिव्यक्ति करते हुए कहा कि विवेकानन्द जी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो सम्मोहन, आकर्षण व लोकप्रियता का ... है। वह ईश्वर के सान्निध्य को मानव–मात्र में महसूस करते थे। विवेकानन्द जी की नैतिक स्वाधीनता, तेजस्वी, आदर्श ... एवं निर्भय निष्ठा उनके भाषणों में परिलक्षित होती है। उनके चिन्तन में मानव कल्याण की भावना निहित है अतः उनका चिन्तन कालजयी है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन एवं कार्यवाही ग्रन्थ का प्रकाशन स्वामी विवेकानन्द के विचारों को प्रसारित ... एवं व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण हेतु उस व्यवहारिक रुप देने का हमारा एक विनम्र प्रयास है। भविष्य में भी ... विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में ऐसे लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रयास होते रहेंगे।

हम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का आभार व्यक्त करते हैं जिनकी अनुदान राशि ने सेमिनार के आयोजन को संभव बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई साथ ही हम डॉ० अश्वनी कुमार गोयल जी के हृदय से आभारी हैं जिनकी प्रेरणा का बीज इस अध्ययन केन्द्र की स्थापना के रुप में फलीभूत हो सका।

हम संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ० कमल टावरी जी का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने ... कार्यक्रम से समय निकालकर अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से संगोष्ठी का मार्गदर्शन किया। हम संगोष्ठी में ... अतिथियों एवं प्रतिभागियों का भी आभार व्यक्त करते हैं जिनकी प्रतिभागिता संगोष्ठी की सफलता का आधार है।

हम कृतज्ञ हैं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग के प्रति जिनके निरन्तर समर्थन एवं हमारी कार्य क्षमता ... के प्रति उनके विश्वास के फलस्वरूप संगोष्ठी आयोजन जैसा दुरुह कार्य सहजता से सम्पन्न होना सम्भव हो सका।

अन्त में, अनेकता में एकता का साक्षात् उदाहरण अपने महाविद्यालय परिवार का मैं अन्तः करण से धन्यवाद करता हूँ ... उनकी समूह–चेतना से कार्य करने की विशिष्ट पद्धति किसी भी कार्य की सफलता का घोष है।

डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र

प्रगति आख्या

डॉ० सीमा देवी
समन्वयक
डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र

भारतीय संविधान के निर्माता, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, कानून विद समाजशास्त्री डॉ० अम्बेडकर के व्यक्तित्व, उनके कार्यों व विचारों को छात्र–छात्राओं व जनसाधारण के मध्य प्रचार–प्रसार करने हेतु सत्र 2015–16 में कु० मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ०प्र० में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान से डॉ० अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र का संचालन प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय की प्राचार्या के निर्देशन व राजनीति विज्ञान की प्रवक्ता डॉ० सीमा देवी के समन्वय से यह केन्द्र संचालित हो रहा है। नियमानुसार गठित केन्द्र के सलाहकार मण्डल द्वारा विभिन्न बैठकों दिनांक 16.09.2015 व 19.03.2016 में दिए गए सुझावों के अनुसार केन्द्र के तत्वावधान में अनेक कार्य किए गए, जिनका विवरण निम्नवत है–

अर्द्ध वार्षिक डिप्लोमा कोर्स का संचालन –

दिनांक 21 सितम्बर 2015 से 31 मार्च 2016 तक केन्द्र द्वारा छात्राओं के लिए अर्द्ध वार्षिक डिप्लोमा कोर्स का संचालन किया गया, जिसके लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की 106 छात्राओं का पंजीकरण किया गया। उपर्युक्त डिप्लोमा कोर्स के अन्तर्गत डॉ० अम्बेडकर के राजनीतिक विचार–1 एवं डॉ० अम्बेडकर के सामाजिक विचार–2 विषयक पाठ्यक्रमानुसार कुल व्याख्यान सम्पन्न कराए गये। ये व्याख्यान– डॉ० ममता उपाध्याय, एसो० प्रो० राजनीति विज्ञान, डॉ० ... कुमार, असि० प्रो० इतिहास विभाग, डॉ० निधि रायजादा, एसो० प्रो० इतिहास विभाग, डॉ० सोनम शर्मा, असि० प्रो० ... शास्त्र, डॉ० वन्दना शर्मा, असि० प्रो० अर्थशास्त्र विभाग, डॉ० सीमा देवी, असि० प्रो० राजनीति विज्ञान, डॉ० सुशीला, असि० प्रो० समाजशास्त्र, डॉ० अरविन्द कुमार, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, डॉ० रतन सिंह, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, सुधीर ..., असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, उदय प्रकाश पासवान, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, बलराम सिंह, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, ... रस्तोगी, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, मौ० वकार रजा, असि० प्रो० शिक्षा शास्त्र, डॉ० जीत सिंह, असि० प्रो० हिन्दी, डॉ० ... कुमार तरोहा, एसो० प्रो० राजनीति विज्ञान, एस० डी० कॉलिज गाजियाबाद, डॉ० डोली, असि० प्रो० राजनीति विज्ञान, ... जी० पी०जी० कॉलिज बिल्सी बदाँयु, डॉ० अभय विक्रम सिंह, डॉ० हेमलता, डॉ० सरिता सिंह, श्री अजय कुमार, ... कुमार, कु० रीना, विजय कुमार, अरूण कुमार, रंजय प्रसाद, रवि गौतम, पुनम, आदि–शोध छात्रों द्वारा व्याख्यान ... । शोध छात्रों द्वारा दिए गए पाठ्यक्रम की पूर्णता पर 26 मार्च 2016 को परीक्षा का आयोजन किया गया।

अध्ययन कार्य लघु शोध कार्य –

केन्द्र के तत्वावधान में लघु शोध कार्य ''साम्प्रदायिकता एवं राष्ट्रीय एकताः डॉ० अम्बेडकर के विचारः गौतम बुद्ध ... अध्ययन विषय पर प्रस्ताव तैयार कर अध्ययन केन्द्र की पंजीकृत छात्राओं से तथ्य संकलन कराया गया। उपर्युक्त ... वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब सम्पूर्ण देश में गौतम बुद्ध

[illegible]

शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन –

[illegible]

1. [illegible] ?
2. [illegible] चुनौतियाँ हैं ?
3. इन चुनौतियों को किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है ?

प्रथम [illegible] प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय [illegible] प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

तृतीय [illegible] प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

[illegible]

राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन –

[illegible] डॉ. अम्बेडकर [illegible]

[illegible]

समापन सत्र की अध्यक्षता आचार्य डॉ. [illegible] द्वारा की गई मुख्य वक्ता डॉ. [illegible] हिन्दू कालिज मुरादाबाद [illegible] मुख्य अतिथि प्रो. [illegible] शर्मा राजनीति विज्ञान [illegible] सेमिनार के अन्त में सभी प्रतिभागियों का [illegible] सम्पूर्ण सेमिनार [illegible]

प्रतियोगितात्मक कार्यक्रम –

छात्राओं के मध्य डॉ. अम्बेडकर के विचारों का [illegible] 28/11/2015 को डॉ. अम्बेडकर के जीवन एवं भारतीय संविधान से सम्बन्धित [illegible] प्रतियोगिता का आयोजन किया गया प्रतियोगिता में कु. [illegible] राजनीति विज्ञान, [illegible] प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहीं।

छात्राओं के रचनात्मक विकास हेतु चार्ट एवं [illegible] प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया [illegible] प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं।

डॉ. अम्बेडकर फाउन्डेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता महाविद्यालय स्तर पर आयोजित [illegible] राजनीति विज्ञान एवं [illegible] द्वितीय वर्ष ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

उपरोक्त छात्राओं के साथ कुल छः छात्राओं ने अध्ययन केन्द्र व महाविद्यालय की ओर से राष्ट्रीय [illegible] प्रतियोगिता – "**कल्याणकारी अर्थव्यवस्था में अधिकारों का सुनिश्चितीकरण : डॉ० अम्बेडकर के मत एवं विचार**" [illegible] पर भाग लिया एवं अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में कु० नेहा रावत – एम०ए० अर्थशास्त्र ने हिन्दी [illegible] स्थानप्राप्त किया जिसमें 1 लाख रु० की राशि पुरस्कार के रुप में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता मन्त्रालय द्वारा [illegible] 02–02–2016 को नई दिल्ली में प्रदान की गई। उक्त पुरस्कार केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता मंत्री [illegible] गहलोत द्वारा प्रदान किया गया।

समय–समय पर आयोजित प्रोत्साहनात्मक कार्यक्रमों में स्थान प्राप्त छात्राओं को डॉ० अम्बेडकर की 125 [illegible] पर आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया। साथ ही अर्द्धवार्षिक डिप्लोमा कोर्स पूर्ण करने वाली छात्राओं को प्रमाण [illegible] भी प्रदान किये गये।

गत वर्ष की भाँति सत्र 2016–17 में भी महाविद्यालय में डॉ० अम्बेडकर का अध्ययन केन्द्र नवीन ऊर्जा [illegible] साथ निरन्तर गतिशील है।

समान अवसर केन्द्र

(प्रायोजक – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली)

डॉ० [illegible]

कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर में समान अवसर केन्द्र की [illegible] जुलाई 2011 में हुई थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित इस केन्द्र की स्थापना विशेष उद्देश्यों की पूर्ति हेतु [illegible] गई –

1. महाविद्यालय की छात्राओं को विभिन्न योजनाओं में समान अवसर प्रदान करना व समाज की मुख्य धारा से जोड़ना।
2. महाविद्यालय की छात्राओं, अध्यापकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के मध्य बेहतर तालमेल को बढ़ावा देना व भेदभाव [illegible] विचारों को हतोत्साहित करना।
3. महाविद्यालय में सामाजिक सद्भावपूर्ण वातावरण को सृजित करना, जिसमें विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आई छात्राओं के मध्य शैक्षणिक आदान–प्रदान एवं स्वस्थ अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का विकास हो सके।
4. विद्वत्समाज को, समाज के हाशिये पर जीवन जी रहे व्यक्तियों की समस्याओं एवं उनकी आकांक्षाओ के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना।
5. छात्राओं के मध्य भेदभाव से सम्बन्धित समस्याओं का प्रभावकारी समाधान करना।
6. समाज के कमजोर वर्गों से आने वाली छात्राओं की शिकायतों को सुनना व उनकी समस्याओं का संतोषजनक समाधान करना व सुझाव देना।
7. समाज के कमज़ोर वर्गों के लिये समय समय पर जारी नोटिफिकेशन/मेमोरांडा/सरकारी आदेशों एवं विभिन्न सम्बन्धित संस्थाओं और एजेन्सियों की सूचनाओं को प्रचारित व प्रसारित करना।
8. कमज़ोर वर्गों से आने वाली छात्राओं को शैक्षिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु सरकारी एवं अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करके शैक्षिक एवं आर्थिक संसाधनों का विकास करना।
9. कमज़ोर वर्गों से आने वाली छात्राओं के लिये प्रवेश/पंजीकरण आदि की प्रक्रिया को आसान बनाना।

10. प्रवेश, नियुक्तियों (शैक्षणिक एवं [illegible]) [illegible] उनके कार्य प्रदर्शन को [illegible] जा सके।
11. महाविद्यालय प्रशासन को [illegible] अधिक संवेदनशील बनाना।

उपरोक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए [illegible] संस्थाओं की लाभकारी योजनाओं के बारे में [illegible] किस प्रकार उठा सकती हैं, इस हेतु समान अवसर [illegible] संजीव कुमार एवं डॉ० [illegible] द्वारा छात्राओं को [illegible] छात्राओं के ज्ञान एवं सम्यक विकास हेतु 'समान अवसर [illegible]' काउंसिलिंग रोल' के संयुक्त तत्वावधान में [illegible] दिनांक 15.08.15 को 'स्वतंत्रता दिवस' के अवसर में [illegible] गौरव विषय पर 'पी.पी.टी.' के माध्यम से व्याख्यान दिया गया। [illegible] आयोजन इतिहास विभाग द्वारा किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] व्याख्यान दिया गया। [illegible] वर्मा द्वारा 'पी.पी.टी.' के माध्यम से [illegible] दिनांक 29.10.2015 को दैनिक समाचार पत्र 'अमर उजाला' के [illegible] आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नोएडा पुलिस की [illegible] क्राइम' की गम्भीरता से अवगत कराया।

दिनांक 16 नवम्बर 2015 को 'अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस' का आयोजन किया गया [illegible] योजना की इकाई के तत्वावधान में विभिन्न विषयों तथा स्वास्थ्य, शिक्षा [illegible] आयोजन किया गया।

समान अवसर केन्द्र के संचालन व विविध व्याख्यानों के आयोजन में महाविद्यालय [illegible] समस्त कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० [illegible] हो सका।

महिला प्रकोष्ठ : सशक्त महिला, सशक्त समाज

[illegible]

नारी जहाँ एक ओर साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में दैवीय स्थान पर प्रतिष्ठित है वहीं दूसरी ओर समाज [illegible] धरातल पर दोयम दर्जे का जीवन जीने की लिए मजबूर कर दी जाती है। आदर्श और यथार्थ के इस [illegible] करने के उद्देश्य से सरकार एवं समाज के विभिन्न स्तरों पर बहुविध कार्य किये जा रहे हैं, जो समाज में महिलाओं [illegible] मुख्य पृष्ठ पर ला सके। इसी श्रृंखला में महाविद्यालय की छात्राओं को शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने [illegible] मूलभूत अधिकारों के प्रति जागरुक बनाने के दृष्टिगत प्रतिवर्ष महिला प्रकोष्ठ का गठन किया जाता है [illegible] भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया, जो निम्नवत् है –

1. संयोजक – डॉ० दिव्या नाथ
2. सह–संयोजक – डॉ० दीप्ति वाजपेयी

Model Competition - Individual Category -

1. कु० ज्योति (D/o श्री एस०के० गौतम) B.Sc. I प्रथम स्थान
2. कु० तारिका अग्रवाल (D/o श्री संतोष अग्रवाल) B.Sc. II द्वितीय स्थान
3. कु० अंकिता शर्मा (D/o श्री पी०के० शर्मा) B.Sc. III तृतीय स्थान

Model Competition - Group Category -

1. प्रथम पुरस्कार – समूह – Zs –	1. कु० प्रज्ञा रघुवंशी 2. कु० मधु रानी 3. कु० वीनू राय 4. कु० प्रीति तिवारी	B.Sc. III
2. द्वितीय पुरस्कार – समूह – J –	1. कु० राधा रावल 2. कु० रेखा चौधरी	B.Sc. III
3. तृतीय पुरस्कार – समूह – K –	1. कु० चंचल 2. कु० प्रियंका	B.Sc. I

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में **"ओजोन दिवस"** का भी आयोजन किया गया इसके अन्तर्गत एक वाद विवाद प्रतियोगिता की गई जिसके परिणाम निम्नवत रहे–

1. प्रथम – कु० वंशिका – B.Sc. III
2. द्वितीय – कु० ज्योति – B.Sc. I
3. तृतीय – कु० भावना – B.Sc. III

नेचर क्लब के अन्तर्गत आयोजित विज्ञान सप्ताह में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० प्रतिभा तोमर एवं डॉ० ऋचा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ENGLISH SPEAKING AND PERSONALITY DEVELOPMENT CLUB

Smt. Neha Tripathi
Member ESPD Club

ESPD club was established in the college, in the year 2009-10, under the guidance and supervision of Principal Dr. Vijai Sankar. The motto of the club is "Be prepared."

The purpose behind formation of this club is to develop and enhance the communication and writing skills of the students, along with developing their personality which is the utmost important requirement of today's competitive environment. Thus to groom and polish the performance of the students, the club has been established in the college.

Under this club, the students are encouraged to participate in various extempore competitions, group discussion, vocabulary test, english speaking games, quizes and slogan competition etc. from time to time.

This year in 2015-16, extempore competition was held on 20/02/16. And the

following students were rewarded during the annual function.

First Prize - Km. Pragya Raghuvanshi - D/o Shri Manoj Raghuvanshi - B.Sc. III.

Second Prize - Km. Chanchal Nagar - D/o Shri Arvind Kumar - B.Sc. I.

Third Prize - (1) Km. Deepshikha - D/o Shri Jitendra Singh - B.A. I.
(2) Km. Geeta Jha - D/o Shri Shivji Jha - B.Sc. I

पुरातन छात्र सम्मेलन

डॉ० अर्चना व
संयोजक

शिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान के प्रसार के साथ–साथ उनके जीवन का सर्वांगीण विकास
करना है। जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँचने के पश्चात् छात्राओं का महाविद्यालय में समय–समय पर आकर अन
शिक्षकों से मिलना इस बात का संकेत होता है कि महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिकता में
सिखाता है। इस प्रयोजन हेतु कु० मायावती राजकीय महिला महाविद्यालय में पुरातन छात्र/छात्रा सम्मेलन प्रतिवर्ष
आयोजित किया जाता है। इससे छात्रों को एक ऐसा मंच उपलब्ध होता है जिसमें वे अपने विचारों एवं प्रतिक्रियाओं को
व्यक्त कर सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सत्र 2015–16 में दिनांक 20/02/2016 को पुरातन छात्र समागम का
आयोजन किया गया। पुरातन छात्रों ने इस अवसर पर अपने जीवन के अनुभव बांटे तथा महाविद्यालय किस प्रकार छात्राओं
को नित उन्नति के पथ पर अग्रसर कर रहा है इस बारे में भी चर्चा–परिचर्चा हुई। सत्र 2015–16 हेतु कार्यकारिणी समिति
का गठन भी इस अवसर पर किया गया जिसमें निम्न पदाधिकारी नियुक्त किए गए –

कु० कोमल शर्मा – अध्यक्ष
डॉ० मिन्नु – सचिव
कोषाधिकारी – प्रियंका नागर
कार्यकारिणी सदस्य – जाह्नवी अग्रवाल, लवली कुशवहा, प्रीति एवं प्रियंका।

इस अवसर पर यह भी निर्धारित किया गया कि प्रत्येक वर्ष वार्षिक समारोह के अवसर पर छात्राओं को आमन्त्रित किया जाए, साथ ही पुरातन छात्रों को एकत्रित कर एक N.G.O. भी बनाया जाए।

महाविद्यालय परिवार की उपलब्धियाँ

सत्र 2015–16

विभागीय प्रोन्नतियाँ

महाविद्यालय के लिए अत्यधिक हर्ष का विषय है कि वर्तमान सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग सहित अन्य छः प्राध्यापकों ने प्रोन्नति प्राप्त कर उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में प्राचार्य पद को सुशोभित किया।

महाविद्यालय परिवार निवर्तमान प्राचार्या सहित निम्नलिखित अन्य समस्त प्रोन्नत प्राध्यापकों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता है –

डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग – निवर्तमान प्राचार्या

महाविद्यालय की निवर्तमान प्राचार्या डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग ने प्रोन्नति प्राप्त कर दिनांक 12/05/16 को राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कैराना, मुजफ्फरनगर के प्राचार्य पद को सुशोभित किया। उल्लेखनीय है कि डॉ० ज्योत्स्ना गर्ग दिनांक 01/08/13 से महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर कार्यरत थीं। आपके कुशल निर्देशन एवं सुदृढ़ प्रशासन की स्मृतियाँ महाविद्यालय परिवार के हृदयों में चिर संचित रहेंगी।

श्रीमती रंजना जैन – महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में दिनांक 16/08/97 से कार्यरत एसो० प्रो० श्रीमती रंजना जैन ने प्रोन्नति प्राप्त कर राजकीय महाविद्यालय पुवारका, सहारनपुर के प्राचार्य का पद ग्रहण किया।

डॉ० सीमा शर्मा – अंग्रेजी विभाग की ही एक अन्य एसो०प्रो० डॉ० सीमा शर्मा ने प्रोन्नत होकर राजकीय महाविद्यालय, नजरौला, जे०पी० नगर के प्राचार्य पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

डॉ० अर्चना वर्मा – दिनांक 25/07/97 से महाविद्यालय के इतिहास विभाग में अध्यापनरत डॉ० अर्चना वर्मा ने प्रोन्नति के फलस्वरुप राजकीय महाविद्यालय सद्दीक नगर, गाजियाबाद के प्राचार्य का पद सुशोभित किया।

डॉ० मोनिका सिंह – महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में दिनांक 18/01/03 से कार्यरत एसो०प्रो० डॉ० मोनिका सिंह ने प्रोन्नति प्राप्त कर राजकीय महाविद्यालय, छपरौली, बागपत के प्राचार्य पद का प्रभार ग्रहण किया।

डॉ० संगीता गुप्ता – गृह विज्ञान विभाग में दिनांक 30/8/08 से अध्यापनरत डॉ० संगीता गुप्ता ने प्रोन्नति के परिणामस्वरुप राजकीय महाविद्यालय विधूना, औरैया के प्राचार्य पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

डॉ० दिव्या नाथ – महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग में दिनांक 30/01/09 से कार्यरत एसो०प्रो० डॉ० दिव्या नाथ ने प्रोन्नति प्राप्त कर राजकीय महिला महाविद्यालय हाटा, कुशीनगर के प्राचार्य पद को सुशोभित किया।

सम्मान एवं शैक्षणिक– व्यावसायिक उपलब्धियाँ

डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा –

महाविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग में एसोसिएट पद पर कार्यरत डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा को दिनांक 23/7/16 को लखनऊ में आयोजित सम्मान समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने वर्ष 2015 के राज्य स्तरीय "शिक्षक श्री" सम्मान से सम्मानित किया। पुरस्कार के अन्तर्गत उन्हें 1.5 लाख रुपये नगद, सरस्वती प्रतिमा व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि यह सम्मान प्रति वर्ष उत्कृष्ट शिक्षण एवं शोध कार्य करने वाले शिक्षकों को प्रदान किया जाता है।

डॉ० मीनाक्षी लोहनी –

भूगोल विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ० मीनाक्षी लोहनी को University of MINHO Portugal के center for territory, Environment and construction, Deptt. of civil Engineering ने 06 माह की पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप प्रदान की। दिनांक 12 दिसम्बर 2015 से 12 जून 2016 तक चलने वाली इस पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप में डॉ० मीनाक्षी लोहनी ने "Water Resources in Portugal : Problems and solution" विषय पर सम्बन्धित शोध कार्य किया।

डॉ० अरविन्द यादव –

डॉ० अरविन्द कुमार यादव, प्रभारी वाणिज्य संकाय ने दिनांक 02–03–अप्रैल 2015 के U.S.A. के Alliant School of Management, Alliant International University, Saindiego, California में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसका शीर्षक था, "An Evaluation of Human Resource Policies of Moser Baer India Limited." इस वर्ष यह शोध पत्र Internation Journal of Trade & Commerce - IIARTC, ISSN-2277-6811 (Print), 2278-9065 (Online) में प्रकाशित भी हुआ। उक्त सेमिनार को UGC द्वारा स्वीकृत किया गया था तथा सम्पूर्ण खर्च भी UGC द्वारा वहन किया गया।

श्री उदय प्रकाश पासवान –

महाविद्यालय के बी०एड० संकाय में असिस्टेंट प्रोफेसर श्री उदय प्रकाश पासवान ने उ० प्र० लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी०सी०एस०–(2015) की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सहायक आयुक्त (इण्डस्ट्री) के पद पर चयनित हुए। 'सतत परिश्रम एवं लगन'' श्री उदय प्रकाश पासवान की सफलता का मूल मंत्र है।

<u>छात्रा उपलब्धि</u>

<u>महाविद्यालय का गौरव – कु० नेहा रावत</u>

महाविद्यालय की एम.ए. (अर्थशास्त्र) की छात्रा कु० नेहा रावत ने सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के संरक्षण में डॉ० अम्बेडकर फाउंडेशन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। माननीय मंत्री श्री थावर चंद गहलौत ने पुरस्कार के रुप में एक लाख रुपये का चेक एवं प्रशस्ति पत्र कु० नेहा रावत को प्रदान किया। देश भर के विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मध्य हुई इस प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त करना कु० नेहा रावत के साथ–साथ महाविद्यालय के लिए भी गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

सेवानिवृत्ति – विदाई का भावुक पल

डॉ० दीपचंद

महाविद्यालय की गृह–विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० दीपाचंद के सेवानिवृत्ति के भावभीने अवसर पर दिनांक 30 जून 2016 को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। विदाई समारोह में प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह ने स्मृति प्रतीक भेंट कर उनके स्वस्थ एवं सुखद भविष्य की कामना की। इस समारोह में सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार ने डॉ० दीपाचंद के विषय में भावुक संस्मरण एवं उदगार व्यक्त किये।

डॉ० दीपाचंद ने 1978 में राजकीय महाविद्यालय पिथौरागढ़ में गृह–विज्ञान प्रवक्ता के रुप में राजकीय सेवा प्रारम्भ की थी। विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में अपनी अध्यापन सेवा प्रदान करने वाली डॉ० दीपाचन्द ने 12 से अधिक छात्र–छात्राओं को शोध निर्देशन दिया एवं सांख्यिकी पर एक उपयोगी पुस्तक का प्रणयन किया।

38 सालों से अधिक के शासकीय सेवाकाल के उपरान्त सेवानिवृत्ति प्राप्त कर जीवन के दूसरे पड़ाव में प्रवेश करने वाली दीपाचंद के लिए महाविद्यालय परिवार सुमंगल भविष्य की कामना करता है।

उत्तर प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों यथा–काशी विद्यापीठ, गौरखपुर विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय एवं मेरठ विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ स्टडीज, एकेडमिक काउंसिल, रिसर्च डिग्री कमेटी की संयोजक एवं सदस्य के रुप में तथा 'इग्नू' के काउंसलर, के रुप में शैक्षिक जगत को आपकी बहुमूल्य सेवाएं जारी है।

उन्मुक्त वैचारिकता, स्पष्टवादिता, निर्द्वंद्व क्रियाशीलता, प्रकृति प्रेम, सरलता एवं ज्ञानात्मक, अभिमुखता से युक्त व्यक्तित्वधारी के रुप में डॉ० दीपाचंद ने उ०प्र० के पर्यटन विकास मंत्रालय द्वारा गठित पैनल के सदस्य के रुप में गंगा नदी के किनारों के व्यवसायिक उपयोग हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए एवं आकाशवाणी पर समय–समय पर महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ दी।

वाणिज्य संकाय

1 डॉ० अरविन्द कुमार यादव : असि० प्रो०

शिक्षा संकाय

1 श्री बलराम सिंह : असि० प्रो०
2 डॉ० अरविन्द कुमार : असि० प्रो०
3 श्री माणिक रस्तोगी : असि० प्रो०
4 श्री पदम प्रकाश पासवान : असि० प्रो०
5 डॉ० रतन सिंह : असि० प्रो०
6 डॉ० वकार रजा : असि० प्रो०
7 श्रीमती रमाकान्ति : असि० प्रो०

शिक्षणेत्तर कर्मचारी

पुस्तकालयाध्यक्ष
कार्यालय अधीक्षक
वरिष्ठ लिपिक
कनिष्ठ लिपिक
अर्दली
स्वीपर
कार्यालय परिचर
प्रयोगशाला सहायक
प्रयोगशाला परिचर

अनुशास्ता मण्डल

पंक्ति में दांए से बांए - श्री बलराम सिंह, डॉ० ऋचा, डॉ० आशा रानी, डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या) डॉ० जे० पी० सिंह, डॉ० अर्चना रानी राठौर, डॉ० अरविन्द कुमार यादव, डॉ० मुशीना

सम्पादक मण्डल

पंक्ति में दांए से बांए - डॉ० मिनु बंसल, डॉ० रतन सिंह, डॉ० नीलम शर्मा, श्रीमती दीक्षा, डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या), डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० निधि रायजादा, डॉ० अरविन्द कुमार यादव, श्रीमती नेहा त्रिपाठी

To provide low cost quality higher education to the [illegible] [illegible]nts of socio-economically weaker sections of the area in order to bridge the rural urban di[illegible] [illegible] thus bring about holistic national development

परिकल्पना

[illegible] [illegible]त लागत पर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा [illegible] [illegible]लब्ध करना।

MISSION

As a unit of Uttar Pradesh Government Higher Education, "Kumari Mayawati Govt. Girls Post Graduate College, Badalpur" is engaged in pursuit of academic excellence, in order to achieve the empowerment of women in the adjoining rural area by:

- *the development of leadership skills, inner strength and self-reliance.*
- *inculcate moral values and tolerance and*
- *making new technological innovations available to the target group, in order to prepare them to face national and global challenges.*

संकल्प

उ.प्र. राज्य उच्च शिक्षा की इकाई के रूप में "कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर" ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर निम्न बिन्दुओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है -

छात्राओं में नेतृत्व, आत्मविश्वास एवं आन्तरिक क्षमता का विकास करना।

उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सहिष्णुता की भावना विकसित करना।

नवीन तकनीकी एवं नवाचारों के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना।